A MANUAL OF
SANSKRIT TRANSLATION
संस्कृत अनुवाद शिक्षा

लेखक
पं० कन्हैयालाल शास्त्री

प्रकाशक
फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी

A MANUAL OF
SANSKRIT TRANSLATION
संस्कृत अनुवाद शिक्षा

Bhawan's Sri Sankaracharya Sanskrit Mahavidyalaya * Bharatiya Vidya
738

लेखक
पं० कन्हैयालाल शास्त्री
सांख्य-वेदान्त तीर्थ भूतपूर्व प्रो० गुरुकुल कांगड़ी तथा
प्रिन्सिपल महाराजा संस्कृत कालेज, अलवर ।

प्रकाशक
फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी
चाँदनी चौक, दिल्ली

मूल्य १॥)

प्रकाशक
फ्रैंक ब्रादर्स एण्ड कम्पनी
चाँदनी चौक, दिल्ली ।

738

मुद्रक
रामाधार, नया हिन्दुस्तान प्रेस, दिल्ली

प्राक्कथन

जब से भारतीय विश्वविद्यालयों और शिक्षणालयों के पाठ्यक्रमों में संस्कृत-भाषा को स्थान मिला है तब से उसका प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। इस बढ़ती हुई आवश्यकता की पूर्ति के लिए अनुवाद सम्बन्धी जितनी पुस्तकें प्रकाशित की गईं, अंग्रेजी माध्यम होने के कारण वे अंग्रेजी में ही लिखी गई हैं। किन्तु अब हिन्दी-भाषा को संस्कृत का माध्यम स्वीकार कर लिया गया है। अतएव विद्यार्थियों की सुविधा के लिए यह छोटी सी किन्तु उपादेय पुस्तक प्रस्तुत की गई है। विगत ३५ वर्षों में अध्यापक और परीक्षक के दृष्टि-कोण से विद्यार्थियों की जिन कठिनाइयों का मुझे अनुभव है उन पर ध्यान रखते हुये इस पुस्तक की रचना कीगई है।

'संस्कृत अनुवाद शिक्षा' में अनुवाद सम्बन्धी सभी आवश्यक नियमों का समावेश किया गया है। पंजाब, देहली, उत्तर प्रदेश आदि के शिक्षणालयों में प्रवेशिका परीक्षा के लिए जो पाठ्यक्रम निर्धारित हैं उनका पूरा ध्यान रक्खा गया है। अन्त में धातुओं तथा शब्दों की अनुक्रमणिका जोड़ देने से पुस्तक की उपादेयता और भी बढ़ गई है। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक सब प्रकार से उपयोगी सिद्ध होगी।

दिल्ली,

१०-६-४०

कन्हैयालाल

सर्वाधिकार सुरक्षित

विषय-सूची

संख्या	विषय	पृष्ठ
	प्रथम अध्याय	१—११
१.	अकारान्त पुल्लिग शब्द, भ्वादिगण, लट लकार	१
२.	इकारान्त „ „ „ „	४
३.	उकारान्त „ „ „ „	५
	द्वितीय अध्याय	१२—२०
१.	भूतकाल (लङ् लकार)	१२
२.	अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द और अव्यय	१६
३.	दिवादिगण	१७
	तृतीय अध्याय	२०—३१
१.	अकारान्त स्त्रीलिंग शब्द।	२०
२.	„ „ „ तुदादिगण।	२२
३.	ईकारान्त „ „ लोट् लकार।	२४
४.	इकारान्त, उकारान्त „	२६
५.	कारक नियम	२७
६.	सर्वनाम, अदादिगण।	२६
	चतुर्थ अध्याय	३२—४८
१.	ऋकारान्त शब्द, भविष्यत् (लृट् लकार)	३२

संख्या	विषय	पृष्ठ
२.	सर्वनाम, पुल्लिंग तथा नपुंसकलिंग	३४
३.	,, स्त्रीलिंग	३७
४.	चुरादिगण	४०
५.	विधिलिंग (Potential mood)	४२
	पञ्चम अध्याय	४६—६४
१ (अ)	मनेपद क्रिया	४६
२.	,, ,, भूतकाल	५१
३.	,, ,, लोट् और लिङ् लकार	५३
४.	,, ,, भविष्यत (लृट् लकार)	५६
५.	कर्तृ वाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य क्रियाएँ (voices)	५७
६.	कृदन्त (Verbal nouns)	६०
	छठा अध्याय	६५—७६
१.	हलन्त शब्द	६५
२.	कृदन्त (शतृ और शानच्)	६८
३.	,, (क्त्वा और तुमुन्)	७०
४.	वतुप् और मतुप् प्रत्यय ।	५७
	सातवां अध्याय	८०—८६
१.	हलन्त अन्नन्त शब्द (Words ending in अन्)	८०
२.	,, इन्नन्त ,, (Words ending in इन्)	८३
३.	,, सान्त ,, (Words ending in स, अस, वस)	८६

संख्या	विषय	पृष्ठ
४.	अतिशय और तुलनावाचक प्रत्यय (Comparative & Superlative degrees)	९२
	आठवां अध्याय	९७—११८
१.	प्रेरणार्थक क्रियाएँ (Causative verbs)	९७
२.	इच्छार्थक और नामधातु क्रियाएं (Desiderative & Denominative verbs)	१००
३.	तव्य, अनीय और यत प्रत्यय (Potential Passive Participles)	१०२
४.	ल्युट और ण्वुल प्रत्यय (Verbal nouns)	१०४
५.	कारक—नियम (Prominent use of Cases)	१०७
६.	अदादिगण	१०९
७.	जुहोत्यादिगण	१११
८.	स्वादिगण	११२
९.	रुधादिगण	११४
१०.	तनादिगण	११५
११.	क्रयादिगण	११७
	विविध अभ्यास	११९—१३२
	परिशिष्ट—	१३३
	अ लोकोक्तियां (Proverbs)	१३३

संख्या	विषय	पृष्ठ
ब.	अकारादि क्रम से शब्द-सूची	१३८
स.	,, ,, धातु-सूची	१६५

———

कुछ आवश्यक नियम

१. छात्रों को यह भली-भांति समझा देना चाहिये कि संस्कृत एक संश्लेषणात्मक (Synthetic) भाषा है। अन्य भाषाओं में कारक चिह्न पृथक् पृथक् लगाये जाते हैं किन्तु संस्कृत में वे कारक-चिन्ह् शब्द के अन्तर्गत ही होते हैं, अर्थात् संस्कृत-अनुवाद के लिये विभक्तियों का कारक चिह्नों सहित ज्ञान परमावश्यक है। इसके अतिरिक्त संश्लेषणात्मक भाषा होने के कारण संस्कृत में कर्त्ता, कर्म और क्रिया का स्थान निर्धारित नहीं है।

२. संस्कृत में तीन लिङ्ग हैं! पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिंग और नपुंसकलिङ्ग। अन्य भाषाओं के समान संस्कृत में शब्द के व्यवहार के आधार पर लिङ्गों का प्रयोग नहीं होता किन्तु यह प्रयोग शब्दों की अपना रचना पर ही प्राचीन काल से चला आता है। जैसे—

हिन्दी	लिङ्ग	संस्कृत	लिङ्ग
आग	स्त्रीलिंङ्ग	अग्निः	पुल्लिङ्ग
वायु	,,	वायु	,,
देवता	पुल्लिङ्ग	देवता	स्त्री लङ्ग

जो शब्द संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं साधारणतया वे हिन्दी में उक्त लिङ्ग न होने के कारण पुलिङ्ग में व्यवहृत होते हैं।

३. संस्कृत में एकवचन और बहुवचन के अतिरिक्त द्विवचन भी होता है। संज्ञा और क्रिया का वचन एक ही होना चाहिये।

नरः गच्छति नरौ गच्छतः नराः गच्छन्ति

४. प्रायः विद्यार्थी पुरुष प्रयोग में अशुद्धि कर बैठते हैं। संस्कृत में तीन पुरुष हैं। प्रथम, मध्यम और उत्तम किन्तु उनका क्रम अंग्रेजी से ठीक उलटा है। इसी कारण गड़बड़ हो जाती है। अंग्रेजी में सः (He) उत्तम पुरुष में प्रयुक्त होता है किन्तु संस्कृत में प्रथम पुरुष में इस प्रकार कर्त्ता और क्रिया का जहाँ वचन एक ही होता है उनका पुरुष भी एक ही होना चाहिये। ऐसे स्थानों पर जहाँ वाक्य में कर्त्ता अनेक हैं और विभिन्न लिङ्गों में हैं वहाँ पर क्रिया का वचन और पुरुष प्रायः समीपस्थ कर्त्ता के आधार पर ही होगा। जैसे—त्वं अहं च गच्छामि, सः आवां वा अत्र आगमिष्यावः।

५. अंग्रेजी में विशेषण लिङ्गों में विभिन्नता होने पर भी एक सा रहता है किन्तु संस्कृत में विशेषण का लिङ्ग और वचन कर्त्ता के अनुसार ही होगा। जैसे—

चतुरः बालकः चतुरा कन्या, सुन्दराणि बनानि

६. संस्कृत में क्रिया, सकर्मक (Transitive) अकर्मक (Intransitve) और द्विकर्मक होती है। इसके अतिरिक्त क्रियाओं के दो रूप होते हैं, परस्मैपद और आत्मनेपद। दोनों

पदों की क्रियाओं के रूप में प्रत्यय पृथक्-पृथक् होते हैं जिनका निरूपण आगे किया जायगा।

७. संस्कृत में काल भेद के अनुसार दस काल-प्रकार हैं किन्तु साधारणतया पांच ही व्यवहृत होते हैं। इन काल-प्रकारों को लकार भी कहते हैं।

(Present)	वर्तमान	लट् लकार	गच्छति	वह जाता है
(Past)	भूत	लङ् लकार	अगच्छत्	वह गया
(Future)	भविष्यत्	लट् लकार	गमिष्यति	वह जायगा
(Imperative)	आज्ञा विषयक	लोट् लकार	गच्छतु	वह जाय
(Pctential)	विधि नियन्त्रण-	लिङ् लकार	गच्छेत	उसे जाना चाहिये

तथा आशीर्वादात्मक

८. संस्कृत में कर्त्ता चाहे किसी भी लिंग का हो, अन्य भाषाओं के समान उसके कारण क्रिया-भेद नहीं होता। जैसे—

सः	पतति	—	वह गिरता है	(पु०)
सा	पतति	—	वह गिरती है	(स्त्री०)
फलं	पतति	—	फल गिरता है	(नपु०)

———

अध्यापक से

यद्यपि संस्कृत अनुवाद के लिये साधारणतया जो भी नियम आवश्यक हैं उन सब का समावेश इस पुस्तक में किया गया है किन्तु विद्यार्थी की कठिनाई को कम करने के लिए निम्नलिखित बातें परमावश्यक हैं। छात्रों को इनका भली-भांति बोध करा देने से अनुवाद में पर्याप्त सुगमता हो सकती है।

१. बहुधा विद्यार्थियों को शब्द तथा धातु रूपों में कठिनाई होती है। अतएव मुख्य मुख्य शब्द तथा दोनों पदों में धातुओं के रूप ठीक प्रकार याद करा देने चाहियें।

२. यह देखा गया है कि कारक प्रयोग की अनभिज्ञता के कारण छात्र अनुवाद से घबराते हैं, इसलिये विभक्तियों का अर्थ सहित ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। विद्यार्थियों को शुद्ध विभक्ति-प्रयोग को आदत डालनी चाहिये।

३. भूत काल (Past tense) की क्रिया के रूप बनाते समय विद्यार्थी कठिनता अनुभव करते हैं, इससे बचने के लिये क्तान्त और क्तवत्वन्त रूपों की रचना समझा देनी चाहिये।

४. अदादिगणी अस् (to be) और तनादिगणी कृ (to do) धातुओं के रूपों का बहुत व्यवहार होता है, इनका ज्ञान पहिले ही करा देना चाहिये।

५. मुख्य-मुख्य अव्ययों, विशेषतया प्रश्नार्थक अव्ययों का बोध छात्रों को पहिले ही करा देना चाहिये।

———

अनुवाद शिक्षा

प्रथम अध्याय

अभ्यास १

[अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द, वर्तमान (लट्) काल, प्रथम पुरुष, प्रथमा विभक्ति, भ्वादिगण, परस्मैपद क्रिया]
(अ ending masculine nouns, present Ist person Ist conjugation.)

१. (क) इस अभ्यास में केवल अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों का तीनों वचनों में प्रयोग किया है। जैसे—

गज गच्छति, गजौ गच्छतः, गजाः गच्छन्ति

(ख) वर्तमान काल प्रथम पुरुष की क्रिया में निम्नलिखित प्रत्यय धातु के साथ लगते हैं। भ्वादिगण में धातु के आगे अ और लगाया जाता है जिसे विकरण कहते हैं।

वस्+अ+ति = वसति,

वस्+अ+तः = वसतः

वस्+अ+न्ति = वसन्ति

२. शब्द ज्ञान— क्रिया ज्ञान—

काक	कौआ	पठ्	पढ़ना
दास	नौकर	चल्	चलना
बाल	बालक	हस्	हंसना
गज	हाथी	वस्	रहना
नृप	राजा	वद्	बोलना
सिंह	शेर	पच्	पकाना
सूद	रसोइया	पत्	गिरना
कर	हाथ	नम्	झुकना
नर	मनुष्य		
वृक्ष	पेड़		

वाक्य

बालक पढ़ता है।
बालक हंसता है।
हाथी चलता है।
मनुष्य बोलते हैं।
राजा कहता है।
रसोइया पकाता है।
कौआ गिरता है।
वृक्ष गिरते हैं।
बालक चलते हैं।
हाथी गिरता है।

राजा पढ़ते हैं।
रसोइया हंसते हैं।
हाथ गिरता है।
बालक गिरता है।
नौकर झुकता है।
मनुष्य नमस्कार करते हैं।
दोनों बालक हंसते हैं।
दो वृक्ष गिरते हैं।
दोनों मनुष्य रहते हैं।
दोनों बालक पढ़ते हैं।

अभ्यास २

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द, द्वितीया (कर्म) (Accusative)

१. साधारणतया द्वितीया का अर्थ 'को' होता है। जैसे—
रामम्=राम को।

२. शब्द— क्रिया—

ग्राम	गाँव	गम् (गच्छ)	जाना
जनक	पिता	दृश् (पश्य्)	देखना
कूप	कुआं	स्मृ (स्मर्)	याद रखना
देव	देवता, ईश्वर	पा (पिब्)	पीना
भार	बोझ	स्था (तिष्ठ्)	ठहरना खड़े होना

वाक्य

नौकर राजा को कहता है।	पिता गाँव को जाता है।
बालक राजा को नमस्कार करता है।	शेर हाथियों को देखता है।
मनुष्य ग्राम को जाते हैं।	पुत्र पिता को नमस्कार करते हैं।
हाथी वृक्ष को देखता है।	नौकर राजा को याद करते हैं।
बालक हाथी को देखते हैं।	दोनों हाथी वृक्ष को देखते हैं।
रसोइये नौकर को कहते हैं।	दो नौकर गाँव को जाते हैं।
पिता पुत्रों को याद करता है।	पिता दोनों पुत्रों को कहता है।
राजा को मनुष्य देखते हैं।	दोनों पुत्र पिता को याद करते हैं

रसोइया कुएँ को जाता है।	मनुष्य देवताओं को नमस्कार करते हैं।
नौकर बोझ को देखता है।	हाथी बालकों को देखते हैं।

अभ्यास ३

इकरान्त पुल्लिङ्ग शब्द [इ ending masculine words]

निर्देश—१. इस अभ्यास में आये हुए इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप निम्नलिखित प्रकार से होंगे:—

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	करिः	करी	करयः
,,	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	करिम्	करी	करीन्
,,	हरिम्	हरी	हरीन्

२. शब्द—— क्रिया——

मुनि	ऋषि, महात्मा	दा (यच्छ) देना
करि	हाथी	धृ (धर) पकड़ना
कपि	बन्दर	उप-दिश उपदेश कर
गिरि	पहाड़	
असि	तलवार	

वाक्य

बालक मुनि को नमस्कार करता है। मनुष्य तलवार को देखते हैं। राजा मुनियों को नमस्कार करता है। नौकर बन्दर को देखते हैं। शेर पहाड़ को देखता है। बन्दर वृक्षों को देखते हैं। राजा मुनि को कहता है। हाथी पहाड़ को जाते हैं। पिता पुत्र को तलवार देता है। पहाड़ गिरते हैं। शेर हाथी को पकड़ता है। राजा मनुष्यों को तलवार देता है। मुनि ईश्वर को याद करते हैं। नौकर बन्दरों को पकड़ता है। बन्दर कुएँ को जाते हैं। दोनों महात्मा हंसते हैं। शेर दोनों हाथियों को पकड़ता है। दो बालक दो बन्दरों को देखते हैं। दोनों महात्मा पहाड़ को जाते हैं। राजा दोनों तलवारों को पकड़ता है।

अभ्यास ४

उकारान्त पुल्लिंग शब्द (उ ending masculine words)

१. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप नीचे लिखे रूपों के अनुसार होंगे।

	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
,,	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
,,	साधुम्	साधू	साधून्

२. संस्कृत में कुछ अव्यय शब्द ऐसे हैं जिनके रूप नहीं चलते और वे नित्य एक से ही रहते हैं जैसे–कुत्र, अत्र इत्यादि।

शब्द—		अव्यय—	
भानु	सूर्य	कुत्र	कहाँ
साधु	महात्मा	तत्र	वहाँ
तरु	वृक्ष	अत्र	यहाँ
गुरु	अध्यापक	एव	ही
वायु	हवा	अपि	भी
शिशु	बच्चा	न	नहीं
रिपु	वैरी	मिथः	आपस में
शम्भु	महादेव	शनैः	धीरे से

वाक्य

मनुष्य सूर्य को नमस्कार करते हैं। साधु मनुष्यों को उपदेश देता है। अध्यापक बालकों को उपदेश देता है। राजा कहाँ रहता है। हवा धीरे-धीरे चलती है। बालक वहां सूर्य को देखते हैं।। शत्रु भी राजा को नमस्कार करते हैं। यहां साधु रहते है। महात्मा ही ईश्वर को याद करते हैं। बच्चे आपस में बोलते हैं। बालक महादेव को नहीं नमस्कार करता है। पहाड़ धीरे-धीरे गिरते हैं। पिता पुत्र से धीरे-धीरे कहता है। वहां वृक्ष गिरते हैं। गुरु ही पढ़ता है, बालक नहीं पढ़ते। दोनों वृक्ष झुकते हैं। दोनों साधु कहां रहते हैं। दोनों महात्मा ही धीरे-धीरे बोलते हैं, नौकर नहीं। बच्चा भी दोनों तलवार पकड़ता है। दो मनुष्य आपस में हँसते हैं। राजा दोनों नौकरों को कहता है। दोनों महात्मा गांव को नहीं, कुएँ को जाते हैं।

अभ्यास ५

अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द [अ ending neuter words.]

१. अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप प्रथमा तथा द्वितीया विभक्ति में एक ही प्रकार से होंगे। जैसे—

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
प्रथमा	जलम्	जले	जलानि
द्वितीया	जलम्	जले	जलानि

२. शब्द—— धातु——

फल	फल	नी	ले जाना
गृह	घर	आनी	ले आना
जल	पानी	सृ	सरकना
नगर	शहर	अनु-सृ	पीछे चलना
वन	जंगल	वि-स्मृ	भुलाना
ज्ञान	ज्ञान	उद्-स्था	उठना
कुसुम	फूल	तृ	तैरना
धन	धन, दौलत	अव-तृ	उतरना
मित्र	मित्र	हृ	चुराना
मुख	मुँह	परि-हृ	दूर करना

सूचना—ऊपर लिखी धातुओं में जो शब्द धातुओं के ठीक पहिले जोड़े गये हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं। इन उपसर्गों का

स्वतन्त्र व्यवहार नहीं होता, किन्तु इनके जोड़ने से धातुओं के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है।

वाक्य

बालक फलों को ले जाता है। बन्दर पानी पीते हैं। नौकर राजा के पीछे चलते हैं। पिता पुत्र को लाता है। साधु शहर को जाते हैं। हाथी धीरे-धीरे सरकता है। शेर जंगल को देखते हैं। महात्मा राजा को ज्ञान का उपदेश देते हैं। मनुष्य ईश्वर को भूल जाते हैं। बालक फूल चुराते हैं। रसोइया मुख को देखता है। मित्र आपस में हंसते हैं। राजा शत्रु को दूर करते हैं। बच्चा खड़ा नहीं होता। बन्दर तैरते हैं। दोनों मित्र शहर को जाते हैं। पिता दोनों पुत्रों को घर ले जाता है। दो नौकर उतरते हैं। शत्रु दोनों राजाओं को कहाँ ले जाता है।

अभ्यास ६

मध्यम पुरुष (Second Person)

१. वर्तमान काल की परस्मैपद धातुओं के आगे मध्यम पुरुष में निम्नलिखित प्रत्यय लगते हैं—

एक व०	द्वि व०	बहु व०
सि	थः	थ
चलसि	चलथः	चलथ
(तू चलता है)	(तुम दोनों चलते हो)	(तुम सब चलते हो)

सूचना—युष्मद् और अस्मद् के प्रथमा विभक्ति के रूप विद्यार्थियों के सुभीते के लिए अध्यापक स्वयं बता देवें।

इन दोनों शब्दों के रूप यथास्थान सर्वनामों के साथ दिये जायँगे।

वाक्य

तू हंसता है। तू वहां जाता है। तुम बोलते हो। तुम सब घर जाते हो। तुम यहां फल लाते हो। तू बन्दरों को देखता है। तू तलवार पकड़ता है। तुम बालकों को कहाँ ले जाते हो ? तू फलों को ले जाता है। तुम पिता को नमस्कार करते हो। तुम फूल चुराते हो। तुम आपस में नहीं बोलते। तू धीरे-धीरे कुएँ को जाता है। तुम दोनों गुरु के पीछे चलते हो। तू वन को नहीं जाता है। तुम वहां बच्चों को ले जाते हो। तुम दोनों हाथी के पीछे चलते हो। तुम दोनों कहाँ जाते हो ? तुम दोनों आपस में धीरे-धीरे बोलते हो। तुम दोनों, दोनों तलवारों को कहां ले जाते हो ?

अध्याय ७

उत्तम पुरुष (1st. person)

वर्तमान काल में उत्तम पुरुष के योग में धातु के आगे निम्नलिखित प्रत्यय लगा कर रूप बनाये जाते हैं।

एक व०	द्वि व०	बहु व०
(आ) मि	(आ) वः	(आ) मः
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
(मैं जाता हूँ)	(हम दोनों जाते हैं)	(हम सब जाते हैं)

शब्द	अर्थ	धातु	अर्थ
अनल	आग	जि (जय्)	जीतना
पाद	पैर	क्षि (क्षय्)	नष्ट होना
शठ	दुष्ट	निन्द्	निन्दा करना
शर	बाण	त्यज्	छोड़ना
कासार	झील	खन्	खोदना
अलि	भौंरा	भज्	भजन करना
रवि	सूर्य	अट्	घूमना
राशि	ढेर	धाव्	दौड़ना

वाक्य

मैं राजा को देखता हूं। मैं पिता को नमस्कार करता हूं। मैं शत्रु को जीतता हूं। हम दुष्टों की निन्दा करते हैं। मैं बाण को छोड़ता हूँ। मैं वहां आग देखता हूँ। हम आपस में हंसते हैं। हम धीरे-धीरे घूमते हैं। मैं मनुष्यों को उपदेश देता हूँ। हम फूल चुराते हैं। मैं दुष्ट को दूर करता हूं। हम कुआँ खोदते हैं। मैं भौरों को दूर करता हूँ। हम भी मित्रों को याद करते हैं। हम पानी लाते हैं। हम दोनों वहां झील देखते हैं। हम दोनों ईश्वर का भजन करते हैं। हम दोनों पैर पकड़ते हैं। हम दोनों घर को छोड़ते हैं। हम दोनों नगर को जाते हैं।

अभ्यास ८

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

नृपः गच्छन्ति । बालौ हँसति । दासं नगरं गच्छति । पिता पुतरं दृश्यति । साधुः मनुष्यान् उपदिशामि । कप्यः कुत्र धावतः । कुसुमान् त्यजामः । दासाः नगरान् भारानि नयामिसाधौ बालानि उपदिशतः । गजानि मधुराः जलाः पिबन्ति । सकुत्र पतामि । दासानि निरपं अनुसर्ति ।

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

काकः ....पश्यति ।..........कुत्र बसति ?........ कुसुमानि ....। शठौ..........निन्दतः । पुत्राः.......... स्मरन्ति ।........पश्यामः ।........कुत्र..........नयतिः।.......... शत्रु.......... । वृक्षौ.......... । करी..........धावतः ।

संस्कृत में अनुवाद करो :—

३. बच्चे ही पढ़ते हैं, नौकर नहीं । तुम कहाँ जाते हो ? हम नगर को जाते हैं । शेर वहां पानी पीता है, यहाँ नहीं पीता । साधु उपदेश देते हैं । दुष्ट आपस में निन्दा करते हैं । हाथी धीरे-धीरे उतरता है, वहां भील है । फल गिरते हैं, फूल नष्ट होते हैं । मैं मित्र को घर लाता हूं । साधु परमात्मा को यहाँ देखते हैं वहाँ भी देखते हैं । तुम दोनों दुष्टों की निन्दा करते हो । हम दोनों उपदेश देते हैं । वे दोनों आग ले जाते हैं, हम दो फल लाते हैं ।

———

द्वितीय अध्याय

अभ्यास ६

[अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द, लङ् लकार, भवादिगण]

Imperfect, Ist Conjugation

१—अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों के रूप पहिले लिखे जा चुके हैं, शेष रूप निम्न प्रकार से होंगे—

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
तृतीया	नृपेण	नृपाभ्याम्	नृपैः
चतुर्थी	नृपाय	,,	नृपेभ्यः
पञ्चमी	नृपात्	,,	,,
षष्ठी	नृपस्य	नृपयोः	नृपाणाम्
सप्तमी	नृपे	,,	नृपेषु
सम्बोधन	(हे) नृप !	(हे) नृपौ !	(हे) नृपाः !

२—लङ् लकार अपूर्ण भूतकाल के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस लकार में धातु से ठीक पहिले एक 'अ' अवश्य जोड़ा जाता है। इस 'अ' के बिना रूप की रचना अशुद्ध होती है। लङ् लकार के धातुओं के रूप और प्रत्यय नीचे लिखे जाते हैं।

(क) प्रथम पुरुष—

एक व०	त्—अ-हसत्	वह हँसा
द्वि व०	ताम्—अ-हसताम्	वे दोनों हँसे
बहु व०	अन्—अ-हसन्	वे सब हँसे

वाक्य

वह मुख से बोलता है। बन्दर वृक्ष से गिरा। मैं गुरु के लिये जल लाता हूं। पिता पुत्रों के साथ तालाब को गया। बालक वृक्ष से गिरा। नौकर ने हाथ से राजा को नमस्कार किया। उन दोनों बच्चों ने बन्दर को वृक्ष पर देखा। दशरथ के पुत्र राम भाई के साथ वन को गये। मनुष्य फलों के भार नगर को ले जाते हैं। कृष्ण का पिता धीरे-धीरे हंसा। राजा ने दोनों दुश्मनों को जीता। घोड़े पहाड़ पर गये, नौकर नहीं गया। शम्भु के मित्र का धन धीरे धीरे नष्ट हो गया। दुष्ट मनुष्य ने ज्ञान के फल की निन्दा की। बन्दर पाँव से चलता है। दोनों हाथों से पानी पीता है। भौंरे ने फूलों के ढेर को छोड़ा। दोनों साधुओं ने परमात्मा का भजन किया। दोनों पुत्र पिता के साथ नगर घूमने गये। उन दोनों ने पर्वत पर आग देखी। वह घर पर जल नहीं ले गया।

अभ्यास १०

[इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द, लङ् लकार मध्यम पुरुष]

(इ ending words, Imperfect, Second Person)

१—इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा और द्वितीया

विभक्तियों के रूप पहिले दिये जा चुके हैं, शेष पाँचों विभक्तियों के रूप निम्न प्रकार से होंगे।

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	,,	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	,,	,,
षष्ठी	,,	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	,,	हरिषु
सम्बोधन	(हे) हरे	(हे) हरी	(हे) हरयः

२. लङ् लकार के मध्यम पुरुष में धातुओं के रूप और प्रत्यय निम्न प्रकार से होंगे।

एक व०	:	अहसः	तू हंसा
द्वि व०	तम्—अ	हसतम्	वे दोनों हंसे
बहु व०	त—अ	हसत	वे सब हंसे

३. संस्कृत में अनुवाद करो—

हरि ने दुश्मनों को जीता। तुम दोनों हरि के घर गये। तू हरि के लिये फूल लाया। हे हरि! तुम पिता को भूल गये। घोड़े हाथियों के साथ तालाब पर गये। अरे बालक! तू घर नहीं गया। राम! तुमने वहां मुनि को नमस्कार किया। तुम सब ने तलवार से दुश्मन को जीता। तूने वहाँ अध्यापक से पाठ पढ़ा। तुम दोनों ने हरि की हंसी की। तुम सब हाथों से पानी में तैरे। तू वहाँ गुरु के पीछे-पीछे गया। तुम दोनों मुनि के साथ जंगल में घूमे। तुम सब पावों से जंगल को दौड़े। तुम सबने फूलों का रस पिया। कृष्ण! तुमने नौकरों के साथ कुआँ खोदा। रे दुष्ट तूने गुरु की निन्दा की। रसोइये ने अन्न पकाया। तुम सबों ने

जल पिया। तू वहाँ नगर में पिता के साथ रहा। फल वृक्ष से गिरा किन्तु तूने नहीं देखा।

अभ्यास ११

[उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द, लङ् लकार, उत्तम पुरुष]

(उ ending words, Imperfect, Ist Person)

१—उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों के रूप पीछे लिखे जा चुके हैं, शेष रूप नीचे लिखे जाते हैं।

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	,,	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	,,	,,
षष्टी	,,	भान्वोः	भानुनाम्
सप्तमी	भानौ	,,	भानुषु
सम्बोधन	(हे) भानो !	(हे) भानू	(हे) भानवः

२—लङ् लकार में उत्तम पुरुष के रूप निम्नलिखित होंगेः—

एक व०	अम्	अहसम्	मैं हंसा
द्वि व०	व	अहसाव	हम दोनों हंसे
बहु व०	म	अहसाम	हम सब हंसे

३—संस्कृत में अनुवाद करो :—

मैंने सूर्य को देखा। हवा से वृक्ष के फूल गिरे। हम सब आपस में हंसे। मैं वहाँ तालाब में तैरा। मैंने बच्चे के पिता को कहा। मैं गुरु के लिये फूल लाता हूं। हमने महादेव का भजन किया। हम दोनों ने शत्रु को जीता। मैं साधुओं के लिये तालाब से पानी लाया। हमने दोनों हाथों से गुरु को नमस्कार किया। धीरे-धीरे हवा चली। हे गुरु ! हम दोनों ने फूल चुराये।

हे बच्चो ! मैं महात्माओं के पीछे चलता हूं। हम दोनों ने दुष्टों को छोड़ा। मैं पाँव से चलता हूं, मुख से बोलता हूँ।

अभ्यास १२

[अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द और अव्यय]

(अ ending Neuter words, Indeclinables)

१. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों के रूप विद्यार्थी पढ़ चुके हैं, शेष रूप पुल्लिङ्ग की ही भांति होंगे।

उद्यान	बाग	युद्ध	लड़ाई
सत्य	सच	हिम	बरफ
सुख	खुशी	गान	गीत
दुःख	तकलीफ	शस्त्र	हथियार
नयन	आँख	नख	नाखून
कपट	धोखा	शरीर	देह
वचन	शब्द	अन्न	अनाज
चित्त	हृदय	भय	डर
पत्र	पत्ते	नाटक	नाटक
पुस्तक	किताब	तीर	किनारा

२. नीचे लिखे शब्द अव्यय हैं, इनके किसी प्रकार के रूप नहीं होते, ये नित्य ऐसे ही रहते हैं।

अतः	इसलिये	किन्तु	मगर
अद्य	आज	कुतः	कहाँ से
अधुना	अब	तथा	वैसे
कथम्	किस प्रकार	तदा	तब
कदा	कब	यदा	जब

पुनर्	फिर	च	और
एवम्	इस प्रकार	ह्यः	कल (गत)
वृथा	व्यर्थ	श्वः	कल (आगामी)

वाक्य

तुम सच कहते हो। मैं सुख से घर गया। कपट के वचन हृदय को दुःख देते हैं। जब मैं तालाब में तैरता हूं तब दुःख को भूल जाता हूं। तुमने शत्रु को कैसे जीता? मैंने शत्रु को तलवार से और हथियार से जीता। उन दोनों ने घर से श्याम की पुस्तक चुराई। तुम आज मित्र के साथ कहाँ गये थे? मैं आज तालाब के किनारे बाग में गया था। तुम व्यर्थ बोलते हो, मनुष्य हंसते हैं। वह वहाँ कल रहा, किन्तु आज बाग में रहा। सुख और दुख आते हैं फिर चले जाते हैं। बालक भय से सरकता है, मैं उसके पीछे जाता हूँ। हम सब ने शहर में युद्ध का नाटक देखा। साधु के वचनों से बालक के हृदय में सुख उत्पन्न हुआ।

अभ्यास १३

दिवादिगण लट्, और लङ् लकार
(4th Conjugation, Present & Imperfect)

जिस प्रकार भ्वादिगण की धातुओं के आगे 'अ' जोड़ा जाता है इसी प्रकार चौथे गण (दिवादिगण) में धातुओं के आगे 'य' विकरण लगता है। जैसे—

दीव् + य + ति = दीव्यति

दीव् + य + तः = दीव्यतः

दीव् + य + न्ति = दीव्यन्ति

दिव् (दीव)	खेलना, चमकना	मुह	बेहोश होना
नश्	नष्ट होना	पुष्	पुष्ट होना
नृत्	नाचना	शम् (शाम्)	शान्त होना
अस	फेंकना	श्रम् (श्राम्)	थकना
कुप्	नाराज होना	युध्	लड़ना
तुष्	सन्तुष्ट होना	क्षम् (क्षाम)	क्षमा करना
शुष्	सूखना	भ्रम् (भ्राम)	टहलना
लुभ्	लोभ करना	श्लिष्	पुचकारना

वाक्य

वन में आग चमकती है। आग से वृक्ष नष्ट होते हैं। भौंरे फूलों पर नाचते हैं। पिता पुत्रों पर नाराज हुआ। मैं गुरु के वचनों से संतुष्ट होता हूँ। सूर्य से तालाब का जल सूख गया। राजा धन के लिये लोभ करता है। लड़ाई में दो आदमी बेहोश हो गये। सूर्य से अन्न पुष्ट होता है और अन्न से शरीर पुष्ट होता है। दोनों कौए वृक्ष पर लड़ते हैं, किन्तु थकते नहीं। राजा ने साधु के वचनों से शत्रु को क्षमा किया। वह व्यर्थ ही तालाब के किनारे घूमता है। राजा दुष्टों पर क्रोध करता है, साधुओं से प्रसन्न होता है। अग्नि जल से शान्त हो गई। मैं दोनों हाथों से गुरु के शरीर पर फूल फेंकता हूं।

अभ्यास १४

अन्य अकारान्त शब्द

अज	बकरा	ऊष्ट्र	ऊंट
बिडाल	बिल्ली	खञ्ज	लङ्गड़ा
कुक्कुट	कुत्ता	काण	काणा
व्याध	शिकारी	खल्वाट	गञ्जा
प्रासाद	महल	चन्द्र	चन्द्रमा
याचक	भिखारी	दीप	दीया
मोदक	लड्डू	प्रसाद	कृपा

१. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

निरपाय फलान् आनयामि। अहं हरिणां ग्रिहं अगच्छत्। युद्धे राजा रिपूणाम् अजयम्। वयं तदा नगरे अगच्छन्। हे हरि! त्वं कथं हसति? हे गुरु! अह विरथा हसामि। वायुना वृक्षे कुसुमाः अपतन्। कासारस्य तीराय गजानि अधावन्। सूर्य चन्द्र च दीव्यन्ति। अहं गुरुणा पुस्तकस्य पतरान अपठत्।

२. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

युद्धे······असिना·· ······अजयत ··दुष्टः············ कुसुमानि······च··········। धनेन··········चित्ते········· भवति।·········साधून्······· । ··········नृपाय··········· अतमन्।

३. संस्कृत में अनुवाद करो—

कुत्ता बिल्ली के पीछे भागा। वह पाँव से लंगड़ा और आँख से काणा है । शिकारी ने सिंह पर बाण छोड़ा। राजा महल से मनुष्यों को देखता है। भिखारी महल से अन्न लाते हैं। परमात्मा की कृपा से सूर्य और चन्द्रमा चमकते हैं। शिकारी कुत्तों के साथ जङ्गल में घूमता है। मनुष्यों के डर से लङ्गड़ा ऊँट भागता है। तुम शहर में कहाँ रहते हो? मैं कल मित्र के घर गया और वहाँ ही रहा।

तृतीय अध्याय

अभ्यास १५

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

(आ ending feminine words)

१. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के प्रथम चार विभक्तियों के रूप निम्न प्रकार से होंगे :—

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	,,	,,
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	,,	रमाभ्यः

२. निम्नलिखित आकारान्त शब्दों के रूप रमा शब्द की भाँति होंगे।

कथा	कहानी	क्षमा	सहना, माफी
कन्या	लड़की	प्रजा	रैय्यत
कला	कारीगर	प्रमदा	स्त्री
बाला	लड़की	माला	हार
शाला	स्थान	दया	कृपा
लता	बेल	वाटिका	बगीचा
सुता	पुत्री	पाठशाला	स्कूल
गङ्गा	एक नदी	क्रीडा	खेल
निशा	रात	जरा	बुढ़ापा
आज्ञा	हुकुम	भार्या	पत्नी

वाक्य

लड़की पाठशाला को जाती है। पिता लड़की को उपदेश देता है। राजा की पुत्री महल में नाची। दोनों स्त्रियां बाग से फूलों की माला के लिये फूल लाईं। वन में दुष्यन्त ने शकुन्तला को देखा। प्रजा राजा के पीछे चलती है। साधु ने दया के द्वारा दुष्टों को शान्त किया। बालक वृक्ष पर बन्दरों का खेल देखते हैं। रात आ रही है अब घर जाते हैं, कल पाठशाला जायेंगे। गुरु की आज्ञा से हम घर पर रहें। इसलिये नाटक की कला से हृदय सन्तुष्ट होता है। तुमने क्षमा से और दया से शत्रु को जीता। राम की कहानी से दुष्टों के हृदय शान्त हुए। पिता कन्या के लिये फूलों की माला लाता है।

अभ्यास १६

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द, तुदादिगण

(Feminine words, 6th Conjugation)

१. प्रथम चार विभक्तियों के रूप गत अभ्यास में लिखे जा चुके हैं, अगली चार विभक्तियों के रूप नीचे लिखे जाते हैं—

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	,,	रमयोः	रमानाम्
सप्तमी	रमायाम्	,,	रमासु
सम्बोधन	(हे) रमे !	(हे) रमे	(हे) रमाः

२. इस अभ्यास में छटे गण अर्थात् तुदादिगण की धातुओं का प्रयोग किया गया है। इस गण में धातुओं के रूप प्रथम गण के समान ही होते हैं। लट् और लङ् लकार में 'अ' विकरण धातु के आगे जोड़ा जाता है; केवल अन्तर इतना है कि भ्वादिगण में धातु का प्रथम स्वर तो गुण हो जाता हैं किन्तु तुदादिगण में ऐसा नहीं होता। जैसे—

बुध	(भ्वा०)	बोध् + अ + ति = बोधति
तुद	(तुदा०)	तुद् + अ + ति = तुदति

तुद्	दुःख देना	मुच् (मुञ्च)	छोड़ना
विश्	प्रवेश करना	प्रच्छ (पृच्छ्)	पूछना
स्पृश्	छूना	विद् (विन्द्)	पाना
क्षिप्	फेंकना	सिच् (सिञ्च)	सींचना
कृष्	खेती करना	सद् (सीद्)	बैठना, दुःखी होना
मिल्	मिलना	इष् (इच्छ्)	चाहना
लिख्	लिखना	आ-दिश्	हुकम करना
स्फुट्	खिलना		
सृज्	छोड़ना; उत्पन्न करना		

वाक्य

दुष्ट मनुष्य साधुओं को दुःख देते हैं। हम दोनों ने रात्रि में घर में प्रवेश किया। वे हाथ से लता के फूल छूते हैं। वासुदेव ने शत्रुओं पर बाण फेंके। मैं गुरु को पत्र लिखता हूँ। बाग के तालाब में फूल खिलते हैं। परमात्मा मनुष्यों को उत्पन्न करता है। सिंह ने बकरी को छोड़ दिया। आज रामनाथ ने गुरु से ज्ञान का फल पूछा। हम दोनों ने परमात्मा की कृपा से धन प्राप्त किया। दास बगीचे में लता और वृक्षों को पानी से सींचता है। भरत दुःख से गङ्गा के किनारे बैठ गया। हम दोनों सिंह के भय से दुःखी होते हैं। मूर्ख मनुष्य धन की इच्छा करते हैं। राजा ने दोनों नौकरों को आज्ञा दी।

अभ्यास १७

ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द, लोट् लकार

(ई ending fem.—Imperative Mood)

१. नदी शब्द के रूप नीचे लिखे जाते हैं, अन्य दीर्घ ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नदी की भाँति होंगे—

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	,,	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	,,	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	,,	नदीषु
सम्बोधन	(हे) नदि	(हे) नद्यौ	(हे) नद्यः

२. अन्य ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द—

दासी	नौकरानी	पुरी	नगरी
नारी	औरत	महिषी	रानी
कुमारी	लड़की	नगरी	शहर
वापी	बावड़ी	पृथ्वी	ज़मीन
जननी	माता	भगिनी	बहिन
रजनी	रात	पत्नी	स्त्री
देवी	देवी	विदुषी	पंडिता स्त्री

३. पिछले अभ्यासों में वर्तमान और भूतकाल का ही प्रयोग किया गया है। इस पाठ में लोट् लकार का प्रयोग किया जायगा। यह मुख्यतः आज्ञा के अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। लोट् लकार के प्रत्यय और रूप निम्नलिखित होंगे—

	ए व.	द्वि व.	ब. व.
प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
	हसतु	हसताम्	हसन्तु
मध्यम पुरुष	,,	तम्	त
	हस	हसतम्	हसत
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम
	हसानि	हसाव	हसाम।

वाक्य

दुष्ट साधुओं की निन्दा न करें। वह घर को जावे। पुत्र पिता को नमस्कार करे। नौकर बावड़ी से पानी लावे। माता ने लड़की से कहा सच बोलो। वह गुरु के साथ पाठशाला में रहे। हम गुरु की कृपा से सत्य बोलें। वे बालक घर पर पुस्तक पढ़ें। कैकेयी ने कहा—राम बन में रहें और भरत राजा हों। हम माता-पिता की आज्ञा का अनुसरण करें। पृथ्वी पर दुःख नष्ट हों। वह बहिन के साथ आज ही शहर को जावे। लड़की माता की आज्ञा से नाचे। राम शस्त्रों से और वानरों से रावण को जीते। परमात्मा की कृपा से राजा प्रजा के दुःख दूर करे। बालक नौकर के साथ पाठशाला को जायें।

अभ्यास १८

ह्रस्व इकारान्त और दीर्घ उकारान्त स्त्रीलिंग

(इ & ऊ ending fem- words.)

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप बहुत कुछ इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से मिलते हैं। नीचे लिखे मति शब्द के रूप में केवल कोष्ट-बद्ध पदों में भेद हैं, शेष रूप पुल्लिङ्ग की भांति हैं।

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	,,	(मतीः)
तृतीया	(मत्या)	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मतये, (मत्यैः)	,,	मतिभ्यः
पञ्चमी	मतेः, (मत्याः)	,,	,,
षष्टी	मतेः, (मत्याः)	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मतौ, (मत्याम)	,,	मतिषु
सम्बोधन	(हे)मते	(हे)मती	(हे)मतयः

२. अन्य इकारान्त शब्द :—

कीर्ति	यश	नीति	तरीका
कृति	काम रचना	प्रीति	प्रेम
गति	चाल	भक्ति	लगन
जाति	जात	बुद्धि	अक़ल

धृति	धीरज	रति	प्रेम
स्मृति	याद	स्तुति	प्रशंसा
गीति	गाना	रीति	उपाय

वाक्य

वीर पुरुष की चाल सिंह के समान होती है। राजा की नीति से प्रजा सन्तुष्ट होती है। मैंने गुरु की कृपा से धैर्य प्राप्त किया। चाणक्य ने नीति की पुस्तक लिखी। वे दोनों भक्ति से परमात्मा का भजन करते हैं। प्रजा का राजा में प्रेम होता है। मीरा के गाने से वन के वृक्ष भी मोहित हो जाते थे। मनुष्य धैर्य से सुख प्राप्त करते हैं। लड़की प्रेम से मन्दिर में नाचती है। अर्जुन ने भक्ति से ज्ञान प्राप्त किया। मैं मित्र की याद में पत्र लिखता हूँ। राजा दिलीप ने वसिष्ठ की कृपा से पुत्र प्राप्त किया। श्रुति और स्मृति आर्यों की धर्म पुस्तक हैं। कवियों का यश कभी नष्ट नहीं होता।

अभ्यास १६

कुछ कारक नियम

(Case Rules)

संस्कृत में विभक्तियों के सम्बन्ध को कारक कहते हैं। अनुवाद करते समय निम्नलिखित नियमों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिये—

१. (क) प्रति के योग में अर्थात् जहाँ दिशा बतानी हो वहाँ द्वितीया प्रयुक्त होती है। जैसे रामः ग्रामं प्रति अगच्छत्।

(ख) बिना के योग में द्वितीया का प्रयोग होगा। जैसे रामः लक्ष्मणं बिना न अगच्छत्।

२. (क) जहां 'साथ' के अर्थ के लिये 'साकम्' 'सार्धम्' 'सह' आदि शब्दों का व्यवहार हो वहाँ तृतीया प्रयुक्त होगी। जैसे—रामः लक्ष्मणेन साकं, सार्धं सह वा वनं अगच्छत्।

(ख) जहां 'बस' अथवा 'समाप्ति' के अर्थ में अलम् शब्द का प्रयोग किया जाय वहाँ भी तृतीया का व्यवहार होगा। जैसे—साहसेन अलम्, पठनेन अलम्।

(ग) विना के योग में भी तृतीया का प्रयोग होता है। जैसे—रामः लक्ष्मणेन विना न अगच्छत्।

३. (क) देने के योग में चतुर्थी का प्रयोग होता है, द्वितीया का नहीं। जैसे रामः लक्ष्मणाय बाणं यच्छति।

(ख) नमस्कार के अर्थ में भी चतुर्थी विभक्ति का व्यवहार होता है। जैसे हरये नमः।

वाक्य

राम वन की ओर जाता है। मैं प्रति दिन तालाब की तरफ जाता हूं। तू बहिन के साथ कहाँ रहा? मैं बहिन और मित्र के साथ घर में रहा। राजा भिखारियों को अन्न देता है। मैं माता के बिना शहर नहीं जाता। दुःख मत करो; सुख के दिन

आरहे हैं। पुत्र ने पिता को नमस्कार किया। उसने ब्राह्मणों को धन दिया। माता ने प्रेम से पुत्री को माला दी। यहाँ न रहो, घर की ओर भाग जाओ। कृष्ण के साथ अर्जुन भी वन में रहे। मैं प्रति दिन सूर्य को नमस्कार करता हूँ। माँ! बन्दरों की तरफ फल फेंक दो। शेर की हाथी से देर तक लड़ाई हुई। उसने साधुओं को अन्न दिया और बालकों को लड्डू।

अभ्यास २०

(सर्वनाम युष्मद् और अस्मद्, अस् धातु)

(Pronouns-2nd Conjugation roots)

१. युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिंग में समान ही होंगे किन्तु अन्य सर्वनामों के रूपों में अन्तर होता है। सर्वनाम का सम्बोधन नहीं होता।

	ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम	„	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	„	अस्मत्
षष्टी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	„	अस्मासु

युष्मद्

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वि०	त्वाम्	,,	युष्मान्
तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
च०	तुभ्यम्	,,	युष्मभ्यम्
पं०	त्वत्	,,	युष्मत्
ष०	तव	युवयोः	युष्माकम्
स०	त्वयि	,,	युष्मासु

२. अदादिगण की अस् (to be) के रूप नीचे लिखे जाते हैं। अदादिगण में अन्य गणों की भांति कोई विकरण नहीं लगता।

लट्

अस्ति	स्तः	सन्ति
असि	स्थः	स्थ
अस्मि	स्वः	स्मः

लङ्

आसीत्	आस्ताम	आसन्
आसीः	आस्तम्	आस्त
आसम्	आस्व:	आस्मः

लोट्

अस्तु	स्ताम	सन्तु
ऐधि	स्तम्	स्त
असानि	असाव	असाम

BVBSSMV

वाक्य

तुम्हारा घर कहाँ है ? मेरा घर शहर में है। तूने कल जंगल में हाथी देखा। तुम्हारे गुरु ने मुझे पुस्तक दी। हम दोनों का आपस में प्रेम है। राम दशरथ का पुत्र था और दशरथ अयोध्या का राजा था। जब तुम गये मैं घर था। हमारा घर नदी के किनारे पर था। ऐसा ही हो, तुम बालक को घर ले जाओ। प्रजा में सुख हो, तुम्हारा यश हो। हमारे लिये भोजन लाओ। उसकी मुझ में प्रीति है और मेरी उसमें। तुम सब में कृष्ण का लड़का साधु है। हम को लड्डु दो और फल भी दो। तुम दोनों कल रात कहाँ थे ?

अभ्यास २१

१. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखो—

रामः मृगाणाम् सह वनं गच्छति। युष्माकं विना अहं ग्रिहं गच्छामि। यूयं श्वः कुत्र स्त। कृष्णस्य सह गोविन्दः पाठशालां पठतः। ब्राम्हणान् फलान् यच्छ। त्वं कुक्कुरः नगरेण प्रति अधावत्। लक्ष्मणः रामस्य विना अयोध्यां न अवसत्। नदिसु जलः भवति, वनेसु च लतानि। युव्योः गुरु कुत्र आसन् ? वानरः वृक्षेण पतति कासारम्।

२. कुमारी और लता शब्द के रूप सब विभक्तियों में लिखो।

३. हस्, वस्, नृत और कुप् धातु के रूप लोट् लकार में लिखो।

BVBSSMV

738

BA0823NA

अभ्यास २२

ऋकारान्त शब्द और भविष्यत् (लृट्) लकार

(ऋ ending words--Future tense)

१. ऋकारान्त पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप समान होते हैं, केवल द्वितीया के बहुवचन में अन्तर होता है। ऋकारान्त शब्दों के रूप निम्नलिखित हैं—

	एक व०	द्वि व०	बहु व०
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
	मातरम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	,,	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	,,	,,
षष्ठी	,,	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	,,	पितृषु
सम्बोधन	(हे) पितः	(हे) पितरौ	(हे) पितरः

२. अप्, तृन् और तृच् प्रत्ययान्त कुछ शब्दों के प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन तथा प्रथमा के बहुवचन में दीर्घ हो जाता है। जैसे—

नप्ता	नप्तारौ	नप्तारः
नप्तारम्	,,	नप्तॄः

३. भविष्यत के अर्थ में लृट् लकार प्रयुक्त होता है, और धातुओं के रूप निम्न प्रकार से होते हैं—

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
	हसिष्यतः	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति
म. पु.	स्यसि	स्यथः	स्यथ
	हसिष्यसि	हसिष्यथः	हसिष्यथ
उ. पु.	स्यामि	स्यावः	स्यामः
	हसिष्यामि	हसिष्यावः	हसिष्यामः

४. ऋकारान्त शब्द—

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
भर्तृ	पति	मातृ	मा
कर्तृ	कर्ता	स्वसृ	बहिन
जेतृ	जीतने वाला	दुहितृ	बेटी
वक्तृ	बोलने वाला		
श्रोतृ	सुनने वाला		
पितृ	पिता		
दातृ	दाता		
भ्रातृ	भाई		
नेतृ	नेता		

वाक्य

वह आज घर जायगा। हम सब गुरु से पुस्तक पढ़ेंगे। वे दोनों बालक गङ्गा में तैरेंगे। बालक माता को फल देगा। राजा जीतने वाले को भेंट देगा। आज मेरे भाई का पत्र आयगा। बोलने वाले सभा में बोलेंगे और सुननेवाले सुनेंगे। मैंने राम की लड़की को कहा। दानी याचकों को बहुत अन्न देंगे। हम सब बहिन को बाग में ले जायेंगे। वे संसार के कर्ता ईश्वर को नमस्कार करेंगे। हम दोनों प्रजा के नेता बनेंगे। नास्तिक ईश्वर को संसार का कर्ता नहीं कहते। मैं भाई के लिये एक गांव से दूसरे गाँव को जाऊंगा। हे पिता, हम भाई और बहिनें प्रणाम करते हैं।

अभ्यास २३

सर्वनाम (Pronouns)

पुल्लिङ्ग और नपुंसक लिंग (Masculine and neuter)

१. क्योंकि ये शब्द सबके लिये प्रयुक्त हो सकते हैं इसलिए सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के लिंग और वचन वही होते हैं, जिसके स्थान पर यह प्रयुक्त होता है। जैसे--

१. वासुदेवः चतुरः बालकः स पुस्तकं पठति।

२. जलं शीतलं, तत् मधुरं अपिं अस्ति।

२. (क) युष्मद् और अस्मद् के रूप पीछे लिखे जा चुके हैं, इस अभ्यास में जितने सर्वनाम हैं उनके रूप तीनों लिङ्गों में होंगे।

पुल्लिंग, तद् (That)

	एक. व.	द्वि व.	ब. व.
प्र.	सः	तौ	(ते)
द्वि.	तम्	,,	तान्
तृ.	तेन	ताभ्याम्	तैः
च.	(तस्मै)	,,	तेभ्यः
पं.	(तस्मात्)	,,	,,
ष.	तस्य	तयोः	(तेषाम्)
स.	(तस्मिन्)	,,	तेषु

(ख) पहिले बताया जा चुका है कि सर्वनामों में सम्बोधन नहीं होता। नपुंसक लिंग के रूप प्रथमा और द्वितीया को छोड़ कर पुल्लिग की भाँति होंगे। यथा—

तत्	ते	तानि
तत्	ते	तानि

(ग) कोष्ठ बद्ध स्थानों को छोड़कर पुल्लिङ्ग में सर्वनाम और संज्ञा के रूप एक समान होते हैं। निम्नलिखित सर्वनामों के रूप भी तत् की भांति होंगे।

यद्

१. पुल्लिङ्ग—	यः	यौ	ये
नपुंसक—	यम्	ये	यानि

किम्

२. पुल्लिङ्ग—	कः	कौ	के
नपुंसक—	किम्	के	कानि

इदम्

३. पुल्लिङ्ग—	अयम्	इमौ	इमे
नपुंसक०—	इदम्	इमे	इमानि

एतद्

४. पुल्लिङ्ग—	एषः	एतौ	एते
नपुंसक०—	एतत्	एते	एतानि

सर्व

५. पुल्लिङ्ग—	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
नपुंसक०—	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

वाक्य

वह बालक पाठशाला को जाता है। वे बन्दर बाग में फल खाते हैं। उस मनुष्य को भोजन दो, वह भूखा है। आज सब लोग राजा के महल में जायँगे। यह फूल उस फूल से सुन्दर है। यह वही साधु है जिसको मैंने हरिद्वार में देखा था। जो सज्जनों की निन्दा करेगा वह उसका फल पायगा। तुम्हारे हाथ में जितने फल हैं सब मीठे हैं। गंगा नदी को पृथ्वी पर कौन लाया था ? किस लड़के की पुस्तक अध्यापक ने ली है ? जो माता और पिता की आज्ञा का पालन नहीं करते वे दुष्ट हैं। यह कुएं का पानी है और वह गंगाजल है। इस उपदेश से किसका चित्त शान्त नहीं होता ? हरि ! ये फल हैं, ये लड्डू हैं जो चाहो ले लो। सब मनुष्य प्रातःकाल घूमते हैं किन्तु ये बालक पढ़ते हैं।

अभ्यास २४

सर्वनाम (Pronouns)

स्त्रीलिंग—(Feminine)

१. (क) स्त्रीलिंग में सर्वनामों के रूप निम्नलिखित होंगे—

तद्

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व०
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	तान्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभि
चतुर्थी	तस्यै	,,	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	तयोः	तासाम
सप्तमी	तस्याम	,,	तासु

(ख) अन्य सर्वनामों के स्त्रीलिंग रूपः—

ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
या	ये	याः
का	के	काः
इमा	इमे	इमाः
एता	एते	एताः
सर्वा	सर्वे	सर्वाः

२. दो या दो से अधिक शब्दों के योग से जो पद बनते हैं उन्हें समस्त पद (Compound words) कहते हैं। जैसे—

भोजनालय	स्वदेश
कुम्भकार	सदाचार
राजपुरुष	सेनापति
कारागृह	शिवालय
लतागृह	तारागण
निशाचर	सोमवासर

वाक्य

वह लड़की भाई के साथ रसोई घर में भोजन करती है ? राजा उन दुष्ट मनुष्यों को कैदखाने में डाल देगा। जो लड़की कल मैंने मन्दिर में देखी थी, वह कौन सी है ? उस कुञ्ज में लड़के और लड़कियाँ खेल रहे हैं, आओ देखें। यह नदी धीरे-धीरे बहती है और समुद्र में गिरती है। इन लताओं के फूल, और उन वृक्षों के फल मेरे घर कौन लायगा। उस नदी में राजा के आदमी स्नान करते हैं, तुम दोनों मत जाओ। इस कहानी से रानी का चित्त बहुत सुखी हुआ। रात को वन में राक्षस घूमते हैं, सीता ! तुम वन को न जाओ। अपने देश की रक्षा के लिये रानी लक्ष्मी ने प्राण छोड़ दिये। सोमवार को शहर में जलसा होगा। सेनापति ने पूछा हमारी सेना कहाँ है ? दिन में सूर्य चमकता है और रात में तारे और चन्द्रमा चमकते हैं।

अभ्यास २५

चुरादिगण (10th Conjugation)

१. (क) दसवें गण अर्थात चुरादिगण में धातुओं के आगे अय् विकरण जोड़ा जाता है। शेष रूप अन्य धातुओं की भाँति होंगे। जैसे—कथयति, पूजयति।

(ख) चुरादिगण की धातुएं सामान्यतः उभयपदी होती हैं।

२. चुरादिगण की धातुएँ—

चुर् (चोर्)	चुराना	पाल्	पालना
कथ्	कहना	पीड्	दुःख देना
गण्	गिनना	रच्	बनाना
तुल् (तोल्)	तोलना	स्पृह्	इच्छा करना
भूष्	सजाना	वर्ण्	वर्णन करना
दण्ड्	दण्ड देना	तड् (ताड्)	पीटना
भक्ष	खाना	क्षल् (क्षाल्)	धोना
पूज्	पूजना	चिन्त्	सोचना

वाक्य

मैं राजा के बाग में फल चुराता हूँ। राजा प्रजा को दुःख देता है। माता पुत्र को पालती है। बन्दरों ने वृक्ष पर फल खाये। वे सब तालाब के पानी से मुख धोते हैं। कन्या ने फूलों की माला बनाई। कवि राजा के गुणों का वर्णन करें। राजा ने चोर को दण्ड दिया और नौकरों ने पीटा। वे अन्न के

ढेर को तोलते हैं। राम ने पिता की आज्ञा को पाला और लक्ष्मण तथा सीता के साथ वन में रहे। कृष्ण प्रति दिन मन्दिर जाता है और महादेव की पूजा करता है। तुम दोनों पैर धो डालो फिर भोजन खायेंगे। छोटा बच्चा माता के दूध की इच्छा करता है। मैं हृदय से भगवान का चिन्तन करता हूँ। कालीदास ने रघुवंश में राजा दलीप के गुणों का वर्णन किया।

अभ्यास २६

चुरादिगण

(Roots of the 10th Conjugation)

शब्द

पुल्लिङ्ग		नपुंसकलिंग	
विघ्न	रुकावट, बाधा	दारिद्रय	गरीबी
अपाय	बुरा	रक्षण	रक्षा
विश्वास	यकीन	अहित	बुरा
स्वप्न	सुपना	जीवित	प्राण
विनाश	नाश	अभिधान	नाम
विकार	खराबी	विवर	छिद्र
उटज	झोंपड़ी	चिन्ह	निशान
अभिषेक	स्नान	शौर्य	वीरता
परिणाम	फल	कारुण्य	दया

आश्रम	रहने का स्थान	दुष्कृत	कुकर्म
अपण्डित	मूर्ख	आराधन	पूजा
अलङ्कार	आभूषण	आवरण	ढकना
अवकाश	समय, स्थान	आसन	बैठने का स्थान

अन्य चुरादिगण धातुएँ—

सान्त्व	ढाढस बँधाना
मृग्	ढूंढना
आ-ह्लाद्	प्रसन्न करना
पूर्	भरना
घुष (घोष)	घोषणा करना

वाक्य

मनुष्य विघ्नों के विनाश के लिए देवता की पूजा करते हैं। उनका परमात्मा में विश्वास है, इसलिए आश्रमों और झोंपड़ियों में ही चित्त शान्त करते हैं। जो मूर्ख हैं वे कुकर्मों से प्रसन्न होते हैं और दिन-रात सुख के सपने देखते हैं। किसी का भी बुरा न चाहो, मन की खराबी को ज्ञान से धो डालो। राजा का नाम दुष्यन्त था, वह दया और वीरता की मूर्ति था। राजा ने सारे राज्य में घोषणा कर दी थी कि जो दुष्ट प्रजा को दुख देगा मैं उसको दण्ड दूँगा। उसने ग़रीबी के नाश के लिए और प्रजा की रक्षा के लिए बहुत यत्न किये। जब हृदय दुःख से भर जाता है। तब मनुष्य परमात्मा को ढूंढता है। आज समय नहीं कल आभूषणों के लिए शहर चलेंगे। उस छिद्र पर से ढकना हटा दो

और पानी को बहने दो। राम के अभिषेक से सब का मन आनन्द से भर गया। पुत्र अच्छे कार्यों से पिता को प्रसन्न करता है।

अभ्यास २७

विधि लिङ् (Potential mood)

१. विधि, इच्छा, निमन्त्रण, सम्भावना और सन्देह के अर्थ में विधि लिङ् का व्यवहार होता है। जैसे—

(क) विधि—तृषिताय जलं यच्छेत्—मनुष्य को चाहिये कि प्यासे को पानी दे।

(ख) इच्छा—भगवतः कृपया भ्रातरं पश्येम्—परमात्मा की कृपा से भाई को देख लूँ।

(ग) निमन्त्रण—अद्य महोत्सवः भविष्यति त्वमपि आगच्छेः—आज उत्सव होगा तुम भी आना।

(घ) सम्भावना—कदाचित् राजा दुष्टान् न दण्डयेत्—शायद राजा दुष्टों को दण्ड न दे।

(ङ) सन्देह—भरतः अयोध्यां वसेत् न वा वसेत्—भरत अयोध्या में रहे या न रहे।

२. (क) विधि लिङ् में निम्नलिखित प्रत्ययों का व्यवहार होता है।

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	ईत	ईताम्	ईयुः
म. पु.	ईः	ईतम्	ईत

	ए. व.	द्वि. व	व. व.
उ. पु.	ईयम्	ईव	ईम

(ख)	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु.	हसेत्	हसेताम्	हसेयुः
म. पु.	हसेः	हसेतम्	हसेत
उ. पु.	हसेयम्	हसेव	हसेम

३. लिङ् लकार में सब गणों में एक प्रकार ही के रूप होंगे—

भ्वादिगण (१)—	हस् + अ + ईत्	=	हसेत्
दिवादिगण (४)—	नृत् + य + ईत्	=	नृत्येत्
तुदादिगण (६)—	विश् + अ + ईत्	=	विशेत्
चुरादिगण (१०)—	पूज + अय + ईत	=	पूजयेत्

४. अन्य धातुएँ —

दिवादिगण		तुदादिगण	
हृष्	प्रसन्न होना	कृत् (कृन्त)	काटना
क्लम् (क्लाम)	थकान	कृ (किर्)	बखेरना
भ्रंश् (भ्रश्)	गिरना	नुद्	प्रेरणा करना
गृध्	ललचाना		
कृश्	कमज़ोर होना		

वाक्य

आपत्ति के लिये धन की रक्षा करनी चाहिये। गरीबों के दु:ख को दूर करना चाहिये। सब मनुष्यों को सत्य बोलना

चाहिये और कुकर्मों से बचना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि यह स्थान छोड़कर पर्वतों पर रहें। शायद शकुन्तला पति के घर न जाये। उसके बाणों से दुश्मन नष्ट हों या न हों किन्तु तुम अवश्य आना। पता नहीं साधु भोजन खायगा या नहीं। धनो मनुष्यों को भिखारियों के लिये अन्न देना चाहिये। तुम्हें दूध पीना चाहिये नहीं तो रोगी होने का डर है। धन के लिये लालच नहीं करना चाहिये। कहीं वह वृक्ष पर से नीचे न गिर जाये। मैं बहुत मोटा हूं, चाहता हूं कि कुछ कमज़ोर हो जाऊँ। पण्डितों के सामने मूर्खों को बोलना नहीं चाहिये। क्या मैं वृक्ष को काटूं ?

अभ्यास २८

सर्वनाम (Pronouns Contd.)

१. इस अभ्यास में भी केवल संख्यावाचक (Numerals) शब्दों के रूप दिये गये हैं। ये संख्यावाचक सर्वनाम अन्य सर्वनामों की भाँति तीनों लिङ्गों में व्यवहृत होते हैं, किन्तु रूप बनाते समय निम्नलिखित तीन अवस्थाओं का विशेष ध्यान रखना चाहिये:—

(क) 'एक' शब्द नित्य एक वचनान्त है, इसके रूप द्विवचन और बहुवचन में नहीं होते।

(ख) 'द्वि' अथवा 'उभ' शब्द नित्य द्विवचनान्त हैं इनके एक वचन और बहुवचन में रूप नहीं होंगे।

(ग) 'त्रि' अथवा उससे ऊपर 'चतुर' इत्यादि शब्द नित्य बहुवचनान्त हैं।

२. अकारान्त 'एक' शब्द

	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
प्र०	एकः	एका	एकम्
द्वि०	एकम्	एकाम्	एकम्
तृ०	एकेन	एकया	
च०	एकस्मै	एकस्यै	
प०	एकस्मात्	एकस्याः	
ष०	एकस्य	एकस्याः	
स०	एकस्मिन्	एकस्याम्	

इकारान्त 'द्वि' शब्द

	पुंल्लिंग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	,,	,,	द्वे
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	
च०	,,	,,	
प०	,,	,,	
ष०	द्वयोः	द्वयोः	
स०	,,	,,	

३. इकारान्त 'त्रि' शब्द

	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वि०	,,		त्रीणि

तृ०	त्रिभिः	तिसृभिः
च०	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
प०	,,	,,
ष०	त्रियाणाम्	तिसृणाम्
स०	त्रिषु	तिसृषु

४. रेकारान्त 'चतुर्' शब्द

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिङ्ग
प्र०	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वि०	चतुरः	,,	चत्वारि
तृ०	चतुर्भिः	चतसृभिः	
च०	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	
प०	,,	,,	
ष०	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	
स०	चतुर्षु	चतसृषु	

५. नकारान्त 'पञ्चन्' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। 'सप्तन्' 'नवन्' और 'दशन्' के रूप भी इसी भांति बनेंगे।

पञ्च। पञ्च। पञ्चभिः। पञ्चभ्यः। पंचानाम। पञ्चसु।

६. षकारान्त 'षष्' शब्द के रूप भी तीनों लिंगों में समान होते हैं।

षट्। षट्। षड्भिः। षडभ्यः। षण्णाम्। षट्सु।

७. नकारान्त 'अष्टन' के रूप

अष्टौ-अष्ट । अष्टौ - अष्ट । अष्टभि - अष्टाभिः । अष्टभ्यः - अष्टाभ्यः। अष्टभ्यः - अष्टाभ्यः । अष्टानाम् । अष्टसु - अष्टासु ।

वाक्य

परमात्मा एक ही है। मनुष्य का शरीर पांच तत्वों का विकार है। इन लड़कियों में केवल एक लड़की चतुर है। उस बूढ़े भिखारी को खाने के लिये एक फल दो। अर्जुन की दो प्रतिज्ञायें थीं। तीनों मनुष्य चुपचाप चांदनी रात में नदी पर गये। एक अभिमन्यु ने सात वीरों को युद्ध में जीता। इन तीनों पुस्तकों में कौन सी श्रेष्ठ है। मेरे पिता हरिद्वार से तीन पुस्तकें, चार फल और पांच आसन लाये। दिशायें चार हैं, किन्तु कई मनुष्य दश दिशा मानते हैं। राजा दशरथ के चार पुत्र थे और पाण्डु के पाँच। राजा जनक ने दोनों कन्याओं का विवाह दोनों कुमारों से किया। आग से छः बकरी, तीन घोड़े और पांच तोते जल गये। राजा उत्तानपाद के दो रानियें थीं, उनसे दो पुत्र हुए। पांचों लड़कियों को एक एक फल दो और चारों लड़कों को दो-दो फल दो।

अभ्यास २६

१. शुद्ध करो—रामश्चतुर्दश वर्षान् वनानि अवसताम्। सो पित्रिवियोगेन दुःखितो असि। भ्रातस्य वचनं श्रुत्वा भर्तः अयोध्यायागच्छतु। एके दिने ते नदी अगच्छतु। तत्र तिस्त्रः

बालका अक्रीडन। चत्वार: आसनान् अत्र आनय। राम: भ्रातरे धनान् अयच्छत्। त्रय: मातार: वनं गच्छन्ति। त्रिषिताय जलः यच्छेत। द्वौ कन्ये पुस्तकं पठेयुः।

२. मातृ, नेतृ, भ्रातृ और स्वसृ शब्दों के रूपों में क्या अन्तर है।

३. इष्, स्था, पिब्, गण, कुप् और किर् धातुओं के रूप लङ् लकार में लिखो।

———

पंचम-अध्याय

अभ्यास ३०

आत्मनेपद क्रिया (Atmanepada roots)

१. अब तक जिन धातुओं का प्रयोग किया गया है वे सब परस्मैपद की धातु थीं। इस अभ्यास में आत्मनेपद की धातु प्रयुक्त होगी। यह ध्यान रखना चाहिये कि आत्मनेपदी धातुओं के प्रत्यय परस्मैपदी प्रत्ययों से सर्वथा भिन्न होते हैं, इसलिये पद प्रयोग यदि शुद्ध नहीं है तो क्रिया सर्वथा अशुद्ध होगी। कुछ धातुएँ ऐसी भी होती हैं जो दोनों पदों में व्यवहृत होती हैं। वे धातुएँ उभयपदी कहलाती हैं।

२. आत्मनेपद में वर्तमान काल (लट्) में निम्नलिखित प्रत्यय धातु के आगे लगते हैं।

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्रथम पु०	ते	इते	अन्ते
मध्यम पु०	से	इथे	ध्वे
उत्तम पु०	इ	वहे	महे

३. प्रत्ययों के अतिरिक्त भिन्न-भिन्न गणों के विकरण परस्मैपद की भाँति ही लगते हैं। जैसे—

भ्वादिगण (१)— सेव् + अ + ते = सेवते
द्विवादिगण (२)— खिद् + य + ते = खिद्यते
तुदादिगण (३)— लज्ज् + अ + ते = लज्जते
चुरादिगण (१०)— मृग् + अ + ते = मृगयते

४. लट् लकार में अर्थात् वर्तमान काल में धातुओं के रूप निम्न प्रकार से होंगे।

	ए. व.	द्वि व.	ब. व.
प्रथम पु०	सेवते	सवेते	सेवन्ते
मध्यम पु०	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पु०	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

५. अन्य आत्मनेपदी धातुएँ—

लभ्	प्राप्त करना	स्पर्ध	ईर्ष्या करना
यत्	यत्न करना	त्रै (त्राय्)	बचाना
वन्द्	नमस्कार करना	वृध् (वर्ध्)	बढ़ना
सह्	सहना	वृत् (वर्त)	होना
रम्	खेलना	ईक्ष	देखना
भाष्	बोलना	यज्	यज्ञ करना
सेव्	सेवा करना	श्लाघ्	प्रशंसा करना
कम्प्	काँपना	प्र-काश	चमकना
चेष्ट	प्रयत्न करना	वि-स्मय	आश्चर्य करना
याच्	मांगगा	आ-रभ्	प्रारम्भ करना

वाक्य

वह बालक गुरु की भक्ति से सेवा करता है। जो कुछ गुरु कहता है उसे वह प्राप्त करने की चेष्टा करता है। पाठशाला में और भी बालक हैं, किन्तु वे उससे ईर्ष्या करते हैं और कभी-कभी वासुदेव को आश्चर्य से देखते हैं। अनेक कुकर्मों के कारण गुरु दन्ड देता है, वे डर से काँपते हैं और गुरु के वचनों को सहते हैं। आश्रम में मुनि यज्ञ करते हैं और हमें पापों से बचाते हैं। मैंने वासुदेव से पूछा कि तुम उन दुष्ट बालकों से क्यों बोलते हो, उनके साथ क्यों खेलते हो ? उसने कहा बहुत से मनुष्य सूर्य की निन्दा करते हैं किन्तु फिर भी वह चमकता है इसलिये संसार उसकी प्रशंसा करता है। मैं भी उन्हें भाई के समान देखता हूँ। उनके बुरे वचनों को सहता हूँ। वे जो कुछ मांगते हैं देता हूँ इसलिये मेरी उन्नति होती है। नीच मनुष्य विघ्नों के भय से काम प्रारम्भ ही नहीं करते।

अभ्यास ३१

आत्मनेपद लङ् (Imperfect)

१. लङ् अर्थात् अपूर्ण भूत में आत्मनेपद की धातुओं के आगे नीचे लिखे प्रत्यय लगाते हैं।

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु०	त	इताम्	अन्त
म. पु०	थाः	इथाम्	ध्वम्
उ. पु०	ए	वहि	महि

२. आत्मनेपद में लङ् लकार (Imperfect tense) में रूप निम्न प्रकार से होंगे।

	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.
प्र. पु०	असेवत	असेवेताम	असेवन्त
म. पु०	असेवथा	असेवथाम्	असेवध्वम्
उ. पु०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

३. विशेषण (Adjectives)

अखिल	सारा	कारुणिक	दयालु
अप्रिय	बुरा	कुलीन	श्रेष्ठ कुल वाला
अल्प	थोड़ा	क्षुद्र	छोटा-नीच
उज्ज्वल	चमकीला	चञ्चल	अस्थिर
कर्त्तव्य	फर्ज	चंड	तेज, भयंकर

४. ऊपर लिखे विशेषण, विशेष्य (Noun) के लिङ्ग के अनुसार प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

चंचल	सागरः	=	अस्थिर	समुद्र
चंचला	मतिः	=	चंचल	बुद्धि
चंचलं	मना	=	अस्थिर	हृदय

वाक्य

व्यास मुनि ने माहाभारत में लिखा है कि कुन्ती ने कर्ण को सूर्य से प्राप्त किया, किन्तु उसे छोड़ दिया। कर्ण ने वीरता से दुर्योधन को बचाया। कर्ण अर्जुन से ईर्ष्या रखता था किन्तु

कृष्ण ने कर्ण की प्रशंसा की। दुर्योधन ने पाण्डवों को मारने का यत्न किया, किन्तु कृष्ण ने बचाया। कृष्ण ने पाण्डवों के लिये पांच गाँव मांगे किन्तु दुर्योधन ने कहा कि मैं युद्ध के बिना थोड़ी भूमि भी नहीं दूंगा। यद्यपि दुर्योधन अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ था किन्तु नीच था इसलिए उसने सदा बुरा किया और उसका फल प्राप्त किया। एक बार तो दयालु कृष्ण भी क्रोध से कांप गये उनका रूप भयङ्कर हो गया। भीष्म ने कृष्ण को नमस्कार किया और उनके हृदय को शान्त किया। पाण्डवों का चरित्र बहुत उज्जवल था, सारे संसार ने उनकी प्रशंसा की। पाण्डवों ने धर्म के कारण उन्नति की। छोटा सा अग्नि कण भी सारे संसार को जला देता है, इसी प्रकार कुपुत्र भी सारे कुल को नष्ट कर देता है। महाभारत के भयंकर युद्ध से इस देश की हानि हुई।

अभ्यास ३२

आत्मनेपद क्रिया, लोट् और विधि लिङ्ग

(Imperative and Potetnial mood)

१. लोट् और लिङ्ग लकार में धातु के आगे निम्नलिखित प्रत्यय लगाये जाते हैं। गणों के विकरणों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

लोट्

	ए व०	द्वि. व०	ब. व०
प्र. पु०	ताम्	इताम्	अन्ताम्
म. पु०	स्व	इथाम्	ध्वम्
उ. पु०	ए	आवहै	आमहै

लिङ्

	ए व०	द्वि. व०	ब. व०
प्र. पु०	ईत	ईयाताम्	ईरन्
म. पु०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम् ।
उ. पु०	ईय	ईवहि	इमहि

२. रूप निम्न प्रकार से होंगे—

'सेव' लोट्

प्र. पु०	सेवाताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म. पु०	सेवस्य	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ. पु०	सेव	सेवाव है	सेवामहै

लिङ्

प्र. पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
म. पु०	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उ. पु०	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

३. कुछ स्त्रीलिङ्ग शब्द

द्यावापृथिवी	आकाश और पृथ्वी	प्रतिक्रिया	बदल लेना
मेदिनी	पृथ्वी	जीविका	गुज़ारा

सचहरी	सुखी	सारिका	मैना
समार्जनी	झाड़ू	बलाका	बगुली
प्रतिकृति	मूर्ति	न्यायसभा	कचहरी
कबरी	बालों का भार	असारता	अस्थिरता
अभिरुचि	इच्छा, शोक	सफलता	कामयाबी

वाक्य

गौतम ने शकुन्तला से कहा--"पुत्रि! इस आकाश-पृथ्वी पर पति ही तेरा ईश्वर है, उसकी सेवा करना। जिस विषय में उसकी इच्छा हो उसे पूरा करने का यत्न करना। सखियों से ईर्ष्या न करना बल्कि प्रेम से बोलना और खेलना। ऐसा काम करना जिससे वह आनन्द प्राप्त करे और तेरी सहायता से वृद्धि को प्राप्त हो। हम तपोवन में वियोग के दुःख को सहें और भगवान से तेरी सफलता माँगें। स्त्री को पति से मीठे वचन बोलने चाहियें और उसे बुरी आदतों से बचाना चाहिये। अपने कर्मों से तू ऐसी चमके जिससे दुनिया आश्चर्य करे और तेरी प्रशंसा करे। पिता के वचनों से शकुन्तला लता की तरह काँपने लगी और बोली पूज्य! मेरी मैना और तालाब की बगुली की रक्षा करना। आशीर्वाद दीजिये मैं आपके वियोग को सह सकूं। इस लता के फूल मैं जूड़े में लगाती थी, इस शिला को मैं झाड़ू से और जल से धोती थी। सखि! प्रियंवदा तुम वन की रक्षा करना, मैं जाती हूं। सफलता न मिलने पर क्रोध न करना चाहिये। बदले की इच्छा को भी हटाने का प्रयत्न करना चाहिये।

हम सौ वर्ष तक जीवें और भले दिन देखें। न्याय सभा में झूंठ नहीं बोलना चाहिये। हे भगवान् गुजारे के लिए हम झूंठ कभी न बोलें।

अभ्यास ३३

आत्मनेपद क्रिया, भविष्यत् काल (लृट् लकार)
(Future tense)

१. परस्मैपद के समान आत्मनेपद लृट् लकार में भी धातु के आगे और प्रत्यय पहिले 'स्य' अथवा 'इष्य' विकरण लगता है। भविष्यत में प्रत्यय वे ही होते हैं जो वर्तमान काल में लगाये जाते हैं।

२. आत्मनेपदि 'सेव' धातु के लृट् लकार के रूप नीचे लिखे जाते हैं। अन्य धातुओं के भी आत्मनेपद के रूप ऐसे ही होंगे।

	ए. व०	द्वि. व०	ब. व०
प्र. पु०	सेविष्यते	सेविष्यते	सेविष्यन्ते
म. पु०	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ. पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

३. * अन्य आत्मनेपदी धातुएँ

रुच् (रोच्)	पसन्द करना	शङ्क	सन्देह करना
शुभ् (शोभ्)	शोभित होना	शिक्ष्	पढ़ाना

* अध्यापक इनको धातुओं के लृट् लकार के प्रयोग स्वयं विद्यार्थियों को बता दें क्योंकि रूपों में बहुत विभिन्नता है।

मुद (मोद्)	प्रसन्न होना	वेप्	काँपना
मृ (म्रिय)	मरना	युध्	लड़ना
जन् (जा)	उत्पन्न होना	मृग्	ढूंढना

वाक्य

जो सेवा करेगा वह ही फल प्राप्त करेगा। धर्म की सदा वृद्धि होगी और धार्मिक की विजय होगी। जंगल में शेर की आवाज से तुम सब कांप जाओगे। दयालु मनुष्य की सब प्रशंसा करेंगे। जब वह तुझे देखेगा तो आश्चर्य करेगा। तू आज सभा में बोलेगा। मैं आज उसे बचाने का यत्न करूँगा। हम इस कार्य को आज ही प्रारम्भ करेंगे। संसार में सत्य की ही जय होगी झूंठ की निन्दा। भगवान् की दया से तू बुद्धि को प्राप्त होगा। साधु ही दुष्टों के वचनों को सहेगा। लोग काश्मीर की प्रशंसा करते हैं गर्मी में चलोगे ? गुरु विद्यार्थियों को धर्म शास्त्र पढ़ायेगा। जो मेरी जैसी भक्ति करेंगे मैं उनको वैसा ही फल दूंगा।

अभ्यास ३४

कर्तृवाच्य-कर्मवाच्य और भाववाच्य क्रियाएं

[Active Passive and Impersonal voices]

१. (क) वाक्य में क्रिया के प्रयोग तीन ही प्रकार से होते हैं। जब क्रिया कर्ता से सम्बन्ध रखती है तब कर्तृवाच्य होती है। कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमान्त और कर्म द्वितीयान्त होता है। यदि कर्ता बहुवचन में हो तो क्रिया भी बहुवचनान्त होगी। जैसे

बालकः पुस्तक पठति
बालकाः पुस्तक पठन्ति

(ख) कर्मवाच्य में क्रिया का सम्बन्ध कर्म से होता है, इसलिए क्रिया कर्म के अनुसार होती है। कर्मवाच्य में कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है। कर्ता साधन बन जाता है और कर्म प्रधान होकर प्रथमान्त हो जाता है। जैसे—

बालकेन पुस्तक पठ्यते
बालकैः पुस्तकानि पठयन्ते

(ग) जहाँ क्रिया का सम्बन्ध न तो कर्ता से हो और नाहीं कर्म से हो वहाँ भाववाच्य क्रिया होती है। जैसे—

तेन रुद्यते

२. कर्मवाच्य और भाववाच्य बनाने के लिए धातु के आगे 'य' जोड़ा जाता है और आत्मनेपद के प्रत्यय प्रयुक्त किये जाते हैं। कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रयोग कभी भी परस्मैपद में नहीं होते। जैसे—

पठ् + य + ते = पठ्यते

३. क्रिया को कर्मवाच्य और भाववाच्य में परिवर्तन करते समय निम्नलिखित नियमों का ध्यान रखना चाहिये।

(क) साधारणतया आकारान्त धातु ईकारान्त हो जाती है। जैसे—

गा — गीयते
पा — पीयते
स्था — स्थीयते

(ख) ईकारान्त और उकारान्त धातुओं के आदिस्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे—

जि — जीयते

श्रु — श्रूयते

(ग) यदि ऋकारान्त धातु से पूर्व संयुक्ताक्षर न हो तो 'ऋ' का 'रि' हो जाता है अन्यथा 'ऋ' का 'अर्' होता है। जैसे —

कृ — क्रियते

स्मृ —स्मर्यते

४. विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इस अभ्यास में बहुत सारे वाक्य प्रथम अध्याय में से लिये गये हैं। अभ्यास के लिए वे अन्य वाक्यों का भी कर्मवाच्य में परिवर्तन कर लें।

वाक्य

मनुष्यों से तलवार देखी जाती है। बालक से बन्दर देखा जाता है। बन्दरों द्वारा वृक्ष देखे जाते हैं। पिता से पुत्र को पुस्तक दी जाती है। शेर से हाथी पकड़ा जाता है। मुनियों द्वारा ईश्वर याद किया जाता है। गुरु से धर्म का उपदेश किया जाता है। मनुष्यों द्वारा साधु को नमस्कार किया जाता है। तुझ से पुस्तक चुराई जाती है। तुम्हारे द्वारा फूल ले जाये जाते हैं। मनुष्यों से जल पिया जाता है। तुमसे वन को नहीं जाया जाता है। तुम दोनों से कहां जाया जाता है। हमसे जल लाया जाता है। मुझसे घर छोड़ा जाता है। अग्नि से बन जलाया जाता है। मनुष्यों द्वारा वीरों की प्रशंसा की जाती है। तुम्हारे द्वारा आम खाये जाते हैं। निर्धन मनुष्य सम्बन्धियों से छोड़े जाते हैं। रसोइये द्वारा अन्न पकाया जाता है।

अभ्यास ३५

कृदन्त (Verbal nouns)

क्त और क्तवत् प्रत्यय—Past passive and Past Active Participles.

१. (क) धातु के आगे कर्मवाच्य भूतकाल में क्त प्रत्यय का केवल त भाग ही धातु के आगे जोड़ा जाता है। कुछ धातुओं के आगे इत भी लग जाता है। जैसे—

कृ—कृ+त=कृत		(किया गया)

हस—हस्+इत=हसित		(हँसा गया)

(ख) जिन धातुओं के आगे क्त प्रत्यय लगाकर कृदन्त रूप (Verbal nouns) बनाये जाते हैं। उनके रूप तीनों लिंगों में बनते हैं।

१. तेन घटः कृतः—उसने घड़ा बनाया।

२. तेन कृपा कृता—उसने दया की।

३. तेन कार्यं कृतम्—उसने काम किया।

२, (क) कर्तृवाच्य भूतकाल में धातु के क्तान्त रूप के आगे क्तवत् प्रत्यय लगाया जाता है। क्तवत् का केवल 'वत्' भाग ही धातु के आगे जोड़ा जाता है और यह 'वत्' 'वान्' में परिणत हो जाता है। जैसे—

कृ+क्तवत्=कृत+वत्=कृतवान्		(किया)

हस्+क्तवत्=हसति+वत्=हसतिवान (हँसा)

(ख) क्तान्त रूपों की भांति कर्तृवाच्य भूतकाल (Past Active Participles) के रूप भी दोनों लिङ्गों में व्यवहृत होते हैं। जैसे—

पुंल्लिग	स्त्रीलिंग
स कार्यं कृतवान	सा कार्यं कृतवती
स किमर्थं हसितवान्	सा किमर्थं हसितवती

३. इस प्रकार क्तान्त रूपों (Past Passive Participles) के आगे 'आ' लगाने से और क्तवत्वन्त (Past Active Participles) के आगे 'ई' लगाने से स्त्रीलिंग रूप बनते हैं। यह ध्यान रखना चाहिये कि यह 'ई' कर्तृवाच्य भूतकाल में मौलिक शब्द ('वत्' जिसके अन्त में हो) के आगे ही लगेगी, रूप के आगे नहीं। 'कृतवती' रूप ठीक है 'कृतवानी' नहीं।

४. (क) उक्त दोनों रूप अनुवाद के लिए बहुत ही उपादेय हैं प्रायः विद्यार्थियों को गण की क्रिया (Conjugational Verb) याद नहीं रहती, ऐसी अवस्था में उन रूपों से काम लेना चाहिये। जैसे

सः अपश्यत्

स दृष्टवान्

तेन् दृष्टः

(ख) इसके अतिरिक्त इन रूपों के प्रयोग में पुरुष एक ही रहता है। उत्तम, मध्यम् और प्रथम पुरुष के लिए एक ही रूप

प्रयुक्त होता है। इसलिए अनुवाद में यह बहुत सहायक हैं। जैसे—

सः	दृष्टवान्	तेन	दृष्ट
त्वं	दृष्टवान्	त्वया	दृष्टः
अहं	दृष्टवान्	मया	दृष्टः

५. (ग) विद्यार्थियों को चाहिये कि निम्नलिखित तालिका (chart) को भली प्रकार समझ लें।

कर्तृवाच्य (Active)

पुल्लिङ्ग (Masculine)

सः		तौ		ते	
त्वम्	दृष्टवान्	युवाम्	दृष्टवन्तौ	यूयम्	दृष्टवन्तः
अहम्		आवाम्		वयम्	

स्त्रीलिंग (Feminine)

सा		ते		ताः	
त्वम्	दृष्टवती	युवाम्	दृष्टवत्यौ	यूयम्	दृष्टवत्यः
अहम्		आवाम्		वयम्	

कर्मवाच्य (Passive)

पुल्लिङ्ग (Masculine)

सः		तौ		ते	
त्वम्	गतः	युवाम	गतौ	यूयम्	गताः
अहमं		आवाम्		वयम्	

स्त्रीलिंग (Feminine)

सा त्वम् अहम्	गता	ते युवाम् आवाम्	गते	ताः यूयम् वयम्	गताः

वाक्य

एक दिन सिद्धार्थ शहर में गया। वहाँ उसने एक बूढ़े मनुष्य को देखा। उसने छन्दक से पूछा 'यह कौन है' ? छन्दक ने कहा यह बूढ़ा है, कभी जवान था। सिद्धार्थ दुःखी हृदय से वापिस घर लौट आया। प्रातःकाल वह नौकरों से जगाया गया। गुरु के द्वारा उसे धर्म का उपदेश दिया गया। आचार्यों द्वारा उसे ज्ञान का फल बताया गया। किन्तु सिद्धार्थ उस बूढ़े की मूर्ति को नहीं भूला। अगले दिन वह फिर नदी के किनारे गया। नदी में उसने एक लाश देखी। उसने छन्दक से फिर पूछा कि यह क्या है ? छन्दक ने उत्तर दिया यह मनुष्य की मृत देह है। यह कल मरा था। मरने पर सम्बन्धियों द्वारा छोड़ दिया गया। संसार इससे छूट गया। सिद्धार्थ ने छन्दक के वचन सुने। वह चुपचाप घर आया।

अभ्यास ३६

१. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखोः—

भृत्यःराजं सेवति। अह धनः लभामि। अस्यां संसारे सर्वाः जीवाः म्रियन्ति। रामः जातिना क्षत्रियः आसीत्।

लाभेन बुद्धिनाशः जायति। कृष्णः धर्मशास्त्रस्य पुस्तकंपठते। तेन गीता पठितवती। मया एक सर्प दृष्टवान्। सा भ्रतरा उद्याने गतवानी। रावणात् हृतवती सीता दुःखितवती आसीत्। अशोकवाटिकायां राक्षसी सीतां पीडितवान्। सत्यं विजयति नानृतम्।

२. निम्नलिखित धातुओं के आत्मनेपद रूप लोट् और लङ् लकार में लिखो।

सह—याच्—शिक्ष्—शङ्क्—ईक्ष और मुद्

३. निम्न लिखित धातुओं के क्तान्त (Past Passive Participles) क्तवत्वन्त (Past Active Participles) रूप लिखो।

नश्—पुष्—गम्—दृश्—कृ – दह—जन्— तुष्—नम्—प्रच्छ—मुच्—लुभ्—हन् और सृज्

४. निम्नलिखित श्लोक में वाच्य परिवर्तन करो—

पिवन्ति नद्यः स्वयमेवनाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
तपत्यजस्रं स्वकृतं न भानुः
परोपका राय सतां विभूतयः!

———

छठा अध्याय

अभ्यास ३७

हलन्त शब्द (Words endind in consonants)

१. गत अभ्यास से पहले जितने शब्द दिये गये हैं, वे सब अजन्त हैं अर्थात् उनके अन्त में स्वर है। इस पाठ में हलन्त शब्दों के रूप बताये जायँगे।

२. संस्कृत में तीनों लिङ्गों के शब्दों के आगे एक से प्रत्यय लगते हैं किन्तु रचना में स्वयं विभिन्नता आ जाती है और रूप भिन्न भिन्न हो जाते हैं! किन्तु फिर भी कुछ शब्दों में से ऐसे दो शब्दों का निर्देश किया गया है। जैसे—

भूभृत् - मरुत् (पुल्लिङ्ग)

दृशत् - विपद् (स्त्रीलिङ्ग)

पुल्लिङ्ग 'मरुत्' शब्द

	ए० व०	द्वि० व०	ब० व०
प्र०	मरुत्	मरुतौ	मरुतः
द्वि०	मरुतम्	"	"
तृ०	मरुता	मरुद्भ्याम्	मरुदभिः
च०	मरुते	"	भरुद्भ्यः

प०	मरुतः	मरुद्भ्याम्	मरुद्भ्यः
ष०	मरुतोः	मरुतोः	मरुताम्
स०	मरुति	"	मरुत्सु
सं०	मरुत्	मरुतौ	मरुतः

स्त्रीलिङ्ग 'वाच्' शब्द

प्र०	वाक्	वाचौ	वाचः
द्वि०	वाचम्	"	"
तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च०	वाचे	"	वाग्भ्यः
प०	वाचः	"	"
ष०	वाचः	वाचोः	वाचाम्
स०	वाचि	"	वाक्षु
सं०	वाक्	वाचौ	वाचः

४. ★नपुंसकलिंग में प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के रूप निम्न प्रकार से होंगे। शेष मरुत् की भाँति बनेंगे।

प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वि०	जगत्	जगती	जगन्ति

★ शत्रन्त शब्दों के रूप भी नपुंसकलिंग में जगत् की भांति बनते हैं किन्तु यहां जो शब्द दिये गये हैं वे शत्रन्त (Present Participles) नहीं हैं।

५. कुछ हलन्त शब्द--

पुल्लिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग	
सुहृद्	मित्र	आपद्	आपत्ति
भूभृत्	पर्वत	दृषद्	पत्थर
मरुत्	वायु	मृद्	मिट्टी
हुतभुज्	अग्नि	विपत्	विपत्ति
पयोमुच्	बादल	विद्युत्	बिजली
भिषज्	वैद्य	शरद्	पतझड़
महीरुह	वृक्ष	संपद्	संपति

नपुंसकलिङ्ग		स्त्रीलिङ्ग	
जगत्	संसार	सरित्	नदी
वियत्	आकाश	स्रज्	फूलों की माला

वाक्य

आज आकाश में मेघ हैं। बिजली के साथ मेघ कितने सुन्दर दिखाई देते हैं। सारा संसार आनन्द से नाच रहा है। बन में वृक्ष शोभित हो रहे हैं। मिट्टी गीली हो गई है। पत्थरों पर हरिण बैठे हैं। शरद् के दिन कितने मनोहर दिखाई देते हैं। नदियों का जल स्वच्छ हो गया है। लोग फूलों की माला गले में धारण करते हैं। वैद्य ने रोगी को देखा। उसकी विपत्ति से पत्थर भी काँपते हैं। संपत्ति में बहुत से मित्र होते हैं किन्तु विपत्ति में कोई नहीं आता। सज्जन संपत्ति और विपत्ति में एक समान रहते हैं। विपत्ति

में धैर्य प्राप्त करना चाहिये। इन्द्र वायु का देवता कहलाता है। संनिपात रोग में वैद्यों की परीक्षा की जाती है। बादलों के गर्जने से मोर नाचे। समुद्र ही नदियों का स्वामी है। बादल और बिजली आपस में मित्र हैं।

अभ्यास ३८

कृदन्त [Verbal Nouns]

शतृ और शानच् प्रत्यय [Present Participles]

पिछले अध्याय में भूतकाल के कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के प्रत्ययों का निरूपण किया जा चुका है। इस पाठ में वर्तमान काल के कर्तृवाच्य (Active partciples) के शतृ और शानच् प्रत्यय का बोध कराया जायगा।

२. शतृ और शानच् दोनों ही अनुवाद के लिए बहुत उपयोगी हैं। शतृ प्रत्यय परस्मैपद धातु के साथ प्रयुक्त होता है। और शानच् आत्मनेपद धातु के साथ। शतृ का 'अत्' शेष रह जाता है और शानच् का 'आन' वा 'मान' शेष रहता है। जैसे—

हस्—हस्+अत्=हसत

लभ—लभ्+मान=लभमान

३. (क) साधारणतया धातु का जो रूप वर्तमान काल प्रथम पुरुष, बहुवचन में बनता है, उसमें से यदि 'ति' भाग को निकाल दिया जाय तो शत्रन्त रूप बन जायेगा। यथा—

कुर्वन्ति = कुर्वन् + (ति) = कुर्वन

गच्छन्ति = गच्छन + (ति) = गच्छन्

(ख) भ्वादि, दिवादि, तुदादि और चुरादि अर्थात् पहिले, चौथे, छटे और दसवें गण के धातुओं के सामने शानच् का 'मान' भाग रह जाता है, शेष के आगे आन।

लभ् = लभमानः

दा = ददानः

४. (क) शानजन्त शब्दों के रूप अकारान्त पुलिङ्ग राम की तरह बनते हैं। शत्रन्त शब्दों के रूप प्रथमा और द्वितीया में निम्नलिखित होंगे। शेष मरुत की भाँति बनेंगे।

प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम	,,	गच्छतः

(ख) इन दोनों प्रत्ययों का प्रयोग वहीं होगा जहां दो क्रियाएँ हों, एक मुख्य दूसरी गौण। जैसे—

१. ग्रामं गच्छन नदीं पश्यति।

(वह गाँव को जाता हुआ नदी को देखता है)

२. गुरुं सेवमानः विद्यां लभते शिष्यः।

(गुरु की सेवा करता हुआ शिष्य विद्या प्राप्त करे)

वाक्य

बन में जाते हुये अर्जुन ने एक बाग देखा। बाग सुन्दर था उसे देखते हुए वह सोचने लगा मैं चलते चलते थक गया हूँ कुछ देर आराम कर लूं। वृक्ष की छाया में वह सो गया। निद्रा करते

हुए उसने एक स्वप्न देखा। एक बलिष्ठ मनुष्य दण्ड हाथ में लिये हुए सब को मारता हुआ चला आ रहा है। पाण्डवों को वन में रहते हुए दस वर्ष व्यतीत हो गये। वह दौड़ता हुआ कूए में गिर पड़ा। मरते हुये पिता ने पुत्रों से कहा। कांपता हुआ अर्जुन कृष्ण के चरणों में गिर पड़ा। वह चोरी का सन्देह करता हुआ मेरे घर आया। उसके राज्य करते हुये चोरों का भय नहीं था। कृष्ण ने आकाश से उतरते हुए नारद को देखा। नारद वीणा बजाते हुए और गाते हुए स्वर्ग से आये। फूल चूराते हुए वह पकड़ा गया। मैं घर से भागता हुआ बहिन से देखा गया।

अभ्यास ३६

कृदन्त—(Verbal derivatives)

क्त्वा और तुमन् [Gerund and Infinitive]

१. (क) धातु के आगे 'त्वा' लगाने से क्त्वान्त रूप (Gerund) बनते हैं। भूतकाल की असमापिका क्रिया के अर्थ में वह व्यवहृत होता है। जैसे—

गम् + क्त्वा = गत्वा = जाकर

कृ + क्त्वा = कृत्वा = करके

(ख) धातु के पहिले यदि उपसर्ग हो तो 'त्वा' के स्थान में 'य' आदेश होता है। यथा —

सम + भू + य = संभूय

(ग) किन्तु य के पहिले यदि कोई ह्रस्व स्वर हो तो 'य' के स्थान पर 'त्य' लगाया जाता है। यथा—

प्र + नम् + य = प्र + ण + त्य = प्रणत्य

वि + जि + य = वि + जि + त्य = विजित्य

२. (क) धातु के आगे 'तुम' प्रत्यय लगाने से तुमुन्नन्त रूप (Infinitive) बनाया जाता है। जो संप्रदान कारक का अर्थ है वही तुमुन्नन्त का भी होता है। जैसे—

हस् + तुम् = हसितुम् = हसने के लिए

(ख) तुमुन्नन्त रूपों की रचना में धातु के प्रथम स्वर को गुण हो जाता है। जैसे—

जि + तुम् = जेतुम = जीतने के लिए

कृ + तुम् = कर्तुम् = करने के लिए

३. (क) इन दोनों रूपों के विषय में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। यद्यपि ये कृदन्त रूप हैं किन्तु अव्यय हैं, इनके अन्य रूप नहीं बनते।

(ख) इन दोनों प्रत्यय का प्रयोग वहीं होगा जहाँ प्रधान और गौण दो क्रिया हों। जैसे—

१. भोजनं कृत्वा ग्रामं गमिष्यसि

[भोजन करके तुम गाँव को जाना]

२. रावणं जेतुं रामो लङ्कां गतवान्

[राम रावण को जीतने के लिए लङ्का को गया]

वाक्य

नदी का किनारा देखकर मुसाफिर खड़ा हो गया। वह थक कर वहाँ ही बैठ गया। कल-कल करता हुआ जल बह रहा था।

किनारे पर और लोग भी स्नान करने के लिए आये थे। उसने स्नान कर सूर्य को नमस्कार किया। फिर खा पीकर एक वृक्ष की छाया में सो गया। राजा को देखने के लिए प्रजा जा रही थी। राजा शत्रुओं को जीतकर दक्षिण देश से आया था। सामान लाने के लिए कुछ लोग शहर में गये। सामान लेकर वे उसी रास्ते से निकले। गङ्गा के प्रवाह को देखकर वहाँ रहने के लिए इच्छा हुई। मित्रसे मिलकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। अपने पिता के समाचार सुनने के लिए मैं रात्रि को वहाँ गया। बकरी को चीते न पकड़ कर मार डाला। तुम दोनों वहाँ क्या करने के लिए गये थे। विद्या प्राप्त करने के लिये और धन कमाने के लिये प्रायः लोग विदेश में भी जाते हैं। वहाँ पढ़ लिखकर, पूर्ण पण्डित बन कर अपने देश में लौट आते हैं। चौदह वर्ष के बाद राम रावण को मार कर अयोध्या में लौट आये। उनको देखने के लिये दूर-दूर से ऋषि और मुनि आये। धर्म की रक्षा के लिए ही उनका जन्म हुआ था।

अभ्यास ४०

१. विद्यार्थियों को 'किम्' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में ठीक प्रकार याद होने चाहियें—

शब्द

भिक्षा		भीख	चन्दनम्		चन्दन
जंघा		जांघ	पूत	(वि)	पवित्र
नापि	(अ)	नांही	इव	(अ)	समान

वाक्य

किसी नगर में कोई पतिव्रता स्त्री थी। उसका पति कुछ भी नहीं करता था। बिना किसी वैमनस्य के वह उसकी सेवा करती थी। एक बार एक भिखारी उस नगर में भीख मांगने के लिए आया। अपनी स्त्री की जंघा पर सिर रखे पति सो रहा था। उस स्त्री का बालक समीप ही खेल रहा था। भिखारी ने भीख मांगी किन्तु वह स्त्री न तो बोली और नाहीं अपने स्थान से हिली। इसी समय उसका छोटा-सा बालक आग के पास पहुंच गया। वह फिर भी न बोली, भिखारी खड़ा खड़ा देखता रहा लड़के ने आग में हाथ डाल दिया किन्तु उसका हाथ जला नहीं। स्त्री ने हृदय में प्रार्थना की यदि मैं मन, वचन और कर्म से शुद्ध हूं तो मेरा बालक न जले। ऐसा ही हुआ। बालक को आग में गिरता देखकर भी वह न बोली। अपने पति को भी नहीं जगाया। उसके पतिव्रत धर्म पर प्रसन्न होकर आग चन्दन के समान शीतल होगई।

अभ्यास ४१

शतृ-शानच् [Present Active Participles]
स्त्रीलिङ्ग (Feminine)

पिछले अभ्यास में शतृ शानच् के रूप बतलाये जा चुके हैं। स्त्रीलिङ्ग रूप बनाने के लिए दो नियमों पर ध्यान देना चाहिये।

(क) साधारणतया पुल्लिङ्ग की प्रथमा विभक्ति के एक वचन

के रूप के आगे 'ती' जोड़ने से शत्रन्त स्त्रीलिङ्ग रूप बन जाता है जैसे—

गच्छन् + ती = गच्छन्ती (जाती हुई स्त्री)

कुर्वन् + ती = कुर्वन्ती (करती हुई स्त्री)

(ख) शानजन्त प्रयोगों के अन्त में 'आ' लगने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनता है। जैसे—

सेवमान + आ = सेवमाना

लभमान + आ = लभमाना

वाक्य

वन को जाती हुई सीता से कौशल्या ने कहा—पुत्रि ! हमें छोड़ते हुए तुझे दुःख नहीं होता। तुझे देखती हुई मैं कितनी प्रसन्न हूँ। सीता ने प्रणाम कर सरल स्वभाव से हँसते हुए कहा—माँ ! तुम तो कहती थीं कि स्त्री को पति से अलग नहीं रहना चाहिये। तुम्हारी आज्ञा पालने के लिए मैं दुःख सहती हुई जारही हूं। पति की सेवा करती हुई स्त्रियाँ प्रशंसा को प्राप्त होती हैं। पति का अनुसरण करती हुई सावित्री सत्यवान को यमलोक से वापिस ले आई। वन में इन दोनों को कितना कष्ट होगा। यदि मुझसे इन्हें कुछ आराम मिला तो उससे भी आपको सुख होगा। सीता के धैर्य युक्त वचनों को सुनती हुई मातायें बड़ी प्रसन्न हुईं। कांपते हुए हाथों से कौशल्या ने उसे आशीर्वाद दिया। माता के चरणों की ओर देखती हुई सीता ने अयोध्या को छोड़ दिया।

अभ्यास ४२

वतुप् और मतुम् (Derivatives)

[Words ending in अत, वत् and मत्]

१. भूतकाल में कर्तृवाच्य प्रयोग में धातु के आगे 'वत' प्रत्यय लगाने का नियम बताया जा चुका है। इस अभ्यास में जिन शब्दों का उल्लेख है वे कृदन्त (Verbal nouns) नहीं हैं किन्तु विशेषण शब्द हैं। 'वत्' और 'मत्' का प्रयोग स्वार्थ में होता है। जैसे—

धन + वत् = धनवत् (धनवाला)

धी + मत = धीमत् (बुद्धिवाला)

साधारणतया संज्ञा के आगे 'वत' ही जोड़ा जाता है। किन्तु यदि शब्द की उपधा में (अन्तिम वर्ण का स्वर) में अ और आ से भिन्न कोई अन्य स्वर हो तो 'वत्' के स्थान पर 'मत' हो जाता हैं। जैसे—

हनु + मत = हनुमत् (ठोड़ीवाला)

श्री + मत् = श्रीमत् (लक्ष्मीवाला)

३. इन वतुवन्त शब्दों के रूप नीचे लिखे 'भगवत्' शब्द के समान बनेंगे। स्त्रीलिङ्ग में 'ई' लगाकर 'नदी' के समान रूप बना लेने चाहियें। जैसे—

श्रीमत् = श्रीमती

धनवत् = धनवती

'भगवत्'

	ए. व०	द्वि. व०	ब. व०
प्र०	भगवान	भगवन्तौ	भगवन्तः
द्वि०	भगवन्तम्	”	भगवतः
तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
च०	भगवते	”	भगवद्भ्य
पं०	भगवतः	”	”
ष०	”	भगवतोः	भगवताम्
स०	भगवति	”	भगवत्सु
स०	भगवन्!	भगवन्तौ	भगवन्तः

श्रीमती

प्र०	श्रीमती	श्रीमत्यौ	श्रीमत्यः
द्वि०	श्रीमतीम	”	श्रीमतीः
तृ०	श्रीमत्या	श्रीमतीभ्याम्	श्रीमतीभिः
च०	श्रीमत्यै	”	श्रीमतीभ्यः
पं०	श्रीमत्याः	”	”
ष०	”	श्रीमत्योः	श्रीमतीनाम्
स०	श्रीमत्याम्	”	श्रीमतीषु
स०	श्रीमति!	श्रीमत्यौ	श्रीमत्यः

४. इन तकारान्त शब्दों के रूप में यह विशेष ध्यान रखना चाहिये कि भूतकाल में 'क्तवत्' प्रत्यय के जो पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं, उनके रूप भी 'भगवत' और 'श्रीमती' के समान ही बनेंगे।

वत् (वतुप्)		मत् (मतुप्)	
बलवत्	बलवान	श्रीमत्	श्रीमान्
धनवत्	धनवान	धीमत्	बुद्धिमान्
गुणवत्	गुणी	आयुष्मत्	चिरंजीवी
परवत्	पराधीन	हनुमत् (नाम)	ठोडीवाला
भगवत्	ईश्वर	मूर्तिमत्	मूर्तिस्वरूप
यशस्वत्	यशवाला	कान्तिमत्	सुन्दर
रूपवत्	सुन्दर	श्यश्रुमत्	डाढ़ीवाला
सत्यवत्	नाम(सत्यवादी)	वसुमत्	धनी
वीर्यवत्	वीर	बुद्धिमत्	बुद्धिमान
श्रद्धावत	भक्ति	धनुष्मत्	धनुषधारी

वाक्य

अवन्ती नगरी का राजा शूद्रक बड़ा बलवान था वह परमात्मा का भक्त था। राजा अत्यन्त यशस्वी और गुणवान था। एक बार वह सभा में बैठा था। राजा के पास अनेक बुद्धिमान् और वीर मन्त्री बैठे थे। इतने में एक सुन्दर राजकुमार वहां आया। वह धनुषधारी था और शोभाशाली प्रतीत होता था। राजकुमार का नाम था वीरवर और वह जीविका के लिए वहाँ आया था। राजा ने उसे नौकर रख लिया और वह सेवा करने लगा। एक रात को एक स्त्री के रोने की आवाज़ आई। शूद्रक ने कारण जानने के लिए वीरवर को भेजा। वीरवर ने अन्धेरे में देखा कि एक रूपवती स्त्री रो रही है। वह मूर्ति धारण किये

सुन्दरता मालूम पड़ती थी। उसने पूछा भगवती! तुम क्यों रो रही हो। रोने का कारण जान कर वीरवर ने उसके दुःख को दूर किया। जिस प्रकार हनुमान राम के सेवक थे, वैसे ही वीरवर ने सेवा की। पराधीन होने पर भी उसने कभी दुःख अनुभव नहीं किया।

अभ्यास ४३

Miscellanious

१. भिषज्, वियत् सरित्, मृद् और स्रज् शब्द के रूप समस्त विभक्तियों में लिखो।

२. (क) नीचे लिखो धातुओं के पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग शत्रन्त और शानजन्त रूप लिखो—

वस्, हस्, स्था, मोद्, ईक्ष, पीड़्, भज्, और नी

(ख) निम्नलिखित धातुओं के क्त्वान्त और तुमुन्नन्त रूप बनाओ—

दह, भुज्, गम, सह, नश्, पच्, और नम्

३. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करो—

सरला अतीव बुद्धमाना कन्या सन्ति। सा विपत्यां भयं न करोवि। सावित्री सत्यवानस्य प्रियः भार्या असीत्। हनुमतस्य कृपया लक्ष्मणः पुनः जीवनं प्राप्तः। सा नगरं गच्छन् श्वसुर गृहे गता। नृपः शत्रू जीत्वा नगरं प्रति गच्छतः। अह भोजनं कृत्य पठेतुं गुरोः सकाशे गंस्यामि। अर्जुनः कर्ण विजित्वा प्रसन्नः स्व

गृहं गतवन्तः। श्रीमती पुष्पा देव्या कथितवान् यदद्य तस्य गृहे उत्सवः भविष्यति।

४. निम्नलिखित श्लोक का वाच्य परिवर्तन करो और अर्थ लिखो --

गुणाः गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रवहन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

सातवां अध्याय

अभ्यास ४४

Words ending in अन्

१. नीचे पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग अन्नन्त शब्दों के रूप लिखे जाते हैं। दोनों लिङ्गों के रूपों में पर्याप्त अन्तर है। पुल्लिङ्ग के प्रथम पांच रूपों में अकार को दीर्घ हो जाता है।

पुल्लिङ्ग "राजन्"

प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
द्वि०	राजानम	"	राज्ञः
तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजाभिः
च०	राज्ञे	"	राजभ्यः
प०	राज्ञः	"	"
ष०	"	राज्ञोः	राज्ञाम्
स०	राज्ञि-राजनि	"	राजसु
सं०	राजन्	राजानौ	राजानः

पुल्लिङ्ग 'आत्मन्'

प्र०	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वि०	आत्मानम्	"	आत्मन

तृ०	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभि
च०	आत्मने	,,	आत्मभ्यः
पं०	आत्मनः	,,	,,
षं०	,,	आत्मनोः	आत्मनाम्
सं०	आत्मनि	,,	आत्मसु
सं०	आत्मन्	आत्मानौ	आत्मानः

नपुंसकलिंग 'नामन'

	ए. व०	द्वि. व०	ब. व०
प्र०	नाम	नामनी·नाम्नी	नामानि
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम	नामभिः
च०	नाम्ने	,,	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	,,	,,
षं०	,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नामनि-नाम्नि	,,	नामसु
सं०	नामन्-नाम	नामनी-नाम्नी	नामानि

२. स्त्रीलिंग 'सीमन्' इत्यादि शब्दों के रूप भी 'नामन्' की भांति बनेंगे।

३. पुल्लिग शब्दः		नपुंसकलिंग	
राजन्	राजा	नामन्	नाम
अश्मन्	पत्थर	वर्त्मन्	मार्ग
मूर्धन्	सिर	सद्मन्	घर
ब्रम्हन	ब्रम्हा	हेमन	स्वर्ण

महिमन	महिमा	कर्मन्	काम
लघिमन	छुटाई	चर्मन्	चमड़ा
विश्वकर्मन	देवताओं का कारीगर	जन्मन्	जन्म

अन्य विशेषण शब्द

दूर	दूर	दारुण	कठोर
मृदु	कोमल	तृषित	प्यासा
लघु	छोटा	सुरभित	सुगन्धित
तिक्त	तीखा	सित	श्वेत
अम्ल	खट्टा	असित	काला
लवण	नमकीन	लोहित	लाल
कटु	कड़वा	नील	नीला
मधुर	मीठा	पीत	पीला

वाक्य

सीता का विलाप सुनकर पत्थर भी रोने लगे। ब्रह्मा के दो पुत्र थे। ऋषि ने राजा के सिर पर फूलों की माला रक्खी। हम इस रास्ते से अयोध्या जायँगे। वह देवताओं का घर विश्वकर्मा ने बनाया था। ब्राह्मण की स्तुति से राक्षस बहुत प्रसन्न हुआ और उसने ब्राह्मण को स्वर्ण दान दिया। भागीरथ नाम के राजा द्वारा गंगा पृथ्वी पर लाई गई। गंगा की महिमा से लोगों के पाप छूट जाते हैं। गंगा का पानी श्वेत है और यमुना का नीला। पानी का स्वाद अत्यन्त मीठा है। दोनों नदियों का संगम प्रयाग

में होता है। कालीदास ने संगम का वर्णन बहुत सुन्दर किया है। नीले रंग के आकाश में सफेद बिजली सुन्दर मालूम होती है। यह पीला फल खट्टा है, मीठा नहीं। काले-काले बादल समुद्र से पानी लेकर आये हैं। समुद्र का जल नमकीन होता है। प्रातःकाल सूर्योदय के समय और सूर्यास्त के समय आकाश लाल हो जाता है। प्रेम से और श्रद्धा से सभी प्रसन्न हो जाते हैं। संसार में बड़ाई या छुटाई जन्म से नहीं किन्तु कर्म से होती है। शिकारी चमड़े के लिये जानवरों को मारते हैं।

अभ्यास ४५

(Words ending in इन)

१. प्रथमा विभक्त के एक वचन में पुंल्लिग इन्नत शब्दों की 'इ' को दीर्घ हो जाता है। शेष रूप अन्नत शब्दों की भाँति बनते हैं। जैसे—

शशिन् — शशी
गुणिन् — गुणी

२. पुंल्लिग 'शशिन्'

	ए. व०	द्वि. व०	ब. व०
प्र०	शशी	शशिनौ	शशिनः
द्वि०	शशिनम्	,,	,,
तृ०	शशिना	शशिभ्याम्	शशिभिः
च०	शशिने	,,	शशिभ्यः
पं०	शशिनः	,,	,,

ष	,,	शशिनोः	शशिनाम्
स०	शशिनि		शशिषु
सं०	शशिन्	शशिनौ	शशिन,

३. नपुंसकलिंग में इन्नन्त शब्दों के रूप निम्न लिखित 'भाविन् शब्द की भाँति बनेंगे--

प्र०	भावि	भाविनि	भावीन
द्वि०	,,	,,	,,
सं०	भाविन्-भावि	,,	,,

शेष रूप 'शशिन' की भाँति ही बनेंगे

४०. इन्नन्त विशेषणों का स्त्रीलिंग रूप 'ई' लगाने से बनता है। जैसे— 'प'

प्रियवादिन् + ई = प्रियवादिनी (प्रिय बचन बोलने वाली)
योगिन + ई = योगिनी (योगिनी)

शब्द

शशिन्	चन्द्रमा	अपराधिन्	दोषी
गुणिन्	गुणी	ब्रह्मचारिन्	ब्रह्मचारी
पक्षिन्	पक्षी	मेधाविन	बुद्धिमान्
धनिन्	धनी	सत्यवादिन्	सत्यवादी
स्वामिन्	मालिक	कुशलिन्	स्वस्थ
योगिन	योगी	कञ्चुकिन्	अन्तःपुर का एक भृत्य

प्राणिन्	जीव	अनुजीविन्	नौकर
शूलिन्	महोदय	विवेकिन्	ज्ञानवान्
क्षयिन्	नश्वर	विद्यार्थिन्	विद्यार्थी
वाग्मिन्	वाक्पटु	भयहारिन	भय दूर करने वाला

भूतकाल 'कर्मवाच्य' प्रयोग (Past passive Participles)

विहित (वि + √ धा) = किया हुआ।

विषण्ण (नि + √ सद्) = बैठा हुआ।

कुण्ठित (√ कुण्ठ) = रुका हुआ।

विनीत (वि + √ नि) = विनय संपन्न—शिष्य

अभिषिक्त (अभि + √सिच) = अभिषेक किया हुआ।

वाक्य

चन्द्रमा के प्रकाश से सब वस्तुएँ श्वेत दीखती हैं। धनियों का आदर अपने देश में ही होता है किन्तु गुणियों की सब जगह पूजा की जाती है। पक्षियों के आकाश में उड़ जाने पर शिकारी घर को लौट गया। स्वामी तो कोमल स्वभाव का है किन्तु मालकिन बहुत कठोर है। चन्द्रापीड़ ने उस निर्जन वन में योगिनी को देखा वह शिला पर बैठी हुई थी। राजा को चाहिए कि वह अपराधी को दण्ड दे और सत्य बोलने वाले का आदर करे। शङ्कराचार्य ज्ञानी तो थे ही किन्तु वे बोलने में भी चतुर थे। उस विद्यार्थी की बुद्धि कुंठित हो गई है। वह बुद्धिमानों में अपराधियों की भांति शरमाता है। कंचुकी ने कहा स्वामी वह महादेव का भक्त है। स्वामियों को नौकरों से कठोर व्यव-

हार नहीं करना चाहिए। उसकी बहिन बहुत विनय सम्पन्न, ज्ञानवान और सत्य बोलने वाली है। सब स्त्रियों ने इन्दुमती का अभिषेक किया और उसे सिंहासन पर बिठा दिया। ध्रुव ने कहा 'हे भय को दूर करने वाले! ऐसा करो जिससे मेरी माता स्वस्थ रहे। आज कल बहुत से बुद्धिवान शास्त्रों की कही बातों को नहीं मानते।

अभ्यास ४६

Words endig in स्, अस्, वस्, and ईयस्

पुंल्लिग—Masculine

१. सान्त शब्दों के प्रथमा विभक्ति के एक वचन में 'स' का लोप होकर 'अ' को दीर्घ हो जाता है। 'स' के स्थान पर विसर्ग हो जाते हैं। जैसे:—

चन्द्रमा

२. जिन शब्दों के अन्त में 'वस्' अथवा 'ईयस'होता है उनके 'अ' को दीर्घ होकर स् के स्थान पर न् हो जाता है। इस प्रकार शब्दों के प्रथम पांच रूपों में अ को दीर्घ होता है और प्रथमा विभक्ति के एक वचन में शब्दों के अन्त में मान् अथवा वान् रहता है।

श्रेयस — श्रेयान्

विद्वस — विद्वान्

३. सम्बोधन एक वचन में किसी भी सान्त शब्द को दीर्घ नहीं होता। जैसे—विद्वन, चन्द्रमः,

४. पुलिङ्ग 'चन्द्रमस्'

	ए० व०	द्वि व०	व. व०
प्र०	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वि०	चन्द्रमसम्	,,	,,
तृ०	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च०	चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः
पं०	चन्द्रमसः	,,	,,
ष०	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स०	चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमस्सु
स०	चन्द्रमः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः

पुल्लिङ्ग 'विद्वस्'

प्र०	विद्वान	विद्वांसौ*	विद्वांसः
द्वि०	विद्वांसम्	,,	विदुषः
तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वदभिः
च०	विदुषे	,,	विद्वद्भ्यः
पं०	विदुषः	,,	,,
ष०	,,	विदुषोः	विदुषाम्
स०	विदुषि	,,	विद्वत्सु
स०	विद्वन्	विद्वांसौ	विद्वांसः

* सन्धि के नियम के अनुसार श, ष, स, और ह से पूर्व न को अनुस्वार हो जाता है।

पुल्लिग 'श्रेयस्'

	ए. व०	द्वि. ब०	ब. व०
प्र०	श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयासः
द्वि०	श्रेयांसम्	„	श्रेयसः
तृ०	सा—श्रे	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः
च०	श्रेयसे	„	श्रेयोभ्यः
पं०	श्रेलसः	„	„
ष०	„	श्रेयसोः	श्रेयसाम्
स०	श्रेयसि	„	श्रेयस्सु
स०	श्रेयन्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः

शब्द

संज्ञावाची—		विशेषण—	
चन्द्रमस्	चन्द्रमा	ज्यायस्	बड़ा
पुमस्	मनुष्य	कनीयस्	छोटा
दुर्वासस्	एक ऋषी का नाम,	भूयस्	बहुत
वेधस्	ब्रह्मा	प्रेयस्	प्रिय
विशेषण—		श्रेयस्	कल्याण
पापीयस्	पापी	विद्वस्	विद्वान
साधीयस्	ठीक	नेदीयस्	पास, समीप
पुल्लिङ्ग		स्त्रीलिंङ्ग—	
वर	वरदान	वृत्ति	पेशा, व्यवहार
शाप	शाप	वालिशता	बचपना

प्रकर्ष	उन्नति	घटना	वृत्तान्त
विकास	वृद्धि	अध्यापिका	पढ़ानेवाली
अपवाद	निन्दा	आख्ययिका	कहानी

वाक्य

दुर्वासा ऋषि बहुत विद्वान थे किन्तु वे क्रोधी भी थे। पुराणों की कहानी में लिखा है कि उन्होंने ब्रह्मा को भी शाप दे दिया था। तू बड़ा पापी है, अपने कल्याण के लिए भगवान का ध्यान कर। छोटे भाई के कारण बड़े भाई की निन्दा हुई। इसी-लिए तो सब धर्मशास्त्र कहते हैं कि उन्नति और विकास होने पर अहंकार न करना चाहिये। प्रायः ऐसे वृत्तान्तों की कहानियां मनुष्य सुनते रहते हैं। उसकी बाल-चञ्चलता के कारण मेरी बड़ी निन्दा हुई। पापियों और दुष्टों का कल्याण करना ही साधुओं का पेशा है। हरि ने अपने प्रिय ध्रुव को दर्शन देकर वर दिया। पर्वत के समीप ही एक सरोवर है। उसमें बहुत से हंस क्रीड़ा करते हैं। आज विद्यालय में अध्यापिका से हमने एक कहानी सुनी। ब्रह्मा ने ही सब जीवों और पदार्थों को बनाया है। बड़े भाई के मर जाने पर छोटे भाई को बहुत धन मिला। घर में सब से अच्छा व्यवहार करना चाहिये।

अभ्यास ४७

(स् and अस् ending words)

Neuter & feminine

१. गत अभ्यास में जिन सान्त विशेषण शब्दों के रूप दिये गये हैं उनके द्वितीया बहुवचनान्त रूपों के विसर्गों का लोप कर अन्तिम 'अ' के स्थान पर 'ई' जोड़ देने से स्त्रीलिङ्ग रूप बन जाते हैं। सब रूप ईकारान्त 'नदी' की भांति बनेंगे जैसे—

विद्वस् (विदुषः)	=	विदुषी
श्रेयस् (श्रेययः)	=	श्रेयसी
लघीयस् (लघीयसः)	=	लघीयसी

२. नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में भिन्न होंगे। शेष समस्त रूप 'चन्द्रमस्' की भांति बनेंगे।

नपुंसकलिङ्ग 'मनस्'

प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
सं०	मनः	मनसी	मनांसि

३. विशेषण शब्दों से भिन्न स्त्रीलिङ्ग शब्द बहुत कम हैं। 'अर्चिस्' (ज्वाला) के रूप नीचे लिखे जाते हैं।

स्त्रीलिङ्ग 'अर्चिस्'

	ए.व	द्वि.व.	ब.व.
प्र०	अर्चिः	अर्चिषौ	अर्चिषः
द्वि०	अर्चिषम	,,	,,

तृ०	अर्चिषा	अर्चिर्भ्याम	अर्चिभः
च०	अर्चिष	,,	अर्चिभ्यः
प०	अर्चिषः	,,	,,
ष०	,,	अर्चिषोः	अर्चिषाम्
स०	अर्चिषि	,,	अर्चिष्षु-ःषु
सं०	अर्चिः	अर्चिषी	अर्चिषः

नपुंसकलिङ्ग शब्द

पयस्	दूध, पानी	चक्षुस्	आंख
रक्षस्	राक्षस	धनुस्	धनुष
नभस्	आकाश	वासस्	कपड़ा
रजस्	धूल	तेजस्	तेज, ज्योति
मनस्	मन	हविस्	यज्ञ-सामग्री
तमस्	अँधेरा	ज्योतिस्	तेज, ज्वाला
तपस्	तप	शिरस्	शिर
सरस्	तालाब	छन्दस्	वेद
वयस्	आयु	अम्भस्	पानी
यशस्	कीर्ति	चेतस्	हृदय

क्रियाविशेषण शब्द (Adverb)

अनन्तरम्	बाद में	निभृतम्	चुपचाप
केवलम्	केवल	सहसा	अचानक
मधुरम्	मीठा		

सत्वरम् जल्दी
अजस्रम् लगाकर
निर्भरम् निर्विघ्न

वाक्य

राजा उत्तानपाद की बड़ी रानी का नाम सुनीति और छोटी का नाम सुरुचि था। दोनों में से सुरुचि ही राजा की प्यारी थी। सुनीति बड़ी विदुषी और समझदार थी। उसके पुत्र ध्रुव का यश सारे भारतवर्ष में फैला है। उसने पिता के व्यवहार से कुपित होकर, अपमान के बदले की इच्छा से घर छोड़ दिया। एक भयङ्कर वन में चुपचाप रहने लगा। तालाब के किनारे मन में हरि का ध्यान कर अपने तेज से वन के अंधेरे को भी दूर कर दिया। न केवल वन के जीव-जन्तु किन्तु जड़, वृक्ष भी ध्रुव के तप से वशीभूत हो गये। बाद में एक दिन अचानक एक मूर्ति आकाश से नीचे उतरी। उसकी आँखों में तेज था। हाथ में धनुष था। वही भगवान थे, उन्होंने मीठे शब्दों से ध्रुव को वरदान दिया। अपने कमण्डलु से पानी के छींटे उसके मुख पर डाले। भगवान के दर्शन कर ध्रुव के समस्त दुःख दूर हो गये।

अभ्यास ४८

अतिशयवाचक और तुलनावाचक प्रत्यय

[Superlative & Comperative Degrees]

१. 'ईयस्' अथवा 'एयस्' प्रत्ययान्त 'ज्यायस्' आदि विशेषण शब्दों के रूप पहिले लिखे जा चुके हैं। उन शब्दों का प्रथमा

एकवचनान्त रूप तुलना वाचक (Cɔmparative) होता है और 'इष्ठन्' प्रत्यय लगाने से जो रूप बनता है वह अतिशय-वाचक (Comparattve) होता है। जैसे—

ईयस—एयस् Comparative	इष्ठन् Superlative
ज्यायस् (बड़ा) —ज्यायान्	ज्येष्ठ
कनीयस् (छोटा) —कनीयान्	कनिष्ठ
श्रेयस् (अच्छा) —श्रेयान्	श्रेष्ठ
भूयस् (बहुत) —भूयान	भूयिष्ठ
पापीयस् (पापी) —पापीयान्	पापिष्ठ
लघीयस् (हलका) —लघीयान्	लघिष्ठ
द्राघीयस् (लम्बा) —द्राघीयान्	द्राघिष्ठ
महीयस् (बड़ा) —महीयान्	महिष्ठ
गरीयस् (भारी) —गरीयान्	गारिष्ठ

२. ईयस् और इष्ठन् प्रत्यय के अतिरिक्त 'तर' और तम प्रत्यय लगाकर भी तुलनावाचक और अतिशयवाचक शब्द बनाये जाते हैं। जैसे—

दीर्घतर	(लम्बा)	दीर्घतम
लघुतर	(हलका-छोटा)	लघुतम
महत्तर	(बड़ा)	महत्तम

३. इन शब्दों के रूप हलन्त अजन्त शब्दों की भांति सब विभक्तियों और वचनों में बनते हैं।

४. ईयस् और एयस् प्रत्ययान्त शब्दों के आगे 'ई' लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं, शेष अकारान्त शब्दों के आगे 'आ' लगाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनेगा। जैसे—

कनीयसी — कनिष्ठा	उत्तरा —उत्तमा
पापीयसी — पापिष्ठा	महत्तरा—महत्तमा
ज्यासी — ज्येष्ठा	दीर्घतरा—दीर्घतमा

वाक्य

चारों भाइयों में राम सबसे अच्छे थे। सबसे छोटा भाई शत्रुघ्न भी बड़ा वीर था। उन दिनों में राक्षस बड़े पापी थे किन्तु रावण सबसे पापी था। उसकी बहिन शूर्पणखा भी मायाविनी और पापिनी थी। राम ने राक्षसों को मार कर बड़ा अच्छा काम किया। सीता को रावण के बन्दीगृह से छुटाया। इस कार्य में हनुमान ने बहुत ही अधिक सहायता की। उसने बहुत लम्बा लङ्का का मार्ग थोड़े से थोड़े समय में पार किया। लङ्का बड़ी श्रेष्ठ नगरी थी किन्तु हनुमान द्वारा जलादी गई, राम ने बहुत भारी शिव के धनुष को तोड़ कर राजा जनक की सब से बड़ी पुत्री से विवाह किया था। सीता रूप में नहीं गुणों में भी सबसे बढ़कर थी! किन्तु प्रजापालन में तत्पर राम ने उसको भी छोड़ दिया। बड़े आदमी परोपकार के लिए सर्वदा ही स्वार्थ त्याग करते हैं। स्वास्थ्य के लिये हलका भोजन करना चाहिये बहुत भारी भोजन से शरीर निरोग नहीं रहता। गीता में बुद्धि को कर्म से बड़ा माना गया है।

अभ्यास ४६

१. निम्नलिखित हलन्त शब्दों के पुल्लिङ्ग रूप समस्त विभक्तियों में लिखो—

ईदृश् ❀	ऐसा	दृश्	आंख
कीदृश् ❀	कैसा	दिश्	दिशा
यादृश् ❀	जैसा	एतादृश ❀	ऐसा
तादृश् ❀	वैसा	भवादृश् ❀	आपके समान

२. (क) वस् ईयस और एयसान्त शब्दों के स्त्रीलिङ्ग रूप बनाने की क्या विधि है ?

(ख) अस्, इस्, ईयस् और वस् प्रत्ययान्त शब्दों के रूपों में क्या अन्तर है ?

३. जग्मिवस, तस्थिवस, न्यायकारिन्, मनोहारिन् शब्दों के पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग रूप समस्त विभक्तियों में लिखो।

४. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखो।

शूद्रक राज्ञस्य राजलक्ष्मी रुदत् वीरवरं उवाच "अधुना मया एष राज्यं त्यजानि, अन्यत् स्थानं सुखात् वसिष्ये। राजन् मनेन मां न पूजति। वीरवरः पृष्ठः" भगवती ! त्वां अत्रैव तिष्ठताम्, यमुपायं कथयिष्यसि आहं शूद्रकराजाय कृष्यामि।

❀ इन शब्दों के रूप 'वाच्' शब्द की भांति बनेंगे और स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिये शब्द के आगे 'ई' जोड़ देना चाहिये। ईदृशी, कीदृशी।

देव्योक्तं त्वमात्मानम् पुत्रं शक्तिधरं मेधावीं भगवत्याः सर्वमंण लस्यै देहि, तदा मे वाशः भवेत्। देवीं वचसाः श्रुत्वा वीरवरः स्वग्रिहं आगच्छत।

५. निम्नलिखित श्लोकों के भावार्थ लिखो—

(क) गच्छन्न खादामि हसन्न जल्पे,
गतं न शोचामि कृतं न मन्ये।
द्वाभ्यां तृतीवो न भवामि राजन
कि कारणं भोज ! भवामि मूर्खः।

(ख) विद्या विवादाय धनं मदाय,
शक्तिः परेषां परिपीडनाय।
खलस्य, साधोविपरीत मेततः,
ज्ञानाय रानाय च रक्षणाय॥

आठवां अध्याय

अभ्यास ५०

प्रेरणार्थक क्रिया Causative verbs

१. चुरादिगण के अतिरिक्त अन्य गणों की धातुओं से प्रेरणार्थक रूप (Casual forms) बनाने के लिये 'णिच्' प्रत्यय लगाया जाता है इसलिए प्रेरणार्थक क्रिया को ण्यन्त अथवा णिजन्त क्रिया भी कहा जाता है। ण्यन्त रूप बनाने के लिए धातु के आगे 'अय्' विकरण चुरादिगण की भांति लगाया जाता है। भवति-भावयति, पठति-पाठयति।

प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के लिए निम्न लिखित नियमों का ध्यान रखना चाहिये—

(क) धातु का प्रथम स्वर यदि 'अ' हो तो दीर्घ हो जाता है। जैसे—पचति-पाचयति, पठति-पाठयति।

(ख) धातु का प्रथम स्वर यदि दीर्घ 'आ' हो तो धातु और अय् के बीच में 'प्' और जोड़ा जाता है। जैसे--

तिष्ठति--स्थापयति, जानाति—ज्ञापयति, ददाति—दापयति

(ग) धातु का प्रथम स्वर यदि 'उ' हो तो उसे गुण हो जाता है। मोदते--मोदयते, बोधति—बोधयति।

(घ) धातु का प्रथम स्वर यदि 'ऋ' हो तो उ से वृद्धि हो जाती है। जैसे—

करोति-कारयति, स्मरति—स्मारयति, तरति—तारयति,

२. कुछ प्रेरणार्थक रूप—

भू	भावयति	पत्	पातयति
हस्	हासयति	रक्ष्	रक्षयति
वस	वासयति	क्रीड्	क्रीडयति

चुरादिगणगण की समस्त क्रियाएँ स्वयं ही प्रेरणार्थक होती हैं। जैसे पीड़यति—दुःख देता है—

पच्	पाचयति	शुष्	शोषयति
दह	दाहयति	कुप्	कोपयति
नश्	नाशयति	स्था	स्थापयति
नृत्	नर्तयति	गम्	गमयति
पुष्	पोषयति	बुध्	बोधयति
मुच्	मोचयति	प्र-विश्	प्रवेशयति
दृश्	दर्शयति	प्र-रूह्	प्ररोहयति
पा (पिव्)	पाययति	अप-सृ	अपसारयति
स्मृ	स्मारयति	कम्प्	कम्पयति
दा	दापयति	हन्	घातयति
तुष्	तोषयति	श्रु	श्रावयति
कृ	कारयति	ज्ञा	ज्ञापयति
आ-रूह	आरोहयति	अव-तृ	अवतारयति

३. अनुवाद के लिए विद्यार्थियों को निम्नलिखित प्रयोगों को ध्यान पूर्वक पढ़ लेना चाहिये—

(क) वासुदेवः पठति, अध्यापकस्तं पाठयति—वासुदेव पढ़ता है अध्यापक उसे पढ़ाता है।

(ख) पण्डितः समायाँ रामायण कथां श्रावयति नाराणां चेताँसि च मोदयति—पण्डित सभा में रामायण की कथा सुनाता है और मनुष्यों के हृदयों को प्रसन्न करता है।

(ग) जलं पायय, अन्यथा परशुना घातयामि—जल पिलादो नहीं तो फरसे से मारता हूँ।

(घ) पिता अष्टमवर्षे, पुत्रस्य यज्ञोपवीतं कारयेत्—पिता आठवें वर्ष में पुत्र का यज्ञोपवीत करादे।

(ङ) हनुमान सीतायै रामस्य मुद्रिकां अदर्शयत्—हनुमान ने सीता को राम की अंगूठी दिखाई।

(च) क्षुधितान् भोजय, तृषितान् जलं पायय—भूखों को खिलाओ और प्यासों को जल पिलाओ।

वाक्य

इस विद्यालय में चार अध्यापक विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं। माता-पिता (पितरौ) प्रसन्नता से बालकों को यहाँ प्रविष्ट कराते हैं। वह कन्या अपने मोर को नचाती है। कृष्ण ने गीता में कहा है कि मैं ही धर्म की मर्यादा की रक्षा करता हूँ। ये वस्त्र गुरुजी के घर रखवादो। मोह बुद्धि को नाश करता है और बुद्धि-नाश से

मनुष्य नष्ट होता है। शकुन्तला ने दुष्यन्त को अपना पिछला वृत्तान्त याद कराया। रावण ने कठोर तप से महादेव को प्रसन्न किया। हम इस बाग में आम के वृक्ष लगवा रहे हैं। बिना विचारे काम नहीं करना चाहिये, नहीं तो पश्चाताप मन को जीवन पर्यन्त जलाता है। सूर्य की तेज धूप कोमल कमलों को प्रसन्न करती है और जल को सुखाती है। मैं बालक को धीरे-धीरे महल से नीचे उतारूँगा। माता ने दूध के द्वारा बच्चे को पाला और पोसा। भृत्य राजा की आज्ञा से मनुष्यों को हटाते हैं।

अभ्यास ५१

इच्छार्थक और नामधातु क्रियाएं
(Desiderative and Denominative verbs)

१. इच्छा के अर्थ में धातु के आगे 'सन्' प्रत्यय लगाया जाता है इसलिए इन धातुओं को सन्नन्त भी कहते हैं। सन्नन्त धातु (Desiderative verb) को द्वित्व होकर प्रथम 'अ' को 'इ' हो जाता है। जैसे—

गच्छति—	जिगमिषति	(जाने की इच्छा करता है)
पठति—	पिपठिषति	(पढ़ने की इच्छा करता है)
हन्ति—	जिघांसति	(मारने की इच्छा करता है)

२. जिन संज्ञा शब्दों के आगे क्यच् (य) लगाकर उनको धातु का रूप दिया जाता है इन्हें नामधातु (Denominative verbs) कहते हैं। जैसे—

सुखयति—सुख देता है
दुःखयति—दुःख देता है
गर्दभायते—गधे के समान आचरण करता है

शब्द

जिगमिषा	(गम्)	जाने की इच्छा	जिगमिषुः	जाने	का इच्छुक
जिज्ञासा	(ज्ञा)	जानने ,, ,,	जिज्ञासुः	जानने ,,	,,
पिपासा	(पा)	पीने ,, ,,	पिपासुः	पीने ,,	,,
बुभुक्षा	(भुज्)	खाने ,, ,,	बुभुक्षुः	खाने ,,	,,
जिघांसा	(हन्)	मानने ,, ,,	जिघासुः	मारने ,,	,,
चिकीर्षा	(कृ))	करने ,, ,,	चिकीर्षुः	करने ,,	,,
दित्सा	(दा)	देने ,, ,,	दित्सुः	देने ,,	,,
तितिक्षा	(क्षम्)	सहने ,, ,,	तितिक्षुः	सहने ,,	,,

अव्यय

मुहुः (र्)	फिर	प्रभृति	(समय) से
पुनः (र्)	फिर	पर्यन्त	(समय) तक
भूयः (स्)	फिर	सांप्रतम	अब
युगपत	एक समय	अधः (स्)	नीचे
मुधा	व्यर्थ	उपरि	ऊपर

वाक्य

आज मैं फिर गाँव को जाना चाहता हूं। धर्म को जानने की इच्छा से बुद्धदेव ने एक बार ही घर और राज्य छोड़ दिया। उन्होंने अपनी खाने और पीने की इच्छा को नष्ट कर डाला और

अत्यन्त सहनशील हो गये। बचपन से अब तक वह व्यर्थ ही जीवों को मारने का इच्छुक है। मैं पर्वत के शिखर पर जाना चाहता हूँ और वहाँ झरने के जल में स्नान करना चाहता हूँ। जो मनुष्य संसार का उपकार करना चाहते हैं उन्हें अन्य मनुष्य दुःखी करते हैं। वह सिंह मुनि को मारने की इच्छा से पर्वत से नीचे उतर रहा है। राजा बोला हे मुनि! मैं अपनी कन्या को किसी बलवान को देना चाहता हूँ। अर्जुन ने विनीत होकर कहा "कृष्ण! तुम्हें बार बार नमस्कार हो।" वे सन्ध्या करने की इच्छा से नदी पर गये।

अभ्यास ५२

तव्य, अनीय और यत् प्रत्यय

(Potential passive participles)

१. कर्मवाच्य भविष्यत् में विधि द्योतक कृदन्त रूप बनाने के लिए धातु के आगे 'तव्य' और 'अनीय' प्रत्यय लगाये जाते हैं। जि-जेतव्य—जयनीय, कृ— कर्तव्य-करणीय।

२. इन प्रत्ययों से बने रूप तीनों लिंगों में व्यवहृत होते हैं

त्वया पाठः पठितव्यः।
" कार्यं कर्तव्यम्।
" प्रीतिः कर्तव्या।

३. इन रूपों के बनाने से पहिले निम्नलिखित परिवर्तन धातु में आवश्यक हैं।

(क) अन्त्य स्वर अथवा उपधा के इ, उ, वा, ऋ को गुण हो जाता है। जेतव्य, कर्तव्य, नेतव्य।

(ख) अजन्त धातुओं के आगे य (यत्) प्रत्यय लगाया जाता है और यदि धातु आकारान्त हो तो 'अ' को 'ए' हो जाता है

दा — देय [देने योग्य]
पा — पेय [पीने योग्य]
नी — नेय [ले जाने योग्य]
जि — जेय [जीतने योग्य]

(ग) एकारान्त और हलन्त धातुओं से परे 'ण्यत्' प्रत्यय का 'य' जोड़ा जाता हैं। इन रूपों में धातु के अन्त्य स्वर व उपधा को वृद्धि भी होती है।

कृ + ण्यत् = कार् + य = कार्य्य
स्मृ—ण्यत् = स्मार + य = स्मार्य
पट्—ण्यत् = पाठ् + य = पाठ्य
वच्—ण्यत् = वाच् + य = वाच्य

शब्द

सन्देशहरः	दूत	पताका	झण्डी
दर्पः	अभिमान	शलाका	सींक, बत्ती
वल्कलः	वृक्षों की छाल	नासिका	नाक
वैतालिकः	भाट	किंवदन्ती	कहावत
उत्कोचः	रिश्वत	दोला	झूला
विदूषकः	मखौलिया	लांगूलम	पूंछ
सारमेयः	कुत्ता	कौशलम	चतुरता

दुष्कालः	अकाल	वेतनम्	तनख्वाह
जनपदः	देश	साहसम्	हिम्मत
आडंबरः	दिखावा	केन्द्रम्	केन्द्र

वाक्य

❀ धन पाकर मनुष्य को अभिमान न करना चाहिये। विभीषण ने रावण से कहा—दूत को कभी नहीं मारना चाहिये। राजा के कर्मचारियों को रिश्वत नहीं लेनी चाहिये। इस देश में अकाल है, धनियों को पीड़ितों की सहायता करनी चाहिये। पेड़ों की छाल के कपड़े बनवासियों को पहनने चाहिये। गृहस्थियों को इन भाटों को इनाम देना चाहिये। कुत्ता भी पूंछ हिलाकर बैठता है। तुमको भी विनीत होकर बैठना चाहिये। विपत्ति में साहस से काम लेना चाहिये घबराना नहीं चाहिये। राजा ने कहा उस दास को २० रु० देने चाहिये, यह स्वामिभक्त है। पंडितों की सभा में वाणी की चतुराई दिखानी चाहिये, मूर्खों के सामने चुप रहना चाहिये।

अभ्यास ५३

ल्युट् और ण्वुल प्रत्यय

(Verbal nouns)

१. धातु के आगे 'ल्युट' प्रत्यय जोड़ कर संज्ञा शब्द बनाये जाते हैं। ल्युट् के स्थान पर केवल 'अन' रह जाता है। पापा-नम्, आस्-आसनम्, स्ना—स्नानम्।

❀ इस पाठ में सुविधानुसार लिङ्ग लकार का भी प्रयोग हो सकता है।

२. इसी प्रकार धातु के आगे 'ण्वुल्' प्रत्यय लगा कर कर्तृ-वाचक संज्ञाएँ बनाई जाती हैं। ण्वुल् के स्थान पर 'अक' आदेश हो जाता है। जैसे—

गै	—	गायकः	(गाने वाला)
नृत्	—	नर्तकः	(नाचने वाला)
लिख्	—	लेखकः	(लिखने वाला)

३. (क) 'ल्युट' प्रयान्त शब्दों के रूप अकारान्त नपुंसक लिंग 'ज्ञान' की भाँति बनेंगे।

जीवनम्	जीवने	जीवनानि
आसनम्	आसने	आसनानि

(ख) 'ण्वल्' प्रत्ययान्त शब्दों के रूप अकारान्त पुंल्लिग 'राम' की भाँति बनेंगे।

गायकः	गायकौ	गायकाः
नर्तकः	नर्तकौ	नर्तकाः

(ग) किन्तु ण्वुल् प्रत्ययान्त शब्दों के स्त्रीलिंग रूप भी 'इका' लगाने से बन जाते हैं। कभी-कभी 'ई' भी जोड़ा जाता है। जैसे—

गायिका, नायिका, लेखिका, नर्तकी,

शब्द

ल्युट्	(नपुंसक)	ण्वुल्	
दृश—दर्शन	दिखाना	दृश्—दर्शक	देखने वाला
दंश—दंशन	काटना	गै—गायक	गाने वाला

वम्—वमन	उलटी	नृत्—नर्तक	नाचने वाला
स्था—स्थान	जगह	दा—दायक	देने वाला
अर्ज्—अर्जन	कमाना	वच्—वाचक	पढ़ने वाला
कथ्—कथन	कहना	पठ्—पाठक	पढ़ने वाला
दा—दान	देना	श्रु—श्रावक	सुनने वाला
तृ—तरण	तैरना	याच—याचक	मांगने वाला
चिन्त्—चिन्तन	सोचना	लिख्—लेखक	लिखने वाला
प्र-क्षल्—प्रक्षालन	धोना	नी—नायक	ले जाने वाला
अप—मन—अपमान	निरादर	प्र + तृ-प्रतारक	ठगने वाला
शी—शयन	सोना	वह—वाहक	उठाने वाला

वाक्य

काश्मीर बहुत सुन्दर स्थान है। देखने वाले उसकी अत्यन्त प्रशंसा करते हैं। अनेक मनुष्य वहाँ धन कमाने जाते हैं और कई केवल देखने के लिये। रास्ते में भयंकर सांप भी मिलते हैं। जिनके काटने से उलटी हो जाती है। बहुत से लोगों का कहना है कि काश्मीर ही स्वर्ग है। लिखने वालों ने इस स्थान का सुन्दर वर्णन किया है। पढ़ने वालों ने उसे पढ़ा है और सुनने वालों ने सुना है। चन्द्रभागा का जल बहुत ठंडा है। मटन नामक तीर्थ में स्नान कर यात्री अपने पाप धोते हैं। नदी में तैरने से बड़ा आनन्द मिलता है। यहां के निवासी बहुत गरीब हैं और बोझा उठाने का काम करते हैं। मांगने वालों की और उन्हें दान देने वालों की संख्या काफी है। गर्मियों में बहुत से रोगी भी जाते हैं

जो देवदारू की छाया में सोते हैं। यहां पर ठगों से हमेशा बचना चाहिये।

अभ्यास ५५

कारक—नियम

Prominent use of cases

उन्नीसवें अभ्यास में कुछ कारकों के नियम बताये गये हैं, अवशिष्ट आवश्यक नियम नीचे लिखे जाते हैं।

१. निम्न लिखित अव्ययों के योग में द्वितीय विभक्ति प्रयुक्त होती है।

उभयतः	दोनों ओर	=	उभयतः गृहं जलं प्रवहति।
सर्वतः	चारों ओर	=	सर्वतः नगर ,, ,,
परितः	,, ,,	=	परितः ,, ,, ,,
उपर्युरि	ऊपर	=	उपर्युपरि लोकं देवा।
अधोऽधः	नीचे	=	अधोऽधः लोक नागाः।
धिक्	धिक्कार	=	धिक् त्वां वञ्चकम्।
अन्तरा	बीच में	=	उभयोरन्तरा कलहो जातः।

२. निम्नलिखित शब्दों तथा इनके पर्यायवाची शब्दों Synonyms के योग में तृतीया विभक्ति होती है।

किम् — कि तया क्रियते धेन्वा या न सूते न दुग्धदा ?

कार्यम् — साधनीयं त्वया कार्यम्।

प्रयोजनम्—अनेन स्वामिना किं प्रयोजनम् ?

अर्थः —कोऽर्थपुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न धार्मिकः ?

हीन —धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।

३. क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्या और असूया तथा इनके समान अर्थ वाली और धातुओं के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे—

*क्रुध्— अनुजीविने क्रुध्यति प्रभुः

द्रुह्— कथं स तुभ्यं अद्रुह्यात् ?

४. भय (Fear), जुगुप्सा (hatred), लज्जा(Shyness), विराम (rest), निवारण (Prevention) और रक्षा (guard) के तथा समानार्थक धातुओं के योग में पञ्चमी विभक्ति प्रयुक्त होती है। जैसे—

व्याघ्रात् बिभेति बालः। पापात जुगुप्सते भक्तः। पितुर्लज्जते कन्या। विरम तस्मात् कार्यात्। कृषकः क्षेत्रात् गां निवारयति। आपद्भ्यः प्रभुस्तमरक्षत्।

५. जब दो पदार्थों अथवा व्यक्तियों की तुलना कर एक ही विशेषता बताई जाय तब भी पंचमी विभक्ति होती है—रामः रावणात् बलवान् आसीत्।

६. निम्नलिखित अव्ययों के योग में भी पंचमी होती है—

प्रभृति (लेकर)=बाल्यात् प्रभृति सः मम मित्रम्।

आरभ्य ,, =ग्रामात् आरभ्यनदी पर्यन्तं वृक्षाः वर्तन्ते।

---

*क्रुध्, द्रुह् से पूर्व यदि कोई उपसर्ग हो तो द्वितीय विभक्ति होती है—संक्रुध्यसि अतिद्रुह्यसि वामाम्।

बाहिर् (बाहिर)न ॥ सः अद्य गरात् बाहिर् गतः ।
अनन्तरम् (पश्चात्) = स्नानादनन्तरं तेन भुक्तम् ।

अभ्यास ५५

अदादिगण (Roots of the 2nd class)

१. अदादिगण में धातु के आगे कोई विकरण नहीं जोड़ा जाता, इसलिए धातु का सम्बन्ध सीधा प्रत्ययों से हो जाता है ।

अद् — अद् + ति = अत्ति (वह खाता है)
विद् — विद् + त = वेत्ति वह (जानता है)
शास् — शास् + ति = शास्ति (वह राज्य करता है)

२. (क) अदादिगण में साधारणतया धातु के रूप निम्न प्रकार से होंगे ।

प्र. पु०	अत्ति	अत्तः	अदन्ति
म. पु०	अत्सि	अत्थः	अत्थ
उ. पु०	अद्मि	अद्वः	अद्मः

(ख) इस गण में कई धातुओं के रूपों में कुछ विशेषता है । 'हन्' धातु के 'न्' का लोप मध्यम पुरुष द्विवचन और बहुवचन में होता है ।

हन्ति	हतः	घ्नन्ति
हंसि	हथः	हथ
हन्ति	हन्वः	हन्मः

(ग) आत्मनेपद—शी (To lie down)

शेते	शयाते	शेरते
शेषे	शयाथे	शेध्वे
शये	शेवहे	शेमहे

३. कुछ धातुएं

पा	रक्षा करना	उप + इ	समीप आना
स्ना	नहाना	उद् + इ	उदित होना
वा	हवा का चलना	वि + श्वस्	विश्वास करना
ईड्	स्तुति करना	अति + शी	बढ़ जाना
ख्या	कहना	आ + शास्	आशा करना

वाक्य

सुधाकर श्रेणी में सब से चतुर बालक है (अस्)। वे सब बाग में जाकर आम खाते (अद्) हैं। कवि राजा के गुणों की स्तुति करते हैं (स्तु)। तुम मुझ से क्या कहते हो (ब्रू)। राम के वन चले जाने पर अयोध्यावासी बहुत दिन तक रोये (रुद्)। दिलीप ने वसिष्ट ऋषि की गाय को सन्तान के लिये दुहा (दुह्)। जब सारा संसार सोता (स्वप्) है योगी जागते हैं (जागृ)। वे सांप को लाठियों से मारते हैं (हन्)। आप सबको मालूम हो (विद्) कि इस नगरी में राजा भोज राज्य करते हैं (शास्)। मैं आता हूँ (आ + इ) तुम आगे चलो। पाठशाला में कई विद्यार्थी बैठे हैं, (अस्) कुछ पढ़ रहे हैं (अधि + इ) शेष सोते हैं (शी)। कैकेयी ने कहा राम चौदह वर्ष के लिये वन जावे (या)।

गालव ने देखा कि पूर्व दिशा में सूर्य उदय हुआ। धीरे धीरे ऋषियों ने आकर स्नान किया। शीतल मन्द सुगन्धित हवा बहने लगी। ऋषि कुमारों ने सूर्य को अर्घ्यदान दिया और सूर्य की स्तुति की। तब धौम्य ऋषि ने एक पुरानी कथा कही। उसको सुनने के लिए मैं भी पास पहुँचा। ऋषि ने कहा कि मैं आशा करता हूं सब इस कथा पर विश्वास करेंगे। यह कथा भाव और सुन्दरता में रामायण से भी बढ़कर हैं।

अभ्यास ५६

जुहोत्यादिगण (Roots of the 3rd cless)

१. जुहोत्यादिगण में भी धातु के आगे कोई विकरण नहीं लगता किन्तु धातु को द्वित्व हो जाता है। उसके बाद प्रत्यय जोड़े जाते हैं। यह ध्यान रखना चाहिये कि द्वित्व के पूर्व भाग का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

परस्मै०-भी (डरना) = (भी + भी) + ति = बिभेति
" -हु (यज्ञ करना) = (हु + हु) + ति = जुरोति
उभय०- दा (दान देना) = (दा + दा) + ति = ददाति
" - भृ (पालना) = (भृ + भृ) + ति = बिभर्ति

२. दा (To give) उभयपद.

परस्मैपद—ददाति	दत्त	ददादि
ददासि	दत्थः	दत्थ
ददामि	दद्वः	दद्मः

आत्मनेपद—	दत्ते	ददाते	ददते
	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
	ददे	दद्वहे	दद्महे

३. धातुएं—

ह्री	लज्जा करना	धा (उभय०)	पकड़ना
मा [आत्म०]	मापना	परि—धा	पहिनाना
हा "	छोड़ना	नि—धा	रखना

वाक्य

पिता ने बालकों को मिठाई दी। सज्जन दुर्गुणों से डरते हैं। वह गुरुजनों के सामने शरमाती है। तुम हाथ से कपड़ा नापते हो। हम सब पीले वस्त्र पहनते हैं। ऋषि तपोवनों में हवन करते हैं। सिंह ने शिकारी के डर से हरिण को छोड़ा। मैं इस हाथ से तलवार पकड़ता हूँ और दूसरे हाथ को नीचे रखता हूं। तुम अकेले हो, परमात्मा तुम्हारा पालन-पोषण करे। अग्नि में तपाने से सोना शोभा को धारण करता है।

अभ्यास ५७

स्वादिगण (Roots of the 6th class)

१. स्वादिगण में धातुओं के आगे नु विकरण जोड़ा जाता है। 'नु' को 'लट्' और 'लङ्' लकार के तीनों पुरुषों के एकवचन और लोट् के प्रथम पुरुष एकवचन तथा उत्तम पुरुष में 'नो' हो जाता है। जैसे—

'सु' (उभय०) 'रस निकालना'

सुनोति	सुनुतः	सुनवन्ति
सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ
सुनोमि	सुन्वः—पुनुवः	सुन्मः—पुनुमः

नीचे लिखी सब धातुओं के रूप इसी प्रकार बनेंगे।

२. धातुएं—

सु (अभय०)	रस निकालना	धु (उभय०)	कंपाना
अप् (पर०)	प्राप्त करना	वृ "	ढकना
शक् "	समर्थ होना	अपा-वृ	खोलना
विच (उभय)	चुनना	वि-वृ	प्रगट करना
वि+चि "	ढूंढना	श्रु (श्रु) (पर०)	सुनना
सम+चि "	इकट्ठा करना	साधं "	पूरा करना

वाक्य

ऋषि यज्ञ के लिये सोमरस निकालते थे। वैद्य भी फूल। और पत्तों में से रस निकालते हैं। तुम तैरते हुए नदी के पार जा सकते हो। दरवाजे को खोल दो हवा चल रही है। जो दूसरों के कामों को पूरा करता है वही साधू कहाता है। हवा अपने पूरे वेग से बाग के वृक्षों को कंपाती है। योगी अत्यन्त कठिनता से मोक्ष प्राप्त करते हैं। सीता ने राम के साथ पुष्प वाटिका से फूल चुने। राम ने सीता को हनुमान की सहायता से ढूंढा। वह बनिया बहुत कंजूस है केवल धन एकत्रित करता है। क्या सुन रहे हो अपना भाव ठीक शब्दों में प्रकट करो।

अभ्यास ५८

रुधादिगण (Roots of the 7th class)

१. रुधादिगण में धातुओं के आगे न-न् (श्नम्) विकरण आता है किन्तु यह विकरण धातु के अन्तिम व्यन्जन से पहले लगता है। छिद् (काटना) को छिनद् हो जाता है। वर्तमानकाल में रूप निम्न प्रकार से होंगे।

प्र पु०	छिनत्ति	छितः	छिन्दन्ति
म. पु०	छिनत्सि	छित्थः	छित्थ
उ. पु०	छिनद्मि	छिद्वः	छिद्मः

२. रुधादिगण की धातुएँ

रुध्	(उभय०)	रोकना	छिद्	(उभय०)	काटना
भुज्	(पर०)	भोगना	भिद्	,,	फोड़ना
भुज्	(आत्मा०)	खाना	भञ्ज्	(पर०)	तोड़ना
युज्	(उ)	जोड़ना	इन्ध्	,,	जलाना
नि-युज्	,,	लगाना	हिंस्	,,	मारना
खिद्	(आत्म)	दुःखी होना	पिष्	,,	पीसना

वाक्य

तुम मुझे नदी में नहाने से क्यों रोकते हो ? राम ने सीता को बन जाने से रोका किन्तु उसने न माना। बहुत से मनुष्य अपने सम्बन्धियो को मार कर राज्य सुख भोगते हैं। भिखारियों ने पेट

भर (उदरपूरणम) कर अन्न खाया। परमात्मा योग्य को योग्य से ही मिलाता है। वासुदेव चतुर है उसे पढ़ाने के काम पर लगाओ। मनुष्य छोटे से कुल्हाड़े की सहायता से बड़े बड़े वृक्ष काटते हैं। प्रायः मुसाफिर जङ्गलों में सूखे पत्तों की सहायता से आग जलाते हैं। मजदूर (श्रमजीविन्) पत्थरों को फोड़ता है और उस स्थान पर रखता है। वन में सिंह हिरणों को मारता है और अपना पेट भरता है। अपने भाइयों को लड़ने के लिए तैयार देख कर अर्जुन दुःखी हुआ। वह स्त्री गेहूँ (गोधूम) पीसती है।

अभ्यास ५६

तनादिगण (Roots of the 8th class)

१. तनादिगण में धातुओं के आगे 'उ' विकरण जोड़ा जाता है और इसलिये इस गण के रूप स्वादिगण से मिलते हैं। स्वादि-गण में नु लगता है।

२. तनादिगण में भी लट्, लङ् में सब पुरुषों के एकवचन और लोट् के एकवचन तथा उत्तम पुरुष के 'उ' को गुण होजाता है। 'कृ' (करना) धातु को ऊपर निर्दिष्ट स्थानों में 'कर' शेष स्थलों 'कुर' हो जाता है। दोनों धातुओं के रूप नीचे लिखे जाते हैं।

❀ इन धातुओं के अनुस्वार का लोप हो जाता है और उसके बाद विकरण लगता है।

तन् (फैलाना) वर्तमान

प्र. पु०	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
म. पु०	तनोषि	तनुथः	तनुथ
उ. पु०	तनोमि	तन्व	तन्मः

कृ (करना) वर्तमान (लट्)

प्र. पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म. पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ. पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

भूत (लङ्)

प्र. पु०	अकरोत्	अकुरुतम्	अकुर्वन्
म. पु०	अकरोः	अकुरुताम्	अकुरुत
उ. पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

३. कृ धातु के रूप विद्यार्थियों को भली प्रकार कण्ठस्थ कर लेने चाहियें। नीचे वाक्यों में परस्मैपद के रूपों का प्रयोग करना चाहिये। जैसे कृ, तन् उभयपदी हैं।

वाक्य

अच्छे कार्यों द्वारा राजा अपना यश चारों दिशाओं में फैलाता है (तन्)। कवीन्द्र रवीन्द्र का यश सारे संसार में फैल गया। सज्जन अपना कर्तव्य पालन करते हैं (कृ)। सन्यासी बन में रहना स्वीकार करते हैं (अङ्गी+कृ)। अन्धे धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा 'युद्ध में मेरे लड़कों और पाण्डवों ने क्या किया (कृ)। प्रजा राजा का स्वागत करती है (सत् कृ)।

वह दुष्ट अपने पूज्य माता-पिता का अपमान करता है (तिरस्+कृ)। धनिक धन और अन्न से गरीबों का उपकार करते हैं (उप+कृ)। दुष्ट मनुष्य सदा साधुओं का बुरा करते हैं (अप+कृ)। हेडमास्टर ने स्कूल के कई विद्यार्थियों को इनाम दिये (पुरस्+कृ)। राजा सेना की सहायता से शत्रु को वश में करता है (वशी+कृ)। पश्चिम के वैज्ञानिक अनेक नई चीज़ों की खोज कर रहे हैं (आविस्+कृ)।

अभ्यास ६०

क्र्यादिगण (Roots of the 9th class)

१. क्र्यादिगण का विकरण चिन्ह ना (श्ना) है किन्तु लट् और लङ् के सब पुरुषों के एकवचन तथा लोट् के प्रथम पुरुष एकवचन और उत्तमपुरुष में ही यह 'ना' रहता है, शेष व्यञ्जनादि प्रत्ययों के योग में 'नी' और स्वरादि प्रत्ययों के योग में 'न्' हो जाता है।

ज्ञा (जा) लट्

प्र. पु०	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म. पु०	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ. पु०	जानामि	जानीवः	जानीमः

१. व्यञ्जनान्त परस्मैपदी धातुओं के लोट् लकार, मध्यमपुरुष एकवचन का रूप, धातु के अन्त में आन लगाने से बनता है।

(मुष् चुराना)=मुषाण

३. ग्रह (लेना) तथा ज्ञा (जानना) को क्रम से गृह और जा आदेश हो जाते हैं।

४. क्रयादिगणी धातुएं

क्री	खरीदना	ग्रन्थ्	गूंथना
ग्रह	लेना	बन्ध्	बांधना
मुष्	चुराना	मन्थ्	मथना
ज्ञा	जानना	स्तम्भ्	रोकना

वाक्य

हरि का पिता पैसे (पणकम्) देकर पुस्तक खरीदता है। हाथी बड़ा प्रसन्न होकर सूंड से (शुण्ड) ईख (इक्षुदण्ड) लेता है। दोनों हाथों से जल ग्रहण करो। हम बाग से फल चुराते हैं। और माली हमें रोकता है। एक बहिन फूल बीनती है, शेष दोनों हार गूंथती हैं। राक्षसों ने हनुमान को रस्सियों से (रज्जु) से बांध लिया। देवताओं और राक्षसों ने अमृत प्राप्ति के लिये समुद्र को मथा। वह दुकान (विपणी) पर कपड़े बेचता है (वि + क्री)। गुरु के समीप जाकर शिष्य पुस्तक लेता है (उप + ग्रह)। अर्जुन ने युद्ध में कर्ण को मारने की प्रतिज्ञा की (प्रति+ज्ञा)। कृष्ण भाई को फल देता है और बदले में पुस्तक लेता है (प्रति + ग्रह)। हरिदास ने कलकत्ते जाकर बहुत धन इकट्ठा किया (सम+ग्रह)।

\+ इन धातुओं के अनुस्वार का लोप हो जाता है।

अभ्यास ६१

विद्यालय

पाठशाला का घंटा बज गया[1], अब हम पढ़ने के लिए जाते हैं। सब बालक पहुँच कर पहले मैदान में खड़े होते हैं। वहां पर एकत्रित होकर सब मिलकर[2] प्रार्थना करते हैं। स्कूल में पांच सौ से अधिक बालक हैं और १८[3] अध्यापक हैं। सब अध्यापकों के ऊपर एक अध्यापक है जिसे मुख्याध्यापक कहते हैं। विद्यालय में दस श्रेणियां हैं। बालकों को अनेक विषय पढ़ाये जाते हैं[4]। अङ्गरेजी[5], गणित, साइन्स[6], भूगोल, इतिहास आदि विषय पढ़ाने के लिये अलग-अलग अध्यापक हैं। दोपहर को आध घण्टे की छुट्टी[7] होती है। उस समय बालक कुछ खाते हैं। बहुत से केवल खेलते हैं। सांयकाल को पाठशाला से छुट्टी पाकर अपने घर आते हैं। थोड़ी देर तक आराम करके फिर स्कूल के खेल के मैदान में जाते हैं। वहां भिन्न २ प्रकार के खेल और व्यायाम आदि से अपने स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं। विद्यार्थियों और अध्यापकों के सुभीते के लिये[8] विद्यालय में एक पुस्तकालय और अखबार[9] पढ़ने का स्थान भी है। अखबार पढ़ने से बालकों की जानकारी[10] बढ़ती है और उनमें पढ़ने का चाव[11] उत्पन्न होता है। जिन बालको के

---

१. घण्टा नादः जातः, २. मिलित्वा, ३. अष्टादश, ४. पाठ्यन्ते ५. आंग्लभाषा, ६. विज्ञानम्, ७. अवकाश, ८. सुविधायें ९. समाचार पत्रम, १०. परिचितिः, ज्ञानम् ११. रुचिः,

माता-पिता दूर देश में रहते हैं, उनके रहने के लिए एक बोर्डिङ्ग-हाउस[१२] बना है। बालकों के खाने और रहने का प्रबन्ध एक अध्यापक करता है। हम अपने विद्यालय का आदर करते हैं।

अभ्यास ६२

जीविका

आज कल[१] जीविका का प्रश्न बड़ा कठिन है। पढ़े-लिखे[२] मनुष्यों में बेरोज़गारी[३] बीमारी[४] की तरह फैल रही है। इसका सब से बड़ा कारण एक ही है। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति नौकरी[५] चाहता है। नौकरियों की संख्या थोड़ी है और नौकरी करने वालों की अधिक। ऐसी दशा में लोग अपने परिवार का पालन-पोषण नहीं कर सकते। जीवन से निराश होकर अनेक मनुष्य आत्महत्या[६] कर लेते हैं। यह मनुष्यों की भूल[७] है कि वे शिक्षा को पेट भरने[८] का साधन समझने लगे हैं। शिक्षा का उद्देश्य तो मनुष्यों को ऊँचा बनाना है। शिक्षा से मनुष्य का आचार और उसके विचार ठीक बनते हैं। आजकल हमारे देश के नेता और सरकारी[९] अफ़सर[१०] इस बेरोज़गारी को दूर करने का उपाय सोच रहे हैं। बहुत से

---

१२. छात्रालयः

१. अद्यत्वे २. शिक्षित ३. जीविका + अभावः ४. व्याधिः ५. वर्तनम् ६. आत्मघात ७. भ्रान्तिः ८. उदरपोषणम् ९. राजकीय १० कर्मचारिणः।

लोगों की यह राय[11] है कि देश में कला और उद्योग के कारखाने[12] खोलने चाहियें। लोग दस्तकारी[13] की तरफ ध्यान नहीं देते। दस्तकारी को भी जीविका का साधन बनाया जा सकता है। इसमें लोगों को सफलता भी हुई है। जो कुछ भी हो भारतवासियों को इस कठिनता को दूर करना ही होगा।

अभ्यास ६३

श्रवण

प्राचीन काल में राजा दशरथ अयोध्या में राज्य[1] करते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न थी। राजा अत्यन्त[2] दानी, न्यायी और उपकारी था। किन्तु सन्तान न होने से[3] दशरथ कुछ[4] दुःखित रहता था। एक बार[5] प्रजा की दशा जानने के लिये राजा नगरी के समीप ही तपोवनों में गये। हिंसक[6] जन्तुओं को मारने की इच्छा[7] से वे धनुष-तीर लेकर एक झील[8] के किनारे बैठ गये[9]। उसी समय श्रवण नाम का तपस्वी बालक कमण्डलु लेकर जल भरने आया। श्रवण के माता पिता अन्धे थे। इसलिये वह उन दोनों को एक बेंहगी[10] में बैठा कर[11] तीर्थ-

---

११. सम्मतिः १२. यन्त्रालयः १३. हस्तकला

१. शास् २ प० २. अतीव ३. सन्ततिः + अभावे ४. किञ्चित् ५. एकदा ६. हिंस्र ७. जिघांसा ८. कासारः ६ उप-विश् १०. विहंगिका ११. उपावेश्य।

यात्रा कराता फिरता था। वह लौट कर उसी दिन उस जङ्गल में आया था। माता-पिता को प्यासा जान कर श्रवण उनके लिये जल भरने आया। रात का समय था और चारों ओर अन्धेरा था। जल भरने का शब्द हुआ, राजा ने उसे जङ्गली[१२] जानवर का शब्द समझा[१३]। कानों तक[१४] धनुष खींच कर[१५] बाण चला दिया। बाण के लगते ही एक चीख[१६] मार कर श्रवण ज़मीन पर गिर पड़ा। मनुष्य की आवाज सुन कर राजा हक्का बक्का[१७] रह गया और उसी ओर दौड़ा।

अभ्यास ६४

श्रवण (Contd.)

समीप जाकर राजा ने देखा कि एक ऋषि बालक खून[१] से लथ पथ[२] पड़ा है। दशरथ के हाथ का स्पर्श होते ही उसने आँखें खोल दी[३]। राजा ने बड़े विनीत शब्दों में अपना अपराध स्वीकार[४] किया। सारे जीवन-भर उसके माता पिता की सेवा करने की प्रतिज्ञा की[५]। श्रवण ने कहा—राजन्! जिस तरह मैं अपने माता-पिता को प्यार करता था उसी तरह वे दोनों भी मुझे अपनी आँख

---

१२. वन्य १३. अव + गम् १. प० १४. आकर्णम् १५. आकृष्य १६. आक्राशः १७. स्तब्धः

१. लोहित, रुधिर, रक्त। २. क्लिन्न, स्नात, रञ्जित। ३. वि + वृ । ४. अङ्गी + कृ, स्वी + कृ । ५. प्रति—श्र

का तारा[6] समझते हैं। और मेरे बिना वे किसके मुख को चूमकर[7] आनन्दित होंगे। तुमने अंधों की लाठी[8] को तोड़ कर बड़ा अन्याय किया है। जल्द जाओ कहीं[9] वे तुम्हे शाप न दे डालें। राजा काँपता हुआ उन दोनों के पास पहुँचा और पानी पीने के लिए दिया। वे बोले श्रवण, तू चुप[10] क्यों है बोलता क्यों नहीं? जब तक तू जल न पी लेगा हम भी न पीयेंगे। लाचार[11] होकर राजा को अपना भेद प्रकट करना पड़ा। पुत्र के हत्यारे[12] को सामने खड़ा जान कर वे बहुत रोये। राजा के दिलासा[13] देने पर उन्होंने कहा "विशाल खारा[14] समुद्र एक मीठे कुएं के बराबर नहीं हो सकता"। उनके विलाप को सुनकर पत्थर भी पिघल[15] गये। बहुत दुःखितऔर कुपित होकर उन्होंने शाप दिया[16]। जिस पुत्र के वियोग से हम मर रहे हैं तेरी भी मृत्यु ऐसी होगी। यह कह कर दोनों ने अपने प्राणों को छोड़ दिया।

अभ्यास ६५

नल-दमयन्ती

एक बार निषध देश का राजा नल अपने बाग में गया। बाग में ही एक सुन्दर क्रीड़ा सरोवर था उस तालाब में अनेक

---

६. कनीनिका। ७. चुम्बित्वा। ८ लगुड। ९. कदाचित्। १०. मीनम्। ११. विवश। १२ हन्तृ। १३. आश्वासन। १४ अक्षारः। १५ विद्रुत। १६ शप।

सुवर्ण के पंखों[१] वाले राजहंस खेल रहे थे। राजा ने इतने सुन्दर सोने[२] के पंख कभी नहीं देखे थे। उसने चुपचाप[३] जाल फेंक[४] कर एक हंस को पकड़[५] लिया। बाकी साथी[६] चिल्लाते हुए आकाश में उड़ गये[७]। राजा को अकेला[८] देख कर उस हंस ने मनुष्यों की आवाज में कहा—हे नैषध। मुझे छोड़ दो, मेरे बिना मेरी वृद्धा माता बहुत रोयेगी। छोटे-छोटे बच्चे जब मुझे न देखेंगे तो कितने दुःखी होंगे। बच्चों को दुःखी देख कर मेरी कोमल हँसी रोती हुई पागल हो जायगी। इस प्रकार तुम्हारे मनोरञ्जन से एक सुखी परिवार का नाश होगा। यदि तुम मुझे छोड़ दो तो मैं दमयन्ती से तुम्हारी प्रशंसा[१०] करूंगा। विदर्भ राज भीम की लड़की दमयन्ती सुन्दरता और गुणों में अद्वितीय है। देश-देश के राजकुमार उससे विवाह करना चाहते हैं। मेरे द्वारा तेरी प्रशंसा सुनकर वह किसी और से विवाह न करेगी। इस शर्त[११] पर राजा ने हंस को छोड़ दिया। उड़ता हुआ हंस विदर्भ देश के राजा के बाग में गया। अवसर पाकर[१२] दमयन्ती को अकेले[१३] में उसने नल का संदेश कहा। उसी के परिणामस्वरूप नल और दमयन्मी का विवाह हुआ।

---

१. पक्ष, छद। २. सुवर्ण, जातरूप। ३. निभृतम। ४. पाशान्। ५. धृतवान। ६. सहचराः। ७. उद्+गम्. प० ८. एकाकिन्। ९. उन्मत्ता। १० प्र+शंस्, श्लाघ्। ११. पणः। १२. प्राप्य, लब्ध्या। १३ रहः, एकान्तम्।

अभ्यास ६६

देवव्रत

हस्तिनापुर के राजा शान्तनु एक मल्लाह[१] की कन्या के रूप पर मुग्ध हो गये[२]। उन्होंने कन्या के पिता से विवाह के लिये कहा। धीवर ने हाथ जोड़[३] कर कहा—'राजन मैं सहर्ष तैयार[४] हूँ। किन्तु आपको एक प्रतिज्ञा करनी होगी। आपके बाद मेरी कन्या से उत्पन्न पुत्र ही राज्य का अधिकारी होगा। आपके सबसे बड़े पुत्र देवव्रत को राज्य नही मिलेगा। सन्तनु देवव्रत को बहुत प्यार करते थे और उसके गुणों पर रीझ[५] रहे थे। उन्होंने उस अनुचित प्रस्ताव को नहीं माना और घर लौट आये। उस दिन से राजा उदास[६] रहने लगे। राज-काज में उनका चित्त नहीं लगता था।[७] धीरे-धीरे मन्त्रियों द्वारा देवव्रत को भी इस भेद का पता मिला। वह मल्लाह के घर गया। उसने सब बिरादरी वालों[८] को एकत्रित[९] कर सब के सामने पिता से कन्या के विवाह की शर्त पूछी। धीवर डरते-डरते बोला यदि मेरे नाती[१०] को राजगद्दी मिले तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। देवव्रत ने उस प्रस्ताव को सब के सामने मान लिया। किन्तु फिर भी उस धीवर का डर[११] दूर न हुआ। उसने पूछा 'राजकुमार! तुम्हारे पुत्र बलवान होंगे और

---

१. कैवर्तः २. मुह, ४. प० ३. साञ्जलि; अञ्जलि कृत्वा, ४. प्रस्तुतः ५. मुग्ध ६. खिन्न दून ७. प्र+वृत् ८. ज्ञातिः ९. एकत्रीकृत्य १०. नप्तृ ११ भीतिः शंका।

मेरे नाती कमजोर। यदि क्षत्रिय पुत्रों ने जबर्दस्ती[१२] उन्हें निकाल दिया तो मैं क्या करूंगा ?' यह सुन कर देवव्रत ने दोनों भुजा उठाकर[१३] प्रतिज्ञा की 'मैं जन्म पर्यन्त[१४] विवाह ही नहीं करूंगा, फिर सन्तान कैसे होगी'। इसी भीषण प्रतिज्ञा के कारण देवव्रत का भीष्म नाम पड़ा।

अभ्यास ६७

पाण्डव

पाँचो पाँडव जूए[१] के खेल[२] में दुर्योधन द्वारा हरा दिये[३] गये। उसके बाद उन्हें बारह वर्ष के बनवास और एक वर्ष के अज्ञात वास के लिए वन में भेज दिया[४] गया। वन में दुर्योधन के द्वारा उन्हें अनेक कष्ट दिये गये। उन्हें द्रोपदी और माता कुन्ती सहित लाख के घर[५] में जलाने का प्रयन्त किया गया। किन्तु कृष्ण की सहायता तथा अपनी बुद्धि से पाण्डवों ने इन विपत्तियों को पार किया[६]। अज्ञातवास के समय उनसे विराट राजा की नौकरी की गई। जैसे-तैसे[७] अपने धैर्य-बल के द्वारा उन्होंने यह समय समाप्त किया। फिर कृष्ण के द्वारा जब पाण्डवों के लिए राज्य का आधा[८] भाग माँगा गया, तब दुर्योधन ने कहा। कृष्ण ! युद्ध के बिना सूई की नोक के बराबर

---

१२. प्रधर्ष्य, बलपूर्वकम् १३. उत्तानौ कृत्वा १४. आजन्म।

१. द्यूत 2. क्रीड़ा ३. पराजिताः ४. प्रेषितः ५. लाक्षागृह, जातुगृह ६. निस्तीर्णवन्तः ७. यथाकथञ्चित् ८. अर्धः।

भूमि[9] भी मुझसे न दी जायगी। दुर्योधन को बार-बार[10] समझाया गया किन्तु उससे हठ[11] नहीं छोड़ा गया। अन्त में धर्म और अधर्म के फैसले[12] के लिये आपस[13] में लड़ाई लड़ी गई। उसी युद्ध को महाभारत के नाम से पुकारा जाता है। इस युद्ध में पाण्डवों द्वारा विजय प्राप्त की गई।

अभ्यास ६८

बहिरा[1] मित्र

एक नगर में कोई बहिरा रहता था। उस बहिरे को किसी ने समाचार सुनाया[2] कि उसका मित्र बहुत बीमार है। मित्र की बीमारी का हाल[3] सुनकर उसने वहाँ जाना निश्चय किया। उसने सोचा कि जाने से पहले कुछ प्रश्न और उत्तर सोच लेने चाहियें। खाट[4] पर मित्र को लेटे हुए देख कर पूछूँगा कैसी तबियत है ? वह अवश्य कहेगा ठीक है। उसके ऐसा कहने पर मैं कहूंगा परमात्मा की कृपा से ऐसी रहे। फिर उससे दूसरा प्रश्न करूंगा 'किस की दवाई[6] खा रहे हो ! वह किसी वैद्य[7] का नाम अवश्य लेगा। मैं कहूँगा नगर में वह सबसे अच्छा हकीम है। फिर पूछूंगा कि कौन सी दवाई का सेवन कर रहे हो। उसके नाम बताने

---

९. सूच्यग्रम् १०. वारंवारम्, बहुशः ११. निबन्धम, आग्रहः १२. निश्चयः; १३. परस्परम्।

१. बधिरः २. श्रावित ३. समाचारम् ४ पर्यङ्कः; खट्वा ५ अपि स्वस्थः असि ६ औषधम् अगदमम् भेषज; ७. वैद्यः, चिकित्सकः

पर मैं कहूंगा कि इस दवाई का सेवन अवश्य करते रहो। ऐसा सोच कर वह बहिरा मित्र के घर पहुंचा और पहिला प्रश्न किया। रोगी ने उत्तर दिया, "बुखार[८] बहुत है।" बहिरे ने कहा परमात्मा की कृपा से ऐसा ही रहे। दूसरे प्रश्न के उत्तर में रोगी ने कहा मेरा वैद्य यमराज है। बहिरे ने कहा—यह सबसे अच्छा वैद्य है। रोगी और भी चिढ़[९] गया। तीसरे प्रश्न के उत्तर में रोगी ने कहा मेरी औषध खाक[१०] है। ज्योंही बहिरे ने कहा यह सबसे अच्छी[११] है, रोगी ने उसे धक्के[१२] देकर बाहर निकलवा[१३] दिया।

अभ्यास ६६

वाल्मीकि

कवियों के मधुर वचन सुन कर सब प्रसन्न हो जाते हैं। कविता की धारा[१] में स्नान[२] कर मनुष्य को नया[३] जीवन मिलता है। कविता ही एक ऐसी वस्तु है जो हँसतों[४] को रुला देती है और रोतों को हंसा देती है। हमारे देश में अनेक महाकवि हुए हैं जिनके नाम अमर हैं। किन्तु तुम्हें यह मालूम नहीं होगा कि सबसे पहले कविता किसने बनाई ? तुमको आज कविता प्रारम्भ होने की घटना[५] बताते हैं; तमसा नदी के किनारे एक शांत स्थान में वाल्मीकि तप[६] कर रहे थे। कलरव करते हुए पक्षियों से परिपूर्ण

---

८. ज्वर, संतापः ६. कुपितः १०. भस्मन् ११. यदा १२. अर्धचन्द्रम, गलहस्तिका १३. निष्कासितः

१. प्रवाह २. नि + मज्ज ३. नूतन ४. विहसतः ५. वृत्त ६. तपः

वह स्थान अत्यन्त रमणीय था। गाते हुए पक्षियों के बच्चों[७] और खेलते हुए हरिणों के बच्चों से उस स्थान की शोभा और भी[८] बढ़ रही थी। किनारे पर एक हंस का जोड़ा[१०] प्रेम क्रीड़ा[११] कर रहा था। इतने में एक शिकारी[१२] चुप चाप वहां आया। आनन्द से खेलते हुए हंसों के जोड़े को देख कर उसकी हिंसा वृत्ति जाग उठी[१३]। कान तक धनुष खींचकर उसने एक पक्षी को मार दिया। वह शान्त तट और सुन्दर वन चीखते हुए पशु-पक्षियों की आवाज से भर गये[१४]। एक पक्षी तो फौरन[१५] ही मर गया। दूसरे ने रोते-रोते, बिलाप करते-करते, उसके वियोग में प्राण त्याग दिये। खून की धारा से नहीं बल्कि[१६] क्रोध से तमसा का जल भी लाल हो गया।

अभ्यास ७०

वाल्मीकि (Contd.)

इस भयङ्कर दृश्य को देखकर[१] वाल्मीक विचलित[२] हो गये। शान्त सागर में क्रोध की लहरें[३] उठने लगीं[४]। उनकी आंखें जलते हुए अङ्गारें[५] के समान लाल हो गईं। होठ[६] हिलने लगे

---

७ शावकः ८ अधिकम् ६ वृद्ध १० दम्पती ११ प्रणय केलि १२ व्याधः, आखेटकः १३ प्रबुद्धा १४ पूर्ण पूरितः १५ यत्क्षणम् तत्कालम्, सद्यः १६ प्रत्युत।

१ वीक्ष्य २ अस्थिरः, क्षुब्धः ३ तरङ्ग, ऊर्मि ४ उत् + स्था ५ अङ्गारः ६ ओष्ठ, दन्तच्छदः।

और सारा शरीर केले[७] के पत्ते[८] की तरह काँपने लगा। अनायास ही उनके मुख से कविता निकली[९]। दुःखित मन से ऋषि ने शाप दिया। हे शिकारी! तुझे आगे जाने वाले[१०] समय में कभी भी आदर प्राप्त न हो। क्योंकि तूने प्रेम से मोहित हँसों के जोड़े[११] में से एक को मार दिया है। ऋषि के मुख से कविता निकलते ही संसार में शोर[१२] मच गया। स्वयं ब्रह्मा ने आकर वाल्मीकि की प्रशंसा की। इसलिये वाल्मीकि को आदि कवि भी कहा जाता है। वाल्मीकि ने ही कविता की बड़ी[१३] पुस्तक[१४] रामायण बनाई, इस रामायण की कथा को सुनकर भारतवर्ष के स्त्री-पुरुष धन्य धन्य चिल्ला उठे। यह कविता संस्कृत भाषा में बनाई गई, किन्तु कुछ समय बाद संस्कृत का प्रचार कम[१५] हो गया। इसलिये तुलसीदास ने सत्रहवीं[१६] शताब्दी में हिन्दी भाषा में रामायण लिखी। यह रामायण वाल्मीकि की कथा के आधार पर ही बनाई गई है। हमें अपने इन दोनों कवियों का आदर करना चाहिये।

अभ्यास ७१

प्रताप-प्रतिज्ञा

ऐसा कौनसा अभागा[१] मनुष्य होगा जो राणा प्रताप का नाम

---

७. कदली ८. पत्र-पर्ण ९. निस्सृता १०. आगामिन् ११. मिथुनम् १२. कोलाहलः १३. वृहत् १४. महा काव्यम् १५. स्वल्पः १६. सप्तदश।

१. भाग्यहीनः

न जानता हो। प्रताप प्रसिद्ध सिसोदिया कुल का सूर्यवंशी क्षत्रीय थे। क्षत्रियों में उनके पूर्वजों[2] का बड़ा मान[3] था। अपने देश को पराधीन[4] देखकर उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ। उन्होंने प्रतिज्ञा की, जबतक[5] जन्मभूमि को स्वधीन न कर लूंगा, पलंग[6] पर नहीं सोऊंगा। महलों[7] को छोड़कर जंगल में रहूंगा। स्वर्ण के वर्तनों[8] में नहीं किन्तु पत्तों के दोनों[9] में भोजन करूंगा। रेशमी[10] वस्त्रों[11] का त्याग कर वल्कल पहिनूंगा[12]। कितने भी कष्ट क्यों न हों, एक बार चित्तौड़ को स्वाधीन बनाऊंगा। राणा की वीरता और अभिमान से भरी प्रतिज्ञा अन्य क्षत्रियों ने सुनी। वे चिल्ला उठे, हम प्राण रहते[13] राणा का साथ न छोड़ेंगे। उनके इशारे[14] पर जान कुरबान कर देंगे। जंगल में रहने वाले भीलों ने भी प्रताप को नेता माना। उन्होंने भी प्रताप की और उनके परिवार की रक्षा की। अपने शौर्य और देश-भक्ति के कारण प्रताप ने विजय प्राप्त की। धन्य प्रताप जब तक आकाश में ग्रह नक्षत्र हैं, जब तक भारत में गङ्गा-यमुना बहती[16] हैं, तब तक[17] तुम्हारा नाम अमर रहेगा।

---

२. पूर्वपुरुष-पूर्वज ३. बहुमान ४. परायत्त ५. यावत् ६. पर्यंकः ७. प्रासाद ८. पात्रम् ९. पुटकः १०. कौशेयः ११. वासस्, परिधानम् १२. परि + धृ १३. यावज्जीवन १४. संकेत १५. वनवासिनः १६. प्र + वह् १७. तावत्।

अभ्यास ७२

अकाल[1]

सुना जाता है इस वर्ष भी वर्षा[1] न होगी। वर्षा[2] न होने से भयङ्कर अकाल पड़ेगा। खेती[3] पैदा[4] न होगी और किसानों[5] का सर्वनाश होगा। लाखों[6] आदमी, बच्चे, बूढ़े जवान भूखों मरेंगे। जानवरों को खाने को और चरने को घास[7] न मिलेगी। इसलिये जानवर भी मृत्यु की गोद[8] में सोवेंगे। घी[9] दूध और अनाज[10] ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगा। चारों तरफ[11] हाहाकार मच जायगा। स्त्री से पति, पिता से पुत्र और भाई से भाई पृथक हो जायगा। मनुष्य आपस में एक दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे। बलवान कमजोरों को सताकर[12] अपना पेट भरेंगे। किन्तु ऐसे ही समय दानी लोग दान देंगे। बहुत से श्रद्धालु अनाथों[13] और भूखों की सेवा करेंगे। जो विपत्ति में साथ दे वही सच्चा मित्र होता है। हम भी यथाशक्ति अपने भाइयों के दुःख दूर करेंगे अपने मुख का कौर[14] उन्हें खिलाकर[15] जीवन प्रदान करेंगे। कृष्ण! तुम भी कर्तव्य पालन कर अपना जीवन सफल करोगे। लोग तुम्हारा यश गायेंगे और हम तुम्हारी प्रशंसा सुनकर खुश होंगे।

---

१. दुर्भिक्षः, दुष्कालः २. वर्षाः (नित्य ब. व०) ३. शस्यम् ४. उत्+पद् ५. कृषकः ६. लक्षम् ७. तृणम् ८. अङ्क, जोड़ ९. घृतम् १०. धान्यम् ११. परितः, सर्वतः १२ संपीड्य १३. आश्रयहीनः १४. ग्रासः ४५. भोजयित्वा।

Appendix A

Proverbs

लोकोक्तियां

१. अचानक कोई काम न करना चाहिये, अज्ञान ही आपत्तियों का घर है। (बिना बिचारे जो करे सो पाछे पछताय)	सहसा विदधीत न क्रियाम् अविवेकः परमापदां पदम्।
२. अति का नित्य त्याग करना चाहिये।	अति सर्वत्र वर्जयेत्।
३. आलस्य ही मनुष्य का शरीर में रहने वाला बड़ा शत्रु है।	आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
४. आँखों के अन्धे को शीशे से क्या लाभ ?	लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्याति ?
५. उदार-हृदयों के लिये पृथ्वी ही कुटुम्ब है।	उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्
६. उपदेश मूर्खों को क्रोधित करता है शान्त नहीं (सीख वाको दीजिये जाको, सीख सुहाय)।	उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
७. कीचड़ को धोने की अपेक्षा उसका न छूना ही ठीक है।	प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।
८. खोटे खरे सुवर्ण की परख आग में होय।	हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा।

९. गुणियों में ही गुणों का मान है।	गुणाः गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति।
१०. चुप रहने से सब काम सिद्ध होते हैं।	मौनं सर्वार्थ साधनम्।
११. जननी और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर हैं।	जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
१२. ज़हर को ज़हर मारता है।	विषस्य विषमौषधम्।
१३. जितने मुंह उतनी बात।	नैकमुखो हि लोकः।
१४. जिनकी जैसी भावना वैसी उनकी सिद्धि (जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरति देखी तिन तैसी)	यादशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।
१५. जो अपनी वस्तु है वह पराई नहीं हो सकती।	यदस्मदीयं न हि तत् परेषाम्।
१६. दुष्ट महात्माओं के चरित्र से चिढ़ते हैं।	द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाश।
१७. दुष्ट से दुष्टता करनी चाहिये। (जैसे को तैसा)	शठे शाठ्यं समाचरेत्!
१८. दूध न देने वाली गाय गले में घन्टे लटकाने से नहीं बिक जाती।	विक्रीयन्ते न घण्टाभिर्गावः क्षीरविवर्जिताः।
१९. धन ही संसार में मनुष्य का साथी है।	अर्थो हि लोके पुरुषस्य बन्धुः।
२०. निर्बल से क्या मित्रता?	कृशे कस्यास्ति सौहृदम्?
२१. पापों की तो कथा भी बुरी।	कथापि खलु पापानामलमश्रेयसेयतः।

२२. प्रकाश और अन्धकार की क्या बराबरी ?	सामानाधिकरण्यं हि तेजस्तिमिरयोः कुतः ?
२३. बड़े बड़ों को ही दबाते हैं।	महान्महत्स्वेव करोति विक्रमम् ।
२४. बड़ों की संगति से मनुष्यों को क्या नहीं मिलता ?	सतसंगतिः कथय किं न करोति पुंसाम ?
२५. बुरे दिनों में आपत्तियां घिर कर आती हैं।	छिद्रेष्वर्थाः बहुलीभवन्ति।
२६. बूँद बूँद जल से घड़ा भर जाता है।	जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
२७. भूखा क्या नहीं करता।	बुभुक्षितः किं न करोति पापम् ?
२८. मन की पहुँच सब जगह है।	मनोरथानामगतिर्न विद्यते।
२९. महापुरुष स्वभाव से ही कम बोलते हैं।	महीयांसः प्रकृत्यामितभाषिणः
३०. मूर्ख मित्र से तो समझदार दुश्मन अच्छा।	पण्डितोऽपि वरं शत्रुर्न मूर्खो हितकारकः।
३१. योग्य का योग्य से ही मेल होना चाहिये।	चकास्ति योग्येन हि योग्य संगम।
३२. रथ के पहिये के घेरे समान अवस्था भी ऊपर-नीचे होती रहती है। (सब दिन होत न एक समान)	नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमि क्रमेण।
३३. रत्न स्वयं ढूँढ़ता नहीं ढूँढा जाता है।	न रत्नमन्विष्यति मृगयते हि तत्।
३४. लोभ ही पाप की जड़ है।	लोभः पापस्य कारणम्।

३५. विकार के कारणों के होने पर भी जो नहीं बिगड़ते वे धैर्य-वान पुरुष हैं।	विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः।
३६. विद्याहीन मनुष्य पशु के समान हैं।	विद्याविहीनः पशुः।
३७. वृक्ष-हीन देशमें अरण्ड को भी पेड़ ही समझा जाता है। (अन्धों में काणा सरदार)	निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते।
३८. शरीर ही धर्म का मुख्य साधन है।	शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम।
३९. सज्जन संपत्ति और विपत्ति में समान रहते हैं।	संपतौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता।
४०. सज्जन मेघ समान धन, जोड़े दान निमित्त।	आदानँ हि विसर्गाय सताँ वारिमुचिमिव।
४१. सत्य की जीत होती है झूठ की हार।	सत्यमेव विजयते नानृतम।
४२. सन्तोष ही मनुष्य का खजाना है।	सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम्।
४३. सब अपना उल्लू सीधा करते हैं।	सर्वः स्वार्थं समीहते।
४४. समय सब कुछ करा देता है।	समय एव करोति बलाबलम्।
४५. सर्वनाश के समय आधा छोड़ देना चाहिये।(सारा जाता देखिये आधा दीजिये बाँट)।	सर्वनाशे समुत्पन्नें अर्धं त्यजति पण्डितः।

४६. साँप को दूध पिलाना जहर बढ़ाना है।	पयः पानं भुजंगनां केवलं विषवर्धनम्।
४७. सेवा का काम बड़ा कठिन है।	सेवाधर्मः परमगहनः।
४८. हाथी के पैर में सबका पैर।	सर्वेपदा हस्तिपदे निमग्नाः
४६. हितकारी और मनोहर वचन सदा सुनने को नहीं मिलते।	हितं मनोहारी च दुर्लभं वचः

—✿✿✿—

Appendix B

GLOOSSARY OF WORDS

अकारादि क्रम से शब्द-सूची

अ

अकाल	—	दुष्कालः–दुर्भिक्षः ।
अकेला	—	एकाकी ।
अखबार	—	समाचार पत्रम् ।
अग्नि	—	हुतभुक्, अनल :
अचानक	—	अ. सहसा ।
अठारह	—	अष्टादश ।
अध्यापक	—	गुरुः, शिक्षकः ।
अनाज	—	धान्यम्, अन्नम् ।
अफ़सर	—	कर्मचारी ।
अब	—	अधुना ।
अभागा	—	भाग्यहीनः ।
अभिमान	—	दर्पः, अहंकारः, गर्वः ।
अस्थिर	—	चंचल ।
अस्थिरता	—	असारता ।
अंगारा	—	अङ्गारः ।

संकेत-चिन्ह (Abbreviations)

अ० अव्यय पु० पुल्लिग नपु० नपुंसकलिंग
स्त्री० स्त्रीलिंग वि० विशेषण

अंग्रेजी	—	आङ्गलभाषा ।
अंधेरा	—	नपुं० तमः; पु० अन्धकार ।
		आ
आकाश	—	नपुं० नभः गगनम्, वियत् ।
आग	—	अनल, पावकः ।
आज	—	अ० अद्य ।
आजकल	—	अ० सांप्रतम्,अद्यत्वे ।
आत्महत्या	—	आत्मघातः ।
आधा	—	अर्धः ।
आपत्ति	—	आपद्, विपद् ।
आपस में	—	अ० परस्परम्, मिथः, अन्योऽन्यम् ।
आभूषण	—	अलङ्कारः ।
आयु	—	नपु.० वयः, आयु स्त्री० अवस्था
आवाज	—	शब्दः, नादः ।
आंख	—	नपुं० चक्षुः, नयनम् ।
		इ
इच्छा	—	स्त्री० अभिरुचिः, अभिलाषा ।
इसप्रकार	—	अ० एवम् ।
इसलिए	—	अ० अतः, अतएव ।
		ई
ईश्वर	—	देवः, भगवान् ।
		उ
उदास	—	खिन्नः, दूनः ।
उपाय	—	स्त्री० रीतिः, प्रकारः पु०
		ऊ
ऊंट	—	उष्ट्रः, क्रमेलकः ।

ए

एक	—	एकः
एकबार	—	अ० एकदा
एकान्त	—	नपुं० रहः ।

औ

और	—	अ० च ।
औरत	—	नारी, स्त्री ।

क

कचहरी	—	पु० न्यायालयः, स्त्री० न्यायसभा ।
कड़वा	—	वि० कटुः ।
कर्त्ता	—	कर्त्ता
कपड़ा	—	नपु० वासः, परिधानम् ।
कब	—	अ० कदा
कम	—	स्वल्पम्, स्तोकम् ।
कमाना	—	अर्जनम् ।
करने की इच्छा	—	चिकीर्षा (कृ)
करने का इच्छुक	—	चिकीर्षुः (कृ)
कल	—	अ० Yesterday ह्यः ।
		Tomorrow श्वः ।
कल्याण	—	वि० श्रेयान् ।
कहना	—	कथनम्
कहानी	—	कथा० आख्यायिक ।
कहावत	—	स्त्री० किंवदन्ती, लोकोक्ति ।
कहां	—	अ० कुत्र
कहां से	—	अ० कुतः
कहीं	—	अ० कदाचित, कुत्रापि ।

काटना — दंशनम्।
काणा — काणः।
काम — नपुं० कर्म, कार्यम्।
स्त्री० कृतिः।
कामयाबी — सफलता।
काला — वि० कृष्णः, असितः।
कारखाना — यन्त्रालयः।
कारीगरी — कला।
किताब — नपुं० पुस्तकम्।
किनारा — नपुं० तीरम्, तटः।
किस प्रकार — अ० कथम्।
किसान — कृषकः, कृषीवलः।
कीर्ति — नपुं० यशः स्त्री, कीर्तिः।
कुआ — कूपः।
कुकर्म — नपुं० दुष्कृतम, दुष्कर्म।
कुछ — अ० किंचित्।
कुत्ता — श्वा, कुक्कुरः, सारमेयः।
कृपा — स्त्री० दया, अनुकम्पा, वि. प्रसाद।
केन्द्र — केन्द्रम्।
केला — कदली, रम्भा।
पत्ता-कदलीपत्रम्।
फल-कदलीफलम्।
केवल — अ० केवलम्।
कैसा — वि० कीदृक्।
कोमल — मृदुः, कोमलम्!
कौआ — काकः, वायसः।
कौर — ग्रासः।

ख

खट्टा --वि० अम्लम्।
खराबी —विकारः।
खाट —स्त्री० खटवा, पु० पर्यङ्क।
खाने की इच्छा—बुभुक्षा (भुज्)
खाने का इच्छुक--बुभुक्षुः (भुज्)
खारा —क्षारः।
खुशी —नपुं० सुखम् स्त्री० प्रसन्नता।
खून — नपु० रुधिरम्, रक्तम्, लोहितम्।
खेती — शस्यम्।
खेल — क्रीड़ा।

ग

गधा — गर्दभः रासभः।
गरीब — दरिद्रः।
गहरा —वि० गंभीरः, गंभीरः।
गङ्गा — भागीरथी, जान्हवी।
गंजा — खल्वाटः।
गढ़ — दुर्गम्।
गदर — विद्रोहः, उपद्रवः।
गदला —वि० आविलम्, मलिनम्।
गर्जन — मेघ, निर्घोषः, हाथीः, वृंहितम्।
गर्म — वि० उष्णः।
गर्मी — निदाघः, ग्रीष्मः।
गवाह —पु० साक्षी।
गवैय्या — गायकः, बन्दी।
गांव — ग्रामः।

गीत —स्त्री० गीतिका, नपुं० गानम्।
गुणी —पु० गुणवान्, गुणी।
गूंथना —वि० ग्रथनम्।
गेंद — कन्दुकम्।
गोद —क्रोडम्, अङ्कम्।
गोबर — गोमयम्।

घ

घटना — वृत्तान्त।
घटा — घटः।
घड़ी — घटिकायन्त्रम्।
घर — नपुं० गृहम् वेश्म, सद्म।
नपुं० गेह, गृहः,।
घायल — क्षतः।
घाव — व्रणम्।
घास — तृणम, शस्यम्।
घी — नपु० सर्पिः, घृतम्।
घोड़ा — अश्वः, तुरंगः, हयः।
घोड़ी — वडवा।

च

चकवा — चक्रवाकः।
चट्टान —स्त्री० शिला, पु० प्रस्तरः।
चतुर —वि० प्रवीणः, कुशलः।
चतुरता —वि० चातुर्यम्, कौशलम।
चन्द्रमा —वि० उज्ज्वलम्।
चमड़ा —नपुं० चर्म, स्त्री० त्वचा।

चाचा — पितृव्यः।
चाल —स्त्री० गतिः।
चाव — अभिरुचिः।
चावल — तण्डुलः।
चिड़िया — चटका।
चित्त —नपुं० चित्तम्, हृदयम्।
चिरंजीव —पु० आयुष्मान्।
चीख — आक्रोशः।
चीता — शार्दूलः।
चुप — अ० जोषम्, तूष्णीम्, मौनम।
चुपचाप — निभृतम्।
चूहा — आखुः, मूषिक।
चोर — चौरः, स्तेनः।
चोंच — स्त्री० चंचुः।

छ

छाती — नपुं० वक्षः।
छांह — छाया।
छींक — हिक्का।
छुटाई — लघिमा।
छुट्टी — अवकाशः, अनध्यायः।
छेद — विवरम्, छिद्रम्, बिलम्।
छोटा — लघुः, कनीयान्।

ज

जङ्गल — वनम्, अरण्यम्।
जङ्गली — वि० वन्यः।
जगह — स्थानम्।

जन्म	—	नपुं०	जन्म, स्त्री० उत्पत्तिः ।
जन्मभर	—		आजन्मम् ।
जब	—	अ०	यदा ।
जबतक	—	अ०	यावत् ।
जबर्दस्ती	—		प्रधर्ष्य, बलपूर्वकम् ।
जमीन	—	स्त्री०	भूमिः, पृथ्वी ।
जलना	—		दाहः ।
जलसा	—		उत्सवः ।
जल्दी	—		शीघ्रम, द्रुतम, त्वरितम्, सत्वरम् ।
जाति	—	स्त्री०	जातिः, पु० वर्णः ।
जान	—		प्राणः ।
जानकारी	—		परिचितिः, परिचयः ।
जामुन	—		जम्बूफलम् ।
जाल	—		पाशः ।
जीव	—	नपुं०	प्राणी ।
जीत	—		विजय ।
जीतने वाला	—		जेता, विजयी ।
जीवन	—		जीवनम्, आयुः ।
जूआ	—		द्यूतम् ।
जोड़ा	—		दम्पती, नपुं० युगलम्, मिथुनम ।

झ

झगड़ा	—	कलहः, कलिः ।
झंडा	—	केतनम् ।
झंडी	—	पताका ।
झरना	—	निर्झरः, प्रपातः ।
झाड़ू	—	संमार्जनी ।
झील	—	कासारः ।

झूला	—		दोला।
झोंपड़ी	—		उटजम्, स्त्री० कुटी।

ट

टहल	—		सेवा, परिचर्या।
टहलना	—		भ्रमणम, भ्रटनम।
टीका	—	स्त्री०	टिप्पणी, पु० तिलकः।
टुकड़ा	—		खण्डः, भागः।
टोप-पी	—		शिरस्त्राणम्।

ठ

ठंडा	—		शीतलः।
ठग	—		वञ्चकः।
ठीक	—	वि०	साधीयान्, सम्यक।
ठोडी	—		चिबुकः, हनुः।
ठोडि वाला	—		हनुमान् (नाम विशेष)

ड

डर	—	नपुं०	साध्वसम्, भयम, स्त्री० भीतिः।
डरपोक	—		कायरः, भीरुः।
डरावना	—		भयङ्करः, भयप्रदः।
डाढी-मूछ	—	नपुं०	श्मश्रुः।
डाह	—		ईर्ष्या, स्पर्धा।
डूबना	—		निमज्जनम्।
डोरी	—	स्त्री०	रज्जुः।

ढ

ढङ्ग	—	स्त्री०	नीतिः, पु० प्रकारः।
ढकना	—	वि०	आवरणम।

ढीला	—	वि०	शिथिलः।
ढेर	—	स्त्री० पु०	राशिः, पुंजः।

त

तक	—		पर्यन्तम्।
तकलीफ	—		दुःखम्, कष्टम्।
तकिया	—		उपधानम्।
तनख्वाह	—		वेतनम्।
तप	—	नपुं०	तपः।
तब	—	अ०	तदा।
तमगा	—		पदकम्।
तराजू	—	स्त्री०	तुला।
तरीका	—		रीतिः, नीतिः।
तर्क	—		युक्तिः।
तलवार	—	पु०	असिः, खड्गः।
तारा	—		तारकम्, नक्षत्रम्।
तारीफ	—		प्रशंसा, श्लाघा।
तालाब	—	नपुं०	सरः, स्त्री० दीर्घिका।
तीखा	—		तिक्तः।
तेज़	—	नपुं०	चण्डः, नपुं० तेजः, ज्योतिः।
तेल	—		तैलम्।
तोता	—		शुकः।

थ

थकावट	—	स्त्री०	श्रान्तिः, क्लान्तिः।
थोड़ा	—	वि०	स्तोकम्, अल्पम्।

द

दया	—		करुणा, कृपा।
दयालु	—		कारुणिकः, दयालु।
दयालुता	—		कारुण्यम्।
दरख्वास्त	—		प्रार्थना पत्रम्।
दरिद्र	—		निर्धनः।
दर्द	—	स्त्री०	पीड़ा, व्यथा।
दवा	—		औषधम्, अगदः।
दस्तकारी	—		हस्तकला।
दाँत	—		दन्तः।
दाता	—		दाता, दानशीलः।
दादा	—		पितामहः।
दादी	—		पितामही।
दायां	—	वि०	दक्षिणः।
दास	—		दासः, भृत्यः।
दिन	—		दिवसः, वासरः।
दिलासा	—		आश्वासनम्।
दीप	—		दीपकः।
दीवान	—		मन्त्री, सचिवः।
दुःख	—	पु०	क्लेशः, स्त्री० पीड़ा।
दुष्ट	—		शठः।
दूध	—	नपुं०	दुग्धम्, पयः।
दूर	—	वि०	दूरम्।
देव	—	स्त्री०	देवता, पु० अमरः, सुर०।
देवी	—		देवी, भगवती।
देश	—		जनपदः।
देह	—	नपुं०	शरीरम्, कायः।

दोना	—		पुटकः।
दोपहर	—		मध्यान्हः।
दोष	—		अपराधः।
दौलत	—		धनम्, ऐश्वर्यम्।

ध

धक्का	—	पु०	अर्धचन्द्रः, स्त्री०, गलहस्तिका।
धन	—	नपुं०	धनम्।
धनवाला	—	पु०	धनी, धनवान्।
धनी	—	पु०	वसुमान, धनाढ्यः।
धनुष	—	नपुं०	धनुः, पु० धन्वा।
धनुषधारी	—		धनुष्मान्, धानुष्कः।
धागा	—		सूत्रम्।
धारा	—		प्रवाहः।
धिक्कार	—	अ०	धिक्।
धीमा	—	वि०	मन्दः।
धीरज	—	स्त्री०	धृतिः, पु० धैर्यम्।
धीरे	—	अ०	शनैः।
धीवर	—		कैवर्तः, धीवरः।
धुंआ	—		धूम्रः, धूमः।
धूल	—	नपुं०	रजः, स्त्री० रेणुः।
धेवता	—		नाता।
धोखा	—		कपटः, दम्भः।
धोबी	—		रजकः।

न

नंगा	—		नग्नः।
नगर	—		पुरम्, नगरम।

नगरी	—		पुरी, नगरी।
नजदीक	—		समीपम्, पार्श्वम्।
नतीजा	—		परिणामः।
नदी	—	स्त्री०	नदी, सरित्।
नमक	—		लवणः।
नमूना	—		आदर्शः।
नया	—	वि०	नवम्, नवीनम्।
नश्वर	—		क्षयी, नाशवान्, भंगुरः।
नसीब	—	नपुं०	भाग्यम्, भागधेयम्, भाग्यः।
		स्त्री०	नियतिः।
नसीहत	—		उपदेशः।
नहीं	—	अ०	न।
नाई	—		नापितः।
नाक	—		नासा, नासिका।
नाखून	—		नखः, नखम्।
नाटक	—		नाटकम्।
नातेदार	—	पु०	सम्बन्धी।
नाम	—	नपुं०	अभिधानम्; नाम,
		स्त्री०	आख्या।
नाराज	—		क्रुद्धः, कुपितः।
नाश	—		नाशः, ध्वंसः।
निन्दा	—		अपवादः।
निकम्मा	—		निष्क्रियः।
नित्य	—	नपुं०	सततम्, नित्य ्।
निराला	—		अद्भुतम्।
नीच	—	वि०	क्षुद्रः, अधम।
नीचा	—	अ०	अधः।

नीला	—	वि०	नीलः।
नेता	—	पु०	नेता, मुखरः।
नौकर	—	पु०	भृत्यः, दासः, अनुजीवी।
नौकरानी	—		दासी।
नौकरी	—	नपुं०	वर्तनम्।

प

पंख	—		पक्षः।
पंडित	—		पण्डितः, सख्यावान्, बुधः।
पंडिता	—		विदुषी।
पछतावा	—		पश्चात्तापः।
पढ़ाई	—	पु०	पठनम्, अध्ययनम्।
पक्षी	—	पु०	खगः, विहगः, पक्षी।
पढ़ाने वाली	—		अध्यापिका।
पतझड़	—		शरद्।
पति	—		भर्त्ता, कान्तः।
पत्ता	—	नपुं०	पत्रम्; पर्णम्।
पत्थर	—		अश्मा, दृशद्, पाषाणः।
पत्नी	—		भार्या, गृहिणी।
परछांई	—		प्रतिच्छाया।
परसों	—	अ०	परश्वः।
परस्पर	—	अ०	मिथः।
पराधीन	—	पु०	परवान्, पराश्रयः।
पर्वत	—	पु०	गिरिः, पर्वतः।
पशु	—	पु०	श्वापदः, जन्तुः।
पहाड़	—	पु०	गिरि, भूभृत्।
पागल	—	वि०	उन्मत्तः।

पान	--		ताम्बूलम्।
पानी	—	पु०	जलम्, सलिलम्, पयः, अम्भः
		पु०	नेदीयान्।
पाप	—		कल्मषम्, पापम्।
पापी	—		पापीयान्।
पास	—		समीपं, निकटम्।
पिता	—		जनकः, पिता।
पीछे	—	अ०	पश्चात्, अनन्तरम्।
पीठ	—		पृष्ठभागः।
पीला	—		पीतः।
पुत्र	—		पुत्रः, सुतः तनयः।
पुत्री	—		कन्या, सुता।
पुल	—		सेतुः।
पुस्तक	—	नपुं०	ग्रन्थम्, पुस्तकम्।
पूँछ	—		लांगूलम्. पुच्छम्।
पूजा	—		अर्चना, सपर्या, आराधना।
पेट	—		उदरः, जठरः।
पेड़	—		वृक्षः, तरु।
पेशा	—		वृत्तिः, अध्यवसायः।
पैदल	—		पदातिः।
पैर	—		पादः, चरण।
पैसा	—		पणकः।
प्यारा	—		प्रियः।
प्यासा	—		तृषितः, पिपासुः।
प्रशंसा	—	स्त्री०	स्तुतिः, श्लाघा।
प्राण	—	नपुं०	जीवितम्, पु० प्राणः।

प्रिय	—	पु०	प्रेयान्।
प्रेम	—	नपुं०	प्रेम, स्त्री० प्रीतिः, रतिः।

फ

फकीर	—		भिक्षुकः, याचकः।
फर्ज़	—	वि०	कर्तव्य।
फल	—	नपुं०	फलम्, पु० परिणामः।
फिजूल	—	अ०	व्यर्थम्, मुधा।
फिर	—	अ०	पुनः, मुहुः।
फुरसत	—		अवकाशः।
फूट	—		कलहः।
फूल	—	नपुं०	पुष्पम्, कुसुमम्, सुमनम्।
फूल वाला	—	स्त्री०	स्रग्।
फैसला	—		निश्चयः।
फौज	—		सेना, नपुं० बलम् :
फौरन	—		तत्क्षणम्।

ब

बकरा	—		अजः।
बकरी	—		अजा।
बगला	—		बलाका।
बगीची	—		वाटिका।
बचपन	—		बाल्यम्।
बचपना	—		बालिश्ता।
बच्चा			शिशुः,...(जानवर तथा पक्षियों को) शावकः
बड़ा	—	पु०	ज्यायान् महान्।
बत्ती	—		वर्तिका।

बन्दर	—		वानरः, कपिः।
बरफ़	—		हिमम्।
बलवान	—		बलवान्, बली।
बल्कि	—	अ०	प्रत्युत।
बहरा	—		बधिरः।
बहिन	—	स्त्री०	भगनी, स्वसा।
बहुत	—	वि०	भूयः, अ० अतीव।
बाग	—		उद्यानम्।
बाघ	—		शार्दूलः, सिंहः।
बाजा	—		वाद्ययन्त्रम्।
बाट	—		बाण।
बाण	—		शरः।
बात	—		वार्ता
बादल	—		मेघः, जलदः, पयोमुक्।
बाधा	—		विध्यनम्।
बार-बार	—		बारंबरं मुहुः।
बाल	—		केशः, कचः।
बालक	—		बालः, बालकः।
बालों का भार	—		कबरी।
बावड़ी	—		वापी।
बाहिर	—	अ०	बहिर्।
बिजली	—		विद्युत्, दामिनी।
बिरादरी	—	स्त्री	ज्ञातः।
बिल्ली	—		मार्जारः। — बिडाल:
बीमारी	—		व्याधि।
बुखार	—		सतापः, ज्वरः।

बुढ़ापा	—		जरा।
बुद्धि	—	स्त्री०	प्रज्ञा, बुद्धिः
बुद्धिमान	—	पु०	बुद्धिमान्, बुधः मेधावी।
बुरा	—	वि०	अहितः, अपायः अप्रियः।
बेटी	—	स्त्री०	दुहिता।
बेल	—	,,	लता।
बेहंगी	—	,,	विहंगिका।
बैठने का स्थान	–		आसनम्।
बोझ	—		भारः
बोर्डिङ्ग	—		छात्रालयः।
बोलने वाला	—	पु०	वक्ता।
ब्राह्मचारी	—		ब्रह्मचारी।
ब्रह्म	—		वेधा, विधिः, ब्रह्मा।
ब्राह्मण	—		द्विजः, ब्राह्मणः

भ

भक्ति	—		श्रद्धा।
भजन			गानम्, स्तुतिः
भय	—	स्त्री०	भीतिः, नपुं०, भयम्।
भयङ्कर	—		भीषणः, चण्डः।
भयहरी	—		भयहरी, भयहर्ता।
भाई	—		भ्राता।
भाभी	—		भ्रातृजाया।
भिखारी	—		भिक्षुकः।
भी	—	अ०	अपि।
भीख	—		भिक्षा।
भीड़	—		जनसमूहः, संमर्दः।

भूख	—	क्षुधा।
भूल	—	प्रमादः, भ्रमः।
भेंट	—	उपहारः।
भेड़िया	—	वृकः।
भैंस	—	महिषी।
भोला	—	वि० सरल, सौम्यः।
भौंरा	—	अलिः, भ्रमरः।

म

मंजूरी	—	स्वीकृतिः।
मंत्री	—	सचिवः।
मकान	—	गृहम्।
मक्खी	—	मक्षिका।
मखौल	—	परिहास।
मखौलिया	—	विदूषक।
मगर	—	मकर।
मगर	—	अ० किन्तु, परम्।
मच्छर	—	मशकः।
मछली	—	मत्स्यः।
मजबूर	—	विवशः।
मजूर	—	श्रमजीवी।
मन	—	चित्तम्, हृदयम्, मनः।
मनुष्य	—	पुमान्, नरः।
मल्लाह	—	कैवर्तः, धीवरः।
मशहूर	—	प्रसिद्धः।
मंहगा	—	मूल्यवान्।
महल	—	प्रासादः।
महात्मा	—	मुनिः, साधु

महादेव	—		शम्भुः, शूली ।
महिमा	—		महिमा ।
माखन	—		नवनीतम् ।
माता	—		जननी, माता ।
माफी	—		क्षमा ।
मामा	—		मातुलः ।
मार्ग	—		पन्थाः, वर्त्म, मार्गम् ।
मालिक	—		स्वामी, प्रभु ।
माली	—		मालाकारः ।
मिट्टी	—		मृत्तिका ।
मित्र	—	नपु०	मित्रम् , पु० सुहृत्, सखा ।
मिलाप	—		संयोग ।
मीठा	—		मधुरः ।
मुख	—		आननम , मुखम् ।
मुर्दा	—		मृतकः, शवः ।
मूर्ख	—		अपण्डितः, मूर्खः ।
मूर्ति	—		प्रतिकृतिः ।
मूर्तिस्वरूप	—		मूर्तिमान्,
मेह	—		वर्षाः (ब. व)
मेहनत	—		श्रमः उद्यमः ।
मैना	—		सारिका।
मोर	—		मयूरः, शिखी ।
मौजूद	—	वि.	उपस्थित ।
मौत	—		मृत्युः ।

य

यक़ीन	—		विश्वासः ।
यज्ञ	—		यागः, मखः ।

यज्ञ-सामग्री	—	नपुं०	हविः।
यत्न	—		उपायः।
यश	—		कीर्तिः—
यशवाला	—		यशस्वी, यशस्वान्।
यहाँ	—	अ०	अत्र।
याद	—		स्मृतिः।
युवक	—		तरुणः।
यों	—	अ०	एवम्।
योगी	—		योगी, तपस्वी।

र

रंग	—		वर्णः, रागः।
रईस	—		धनी।
रक्षा	—		रक्षणम्।
रचना	—		कृतिः।
रथ	—		रथम्, स्यन्दनम्
रसोइंया	—		सूदः, पाचकः।
रहने का स्थान--			आश्रमः।
राक्षस	—		दैत्यः, राक्षसः।
राख	—	नपुं०	भस्म,विभूतिः।
राज	—		राज्यम।
राजा	—		नृपः, भूपतिः, नरपतिः।
रात	—		निशा, रजनी।
रानी	—		राज्ञी, महिषी।
राय	—	स्त्री०	सम्मतिः।
राह	—		मार्ग, स्त्री, प्रथा।
रिश्ता	—		सम्बन्धः।
रिश्वत	—		उत्कोचः

रुई	—	कार्पासकः।
रुकावट	—	विघ्नम्।
रेत	—	रेणुः, धूलिः।
रेल	—	धूम्रयानम।
रैयत	—	प्रजा।
रोजगार	—	जीविका।
रोज़	—	प्रतिदिनम्
रोटी	—	कपट्टिका।
रोशनी	—	प्रकाशः

ल

लङ्गड़ा	—	खञ्जः।
लंबा	—	दीर्घः।
लकड़ी	—	काष्टम्, इन्धनम्।
लगन	—	भक्तिः, श्रद्धा।
लड़की	—	कन्या, बाला।
लड़ाई	—	युद्धम्, रणम्।
लड्डू	—	मोदकम्।
लथपथ	—	क्लिन्नः, रञ्जितः।
ललकार	—	आह्वानम्।
लाख	—	१. लक्षम्, अयुतम २. जतुः, लाक्षा।
लाखघर	—	जतुगृहम्।
लाचार	—	विबशः।
लाज	—	संकोचः।
लाठी	—	लगुडः स्त्री० यष्टिका।
लात	—	पाद प्रहार।
लाल	—	अरुणः, रक्तः।

लुहार	—		अयस्कारः।
लोहा	—	नपुं०	अयः।

व

वंश	—		कुलम्।
वज़न	—		भारम।
वजीफा	—		छात्रवृत्तिः।
वस्त्र	—	नपुं०	वासः।
वहाँ	—	अ०	तत्र।
वा	—	अ०	अथवा।
वाक्पटु	—		वाग्मी।
वायु	—		वायुः, मरुत्।
विचार	—		विमर्शः।
विचित्र	—		अद्भुतम्।
विदा	—		प्रस्थानम्।
विद्यार्थी	—		विद्यार्थी, छात्रः।
विद्वान्	—		विद्वान्, पण्डितः।
विपत्ति	—	पु०	विपद्, नपु० कष्टम्।
विमान	—		वायुयानम्।
विलाप	—		रुदनम्, विलपनम्।
विवाह	—	पु०	उद्वाहः, विवाहः।
		नपु०	पाणिपीडनम्।
वीर	—		शूरः, वीरः।
वीरता	—		शौर्यम्, वीरत्वम।
वृक्ष	—		तरु, महीरुहः।
वृत्तान्त	—		घटना।
वृद्धि	—		विकासः।
वैद्य	—		भिषग्, चिकित्सकः।

वैरि	—		शत्रुः ।
वैसे	—	अ०	तथा ।
व्यर्थ	—	अ०	वृथा ।
व्यवहार	—		वृत्तिः ।
व्यापार	—		वाणिज्यम् ।
व्रत	—		उपवासः ।

श

शंका	—		सन्देहः ।
शक	—		संशयः ।
शराब	—		मदिरा ।
शर्त	—		पणः ।
शहजादा	—		राजपुत्रः, युवराजः ।
शहर	—		नगर ।
शान	—		आडम्बरम् ।
शायद	—	अ०	कदाचित्, संभवतः ।
शिकार	—		आखेट ।
शिकारी	—		व्याधः, आखेटकः ।
शीघ्र	—		त्वरितम्, द्रुतम् ।
शील	—		स्वभावः, प्रवृत्तिः ।
शेर	—		व्याघ्रः ।
शोर	—		कोलाहलः ।
शौक	—		व्यसनम्, रुचिः ।
श्रीमान	—		श्रीमान् ।
श्रेष्ठ कुलवाला	—		कुलीनः ।
श्वेत	—		सितः, धवलः ।

स

सन्तरी	—	द्वारपालः, प्रशास्तृ पुरुषः ।
संदल	—	चन्दनम् ।
संपत्ति	—	संपद् ।
संवत्	—	वर्षः, अब्दः ।
संसार	—	सृष्टिः, जगत् ।
संहार	—	विनाशः ।
सखा	—	मित्रम् ।
सखी	—	सहचरी ।
सख्त	—	कठोरः, दृढ़ ।
सच	—	सत्यम् ।
सजा	—	दण्डम् ।
सजावट	—	शोभा ।
सत्यवादी	—	सत्यवादी, सत्यवान् ।
सवेरा	—	प्रातः, प्रभातः ।
समय	—	कालः, अवकाशः ।
समाज	—	समुदायः, स्त्री० सभा ।
समीप	—	वि० नेदीयान् ।
सरकारी	—	राजकीयः ।
सहना	—	क्षमा ।
साथी	—	सहचरः ।
सायान्स	—	विज्ञानम् ।
सारा	—	वि० अखिलम्, समस्तम् ।
सिर	—	पु० मुर्ध्ना, नपु० शिरः ।
सींक	—	शलाका ।

सुगन्धित	—	सुरभिः ।
सुनने वाला	—	श्रोता ।
सुभिता	—	सुविधा ।
सुन्दर	—	रूपवान्, कान्तिमान् ।
सुपना	—	स्वप्नः ।
सूर्य	—	भानुः, रविः ।
सोना	—	सुवर्णः ।
स्कूल	—	पाठशाला, विद्यालयः ।
स्तुति	—	स्तुतिः, साम ।
स्त्री	—	पत्नी, प्रमदा ।
स्थान	—	प्रदेशः ।
स्नान	—	अभिषेकः नपु० स्नानम् ।
स्वस्थ	—	कुशली ।

ह

हठ	—	निर्बन्धः, आग्रहः ।
हत्यारा	—	हन्ता ।
हथियार	—	शस्त्रः ।
हवा	—	वायुः, वातः ।
हाथ	—	हस्तः, करः ।
हाथ जोड़	—	साञ्जलिः ।
हाथी	—	गजः, करिः ।
हार	—	१ पराजयः ।
		२ माला ।
हाल	—	वृत्तः, समाचारः ।
हिंसक	—	हिंस्रः ।

हिम्मत	—		साहसम् ।
ही	—	अ०	एव ।
हुकम	—		आदेशः ।
हृदय	—		चित्तम्, हृदयम् ।

Appendix C

Glossary of roots

अकारादिक्रम से धातु-सूची।

अ

अचम्भा करना — १ आ चर, आचरति।

आ

आरम्भ करना — १ आ रभ्, आरभते।

आशा करना — १ आ शंस आशंसते।

— २ आ शास्, आशासते।

आश्चर्य करना — १ वि स्मि, विस्मयते।

आश्रय लेना — १ आ श्रि, आश्रयति-ते।

इ

इच्छा करना — १० स्पृह, स्पृहयति-ते।

— ६ इष् इच्छति।

ई

ईर्ष्या करना — १ स्पर्ध, स्पर्धते।

उ

उठना — १ उत् स्था, उत्तिष्ठतिः।

उठाना — प्रेर, उत्थापयति।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

उड़ना	—	१ डि. डयते: उद् गम्, उद्गच्छति: ४ डी. उड्डीयते।
उतरना	—	१ अव तृ, अवतरति।
उत्पन्न होना	—	४ जन् (जा), जायते।
उदित होना	—	२ उद् इ, उदेति।
उपदेश देना	—	१ उप दिश, उपदिशति।

क

कँपाना	—	५ धु धुनोति-धुनुते।
कमज़ोर होना	—	४ कृश, कृश्यति !
कमाना	—	१ अर्ज्, अर्जति।
कहना	—	१ भाष भाषते, २. ख्या, ख्याति; १२ कथ, कथयति-ते।
काटना	—	६ कृत, कृन्तति; ७ छिद्, छिनत्ति—छिन्ते।
काट खाना	—	१ दंश—दशति।
कांपना	—	१ कम्प, वेप, कम्पते, वेपते।
क्रुद्ध होना	—	४ क्षुभ्, क्षुभ्यति।

ख

खड़े होना	—	१ स्था, तिष्ठति; अनु—(पूरा करना) अनुतिष्ठति; उत्—(उठना) उत्तिष्ठति; प्र—(प्रस्थान करना) प्रतिष्ठते।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

खरीदना	—	९ क्री, क्रीणाति; वि— (बेचना) विक्रीणाति।
खाना	—	७ भुज, भुनक्ति-भुङ्क्ते १० भक्ष, भक्षयति - ते।
खिलना	—	६ स्फुट, स्फुटति।
खींचना	—	१ कृष्, कर्षति।
खेलना	—	१ क्रीड्, क्रीडति; १ रम, रमते।
खोजना	—	१० मृग्, मृगयति-ते।
खोदना	—	१ खन्, खनति-ते।
खोलना	—	५ अपा. वि. वृ, वृणोति—वृणुते।

ग

गाना	—	६ गै, गायति।
गिनना	—	१० गण्, गणयति-ते
गिरना	—	१ पत्, पतति; ४ भ्रंश् भ्रश्यति।
गूंथना	—	९ ग्रन्थ, ग्रथ्नाति।

घ

घबराना	—	३ भी, बिभेति।
घूमना	—	१ अट, अटति।
घोषणा करना	—	१० घुष घोषयति-ते।

च

चमकना	—	१ द्युत, द्योतते; प्र कास, प्रकाशते।
चलना	—	१ चल, चलति।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

चाहना	—	६ इष (इच्छ), इच्छति।
चुनना	—	५ चि, चिनोति, चिनुते।
चुराना	—	१ हृ, हरति—हरते आ—(लेना) आहरति-ते; परि—(उठना, निकालना) उद्धरति; (बचना) परिहरति-ते। प्र—(मारना) प्रहरति-ते; वि—(घूमना, आनन्द करना) विहरति-ते; सम्—(नष्ट करना) संहरते। ६ (मुष्) मुष्णाति। १० चुर, चोरयति-ते

छ

छलना	—	१० वञ्च, वञ्चयति-ते।
छूना	—	६ स्पृश, स्पृशति।
छोड़ना	—	१ त्यज्, सृज, त्यजति, सृजति, ४ हा, जहाति; ६ मुच, मुञ्चति-ते।

ज

जलाना	—	१ दह, दहति, ७ इन्ध्, इन्धे।
जानना	—	६ ज्ञा, जानाति।
जाना	—	१ गम गच्छति; अधि—(प्राप्त करना) अधिगच्छति, अनु—(पीछे चलना), अव—(समझना), निर—(निकलना)

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

जीना	—	१	जीव, जीवति।
जीतना	—	१	जि, जयतिः
			वि—विजयते।

झ

झुकना	—	१	नम्, नमति।

ट

टहलना	—	४	भ्रम् (भ्राम), भ्राम्यति।

ठ

ठहरना	—	१	स्था, तिष्ठति।
		४	वि श्रम (श्राम) विश्राम्यति।

ड

डगमगाना	—	१	स्खल्, स्खलति।
डरना	—	३	भी, बिभेति।
डूबना	—	६	मज्ज्, मज्जति, नि—निमज्जयि।

ढ

ढकना	—	५	वृञ्, वृणोति—
			वृणुते; वि—(स्पष्ट करना, कहना)
			सम-(बन्द करना) अप-(खोलना)।
ढाढ़स देना	—	१०	सान्त्व्, सान्त्वययिते।
ढूंढना	—	४	अनु इष्, अन्विष्यति;
		५	वि चि, विचिनोति-विचिनुते।
		१०	मृग, मृगयति-ते।

अंकों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

त

तैरना	—	१	तॄ. तरति, अव— (उतरना) अवतरति; निस्—(पार करना) निस्तरति।
			आ—(आना) : प्रति— (लौटना), सम्-(मिलना) सङ्गच्छते
तोड़ना	—	८	भञ्ज्, भनक्ति।
तोलना	—	१०	तुल्, तोलयति-ते।

थ

थकना	—	४	श्रम्, क्लम्, श्राम्यति, क्लाम्यति

द

दण्ड देना	—	१०	दण्ड्, दण्डयति-ते।
दुःख देना	—	६	तुद्, तुदति-ते;
		१०	पीड, पीडयति-ते।
दुःखी होना	—	६	सद् सीद् सीदति, वि, विषीदति; खिद्, खिद्यति।
दूर करना	—	१	अप हृ, नी, अपहरति, अपनयति।
देखना	—	१	ईक्ष, ईक्षते; दृश्, पश्यति। अप—(परवाह करना)। अपेक्षते; उप-(परवाह न करना) उपेक्षते; परि-(परीक्षा करना) परीक्षते।

अंकों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

देना	—	१	दा (यच्छ) यच्छति;
		३	दा ददाति, दत्ते, आ—(लेना, स्वीकार करना) आदत्ते ।
दौड़ना	—	१	धाव, धावति-ते, परा—
		१	अय, (पला + अय्) पलायते ।

ध

धमकाना	—	१	तर्ज्, तर्जति, १० तर्जयते,
		१०	भर्त्स, भर्त्सयते ।
धारण करना	—	३	धा, दधाति—धत्ते;
		१०	धृ, (धार) धारयति-ते ।
धोना	—	१०	क्षल् (क्षाल्) क्षालयति ते ।

न

नमस्कार करना	—	१	वन्द् वन्दते नम, नमति ।
नष्ट होना	—	१	क्षि, क्षयति;
		४	नश , नश्यति ।
नहाना	—	२	स्ना, स्नाति;
		१	अव गाह, अवगाहते ।
नाचना	—	४	नृत, नृत्यति ।
नाराज होना	—	४	कुप् , कुप्यति, क्रुध् , क्रुध्यति

प

पकड़ना	—	१	धृ, धरति-ते
पकाना	—	१	पच, पचति-ते ।

अंकों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

पढ़ना	—	१	पठ्, पठति; २ अधि इ अध्येति।
पढ़ाना	—		(प्रेर०) अध्यापयति,
		१	शिक्ष्, शिक्षते।
पसन्द होना	—	१	रुच, रोचते।
पहिनना	—	३	परि धा, परिदधाति।
पाना	—	६	विद्, विन्दति।
पालन करना	—	१०	पाल, पालयति-ते।
पिघलना	—	१	द्रु, द्रवति।
पीछे चलना	—	१	अनु० सृ, गम्, अनुसरति, अनुगच्छति।
पीटना	—	१०	तड़ (ताड़्) ताड़यति-ते।
पीना	—	१	पा (पिब्) पिबति।
पीसना	—	७	पिष्, पिनष्टि।
पुचकारना	—	४	श्लिष्, श्लिष्यति।
पुष्ट करना	—	४	पुष्, पुष्यति।
		९	पुष्, पुष्णाति।
पूछना	—	६	प्रच्छ् (पृच्छ) पृच्छति।
पूजना	—	१०	पूज् पूजयति-ते;
		१	अर्च, अर्चति।
पूरा करना	—	३९	पृ, पिपर्ति, प्रणाति;
		१०	पूर, पूरयति-ते।
पैदा होना	—	४	जन् (जा) जायते।
प्रगट करना	—	५	वि वृ, विवृणोति।
प्रयत्न करना	—	१	चेष्ट्, यत, चेष्टते, यतते

अंकों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

प्रशंसा करना	—	१	प्र शंस, प्रशंसति, श्लाघ्, श्लाघते।
प्रसन्न होना	—	१	मुद् (मोद्) मोदते;
		४	हृष्, हृष्यति।
प्राप्त करना	—	१	लभ्, लभते।
प्रारम्भ करना	—	१	आ रभ्, आरभते, प्र—प्रारभते।
प्रार्थना करना	—	१०	प्र— अर्थ्, प्रार्थयते।
प्रेरणा करना	—	६	नुद्, नुदति।

फ

फड़कना	—	१	स्पन्द्, स्पन्दते; ६ स्फुर, स्फुरति।
फाड़ना	—	६	दृ, दृणाति, १० दृ (दार); दारयति-ते।
फेंकना	—	४	अस्, अस्यति; ६ क्षिप् क्षिपति-ते।
फोड़ना	—	७	भिद्, भिनत्ति-भिन्ते।

ब

बखेरना	—	६	कॄ, किरति।
बचाना	—	१	त्रै, त्रायते।
बढ़ जाना	—	२	अति, शी, अतिशेते।
बढ़ना	—	१	वृध्, एध्, वर्धते, एधते।
बनाना	—	१०	रच्, रचयति-ते।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

बहना	—	१	प्र-- वह, प्रवहति-ते।
		२	वा (हवा का बहना)
			प्रवति—प्रवाति।
बांधना	—	६	बन्ध्, बध्नाति।
बुलाना	—	१	ह्वे, आ,-ह्वयति-ते।
बेहोश होना	—	४	मुह, मुह्यति।
बोलना	—	१	वद् भाष्, वदति,
			भाषते।

भ

भजन करना	—	१	भज्, भजति।
भरना	—	१०	पूर्, पूरयति-ते।
भूलना	—	१	वि—स्मृ, विस्मरति।
भेजना	—	४	प्र— इष्, प्रेष्यति,
			वि सृज्, विसृजति।
भोगना	—	७	भुज्, भुनक्ति—भुङ्क्ते

म

मथना	—	६	मन्थ्, मथ्नाति।
मरना	—	१	मृ (म्रिय्) म्रियते।
माँगना	—	१	याच्, याचति-ते।
मापना	—	३	मा, मिमीते।
माफ करना	—	५	क्षम् (क्षाम्) क्षाम्यति;
		४	मृष्, मृष्यति-ते
मारना	—	२	हन्, हन्ति।
		७	हिंस्, हिनस्ति।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

मिलना	—	६	मिल्, मिलति।

य

यज्ञ करना	—	१	यज् यजति-ते।
यत्न करना	—	१	यत्, चेष्ट्। यतते, चेष्टते।
याद करना	—	३	स्मृ, स्मरति।
योग्य होना	—	१	अर्ह्, अर्हति।

र

रखना	—	३	नि धा, निदधाति।
रक्षा करना	—	१	पा, पातिः १ रक्ष्, रक्षति।
रस निकालना	—	५	सु, सुनोति, सुनुते।
रहना	—	१	वस्, वसति।
राज्य करना	—	१	शास्, शास्ति।
रोकना	—	७	रुध्, रुणद्धि; ९ स्तम्भ, स्तभ्नाति।

ल

लगाना	—	७	नि युज्, नियुङ्क्ते।
लज्जा करना	—	३	ह्री, जिह्रेति, जिह्रोते,
		६	लज्ज्, लज्जते।
लड़ना	—	४	युध्, युध्यति।
ललचाना	—	४	गृध्, गृध्यति।
लांघना	—	१	लङ्घ्, लङ्घते।
लाना	—	१	आः नी, आनयति-ते।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

लिखना	—	६	लिख्, लिखति।
लेना	—	६	ग्रह, गृह्णाति।
ले जाना	—	१	नी, नयति, ते; अप-(दूर करना); आ-(लाना) परि-(विवाह करना); परिणयति-ते।
लोभ करना	—	४	लुभ्, लुभ्यति।

व

वर्णन करना	—	१०	वर्ण, वर्णयति-ते।
विश्वास करना	—	२	वि-श्वस्, विश्वसिति।

श

शरमाना	—	६	लज्ज्, लज्जते।
शान्त होना	—	४	शम्, (शाम) शाम्यति।
शाप देना	—	१	शप्, शपते।
शोभित होना	—	१	शुभ्, शोभते।

स

सजाना	—	१०	भूष्, भूषयति-ते;
		१०	मण्ड्, मण्डयति-ते।
सताना	—	१०	सम् पीड्, संपीडयति।
सन्तुष्ट होना	—	४	तुष्, तुष्यति।
सन्देह करना	—	१	शङ्क्, शङ्कते।
समझना	—	१	बुध्, बोधति-ते; अव-गम्, अवगच्छति।

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।

समर्थ होना	—	५	शक्, शक्नोति !
समीप आना	—	२	उप- इ-उपैति;
समीप जाना	—	१	उप- गम्, उपगच्छति ।
सरकना	—	१	सृ, सरति ।
सहना	—	१	सह्, सहते;
	—	६	मृष्, मृषति ।
सीखना	—	१	शिक्ष्, शिक्षते ।
सींचना	—	६	सिञ्च्, सिञ्चति-ते
सुनना	—	५	श्रु (शृ) शृणोति-
सुनाना	—		(प्रेर०) (श्राव्) श्रावयति ।
सूखना	—	४	शुष्, शुष्यति
सेवा करना	—	१	सेव, सेवते ।
सोचना	—	१०	चिन्त्, चिन्तयति-ते ।
स्तुति करना	—	२	स्तु, स्तौति-स्तुते ।
		२	ईड्, ईट्टे ।
स्नान करना	—	२	स्ना, स्नाति;
		१	अव गाह, अवगाहते ।
स्वीकार करना	—	३	आ दा, आददाति-आदत्ते, अङ्गी कृ, अङ्गीकरोति, स्वी कृ, स्वीकरोति ।

ह

हंसना	—	१	हस्, हसति ।
हराना	—		परा जि, पराजयते ।
हुक्म करना	—		आ दिश्, आदिशति

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है ।

होना — १ भू, भवति;
२ अस्, अस्ति;
१ वृत् ; वर्तते; नि-(लौटना);
परा-(मुड़ना);
प्र-(काम में लगना ।)

—★—

Bhavan's Sri Sankaracharya Sanskrit Bharatiya Vidya ★ Bharatiya Vidya
738

अङ्कों से अभिप्राय गणों की संख्या से है।